हिमाचल प्रदेश विधान सभा

विधान सभा की बैठक बुधवार, दिनांक 10 अगस्त, 2022 को माननीय अध्यक्ष, श्री विपिन सिंह परमार की अध्यक्षता में कौंसिल चैम्बर, शिमला-171004 में 11.00 बजे पूर्वाह्न आरम्भ हुई।

शोकोद्गार

10.08.2022/1100/SS-AG/1

अध्यक्ष : मानसून सत्र में भाग लेने के लिए मैं इस माननीय सदन के समस्त सदस्यों का अभिनन्दन करता हूं और आभार प्रकट करता हूं। विशेष तौर पर माननीय सदन के नेता श्री जय राम ठाकुर जी, विपक्ष के नेता श्री मुकेश अग्निहोत्री जी, संसदीय कार्य मंत्री श्री सुरेश भारद्वाज जी, उपाध्यक्ष डॉ0 हंस राज जी, मुख्य सचेतक श्री विक्रम सिंह जरयाल जी, उप मुख्य सचेतक श्रीमती कमलेश कुमारी जी, सी0पी0आई0(एम) के नेता श्री राकेश सिंघा जी, सभी आदरणीय मंत्रिगण और विधायकगण वर्षाकालीन सत्र में भाग लेने के लिए पहुंचे हैं। यहां पर मैं आप सभी का कोटिशः अभिनन्दन व स्वागत करता हूं। यह सत्र 13वीं विधान सभा का 15वां सत्र है तथा वर्तमान सरकार का आखिरी सत्र है। मैं इस अवसर पर अपना-अपना कार्यकाल पूरा करने तथा आखिरी सत्र में भाग लेने के लिए सभी को बधाई व अनंत शुभ-कामनाएं देना चाहता हूं। अभी भी पूरा विश्व, भारत तथा प्रदेश कोविड-19 के संक्रमण से उभरा नहीं है लेकिन सरकार द्वारा समय-समय पर समुचित कदम उठाए जा रहे हैं ताकि इस बीमारी को घातक होने से रोका जा सके। ऐसी भयावह स्थिति में सत्र का आयोजन करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। फिर भी संवैधानिक जिम्मेवारियों को निभाना परमावश्यक है। विषम परिस्थितियों के बावजूद विधान सभा सचिवालय अपनी जिम्मेवारियां निभाने में सजग तथा कृतसंकल्प है। कोरोना महामारी से सभी को सुरक्षित रखने के लिए जहां विधान सभा परिसर, भवन तथा सदन को हर दिन सदन की समाप्ति के बाद सैनिटाइज करने की व्यवस्था की गई है वहीं परिसर में प्रवेश से पूर्व भी आगंतुकों की स्वास्थ्य विभाग के कर्मचारियों द्वारा स्क्रीनिंग की जा रही है ताकि कोई संक्रमित व्यक्ति परिसर में प्रवेश न पा सके। सत्र को देखने के लिए दर्शक दीर्घा में बैठने हेतु 50 प्रतिशत क्षमता के हिसाब से पास जारी किए जा रहे हैं

जारी श्रीमती के0एस0

10.08.2022/1105/केएस/एजी/1

अध्यक्ष जारी---

दर्शक दीर्घा में बैठने हेतु 50 प्रतिशत क्षमता के हिसाब से पास जारी किए जा रहे हैं ताकि उचित दूरी अपनाई जा सके लेकिन मास्क पहनना अनिवार्य किया गया है। सभी माननीय सदस्यों, मिडिया के साथियों तथा सदन के संचालन से जुड़े सभी अधिकारियों व कर्मचारियों को सर्जिकल फेस मास्क तथा सैनेटाइज़र वितरित किए गए हैं। सत्र के दौरान किसी को भी कोरोना के लक्षण पाए जाने पर जहां आइसोलेशन रूम की व्यवस्था की गई है वहीं एक टैस्टिंग वैन तथा एम्बुलेंस भी तैनात रहेगी। कोविड-19 के दृष्टिगत मैं समस्त माननीय सदस्यों से अनुरोध करना चाहूंगा कि लॉबियों, डाइनिंग हॉल तथा विधान सभा परिसर के बाहर भी सामाजिक दूरी के नियमों की पालना करें। विधान सभा परिसर को भी कृत्रिम रोशनी से सुसज्जित किया गया है। मैं आशा करता हूं कि चार दिन चलने वाला यह वर्षाकालीन सत्र जिसमें चार कार्यदिवस होंगे, प्रदेश हित में उनका अधिक से अधिक उपयोग करके माननीय सदस्य इसका लाभ उठाएंगे और अपनी बात को नियमों की परिधि में रखकर चर्चाओं को सार्थक बनाने में हमारा सहयोग करेंगे। मुझे सदन में पहले भी पक्ष तथा प्रतिपक्ष दोनों का सहयोग मिलता आया है और मैं आशा करता हूं कि यह पुनः इस सदन और इस सत्र में भी प्राप्त होगा। इससे पूर्व कि आज की कार्यवाही आरम्भ करें, मेरा सभा मण्डप में उपस्थित सभी से निवेदन है कि वे राष्ट्रगान के लिए अपने-अपने स्थान पर खड़े हो जाएं।

(सभा में उपस्थित सभी राष्ट्रगान के लिए अपने-अपने स्थान पर खड़े हुए।)

10.08.2022/1105/केएस/एजी/2

शोकोद्गार

अध्यक्षः अब माननीय मुख्य मंत्री स्वर्गीय श्री सुख राम, पूर्व सांसद एवं सदस्य, श्री रूप सिंह चौहान, श्री मस्त राम व श्री प्रवीण शर्मा, पूर्व सदस्य, हिमाचल प्रदेश विधान सभा के निधन पर शोकोद्गार प्रस्तुत करेंगे।

मुख्य मंत्रीः अध्यक्ष महोदय, पिछले सत्र और इस सत्र के बीच में यानि बजट सत्र के पश्चात इस मॉनसून सत्र की शुरूआत होने से पहले चार माननीय सदस्य जो इस सदन में वर्षों तक अपनी आवाज बुलंद करते रहे, प्रदेश के विकास में योगदान देते रहे, हमारे बीच नहीं रहे। इनमें पं0 सुखराम जी, श्री रूप सिंह चौहान जी, श्री मस्त राम जी और श्री प्रवीण शर्मा जी हैं जिनका अभी आपने भी ज़िक्र किया। इस बात के लिए जहां माननीय सदन गहरा शोक प्रकट करता है,

श्रीमती अ0व0 द्वारा जारी

10-08-2022/1110/av/as/1

शोकोद्गार क्रमागत ---------

मुख्य मंत्री जारी -----

वहां हमें यह भी सोचना चाहिए कि कोई भी व्यक्ति इस दुनिया में स्थाई रूप से नहीं आया है। प्रत्येक व्यक्ति इस दुनिया में जन्म लेता है और अपने कर्म करके चला जाता है। आदमी चाहे छोटा-बड़ा या अमीर-गरीब; जो भी हो एक दिन सबको इस दुनिया को छोड़कर जाना पड़ता है। इस माननीय सदन को मुझे यह सूचित करते हुए अत्यंत दुःख हो रहा है कि पूर्व केंद्रीय मंत्री पं0सुख राम जी का दिनांक 11 मई, 2022 को 94 वर्ष की आयु में निधन हो गया। यह माननीय सदन उनके निधन पर गहरा शोक प्रकट करता है। स्वर्गीय पं0 सुख राम जी का जन्म 27 जुलाई, 1927 को जिला मण्डी के गांव आरुयाना में हुआ था। उन्होंने

बी0ए0, एल0एल0बी0 की शिक्षा प्राप्त की थी। पं0 सुख राम जी वर्ष 1964 में पहली बार हिमाचल प्रदेश विधान सभा के लिए निर्वाचित हुए थे। वे वर्ष 1967, 1972, 1974, 1977, 1982, 1998 व 2003 में पुनः विधायक चुने गए। वे राज्य सरकार में विभिन्न विभागों में मंत्री भी रहे। वे वर्ष 1985, 1991 व 1996 में लोक सभा के लिए निर्वाचित हुए तथा उन्होंने केंद्र सरकार के विभिन्न मंत्रालयों में राज्य मंत्री के रूप में काम किया। संचार क्रांति के नाते पं0 सुख राम जी की पूरे देश में एक अलग पहचान है। उनकी समाज सेवा में बहुत निष्ठा थी और मैंने उनको व्यक्तिगत रूप से वर्षों तक लोगों के बीच में काम करते हुए देखा है। अध्यक्ष महोदय, राजनीति में सारी चीजें चलती रहती हैं। राजनीति में सभी लोग अपने-अपने तरीके से आगे बढ़ने का प्रयत्न करते हैं और स्वाभाविक रूप से मनुष्य को अपने प्रयत्न करने भी चाहिए। व्यक्ति कई बार अपने निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त कर पाता है और कई बार वह लक्ष्य के करीब पहुंचने के बावजूद भी उसको हासिल नहीं कर पाता। पं0 सुख राम जी ने प्रदेश और केंद्र की राजनीति में काफी लंबे समय तक अपनी सेवाएं दी हैं। उनका भी जीवन में एक लक्ष्य था और वे चाहते थे कि मैं हिमाचल प्रदेश में बतौर मुख्य मंत्री नेतृत्व करूं और इस भाव को लेकर

10-08-2022/1110/av/as/2

उन्होंने अपनी बात कई बार सार्वजनिक रूप से कही भी थी। मुझे याद है जब वर्ष 1993 में विधान सभा का चुनाव हो रहा था तो हालांकि वे उस समय केंद्र में मंत्री थे। मगर उस समय पं0 सुख राम जी को प्रदेश का मुख्य मंत्री बनाने की बात चली तो मण्डी से 10 सीटों में से 9 सीटें कांग्रेस पार्टी ने जीती थी और एक सीट पर नाचन विधान सभा क्षेत्र से श्री टेक चंद डोगरा जी निर्दलीय उम्मीदवार जीतकर आए थे परंतु वास्तव में वह भी कांग्रेस पार्टी से ही संबंद्ध रखते थे। मैं यहां इन बातों का जिक्र इसलिए कर रहा हूं क्योंकि मेरे जीवन का वह पहला चुनाव था। वह चुनाव मैंने भी लड़ा था। हालांकि मेरा विधान सभा क्षेत्र उस समय बहुत ही पिछड़ा क्षेत्र में आता था तो उस दृष्टि से वहां भारतीय जनता पार्टी का कोई बड़ा आधार नहीं था।

टी सी द्वारा जारी

10.08.2022/1115/TCV/AS/1
शोकोद्गार ..... जारी
माननीय मुख्य मंत्री ..... जारी

उन्होंने इस दिशा में एक प्रयास किया। जिस विधान सभा क्षेत्र से मैं चुनाव लड़ता हूं उसी चुनाव क्षेत्र से श्री कर्म सिंह जी भी चुनाव लड़ते थे और वे राजनीति में बहुत लम्बे समय तक रहे।वे एक ऐसे व्यक्ति थे जो डॉ0 वाई0एस0 परमार के साथ 4 बार वित्त मंत्री रहे। मैं यह इसलिए कह रहा हूं कि ये दो लोग मण्डी जिला से थे और दोनों ऐसे व्यक्ति थे जो मुख्य मंत्री की कुर्सी के बहुत नजदीक पहुंच गये थे लेकिन जो भाग्य में नहीं होता वह नहीं मिल पाता है और हमें उसे स्वीकार करना चाहिए। इस बात को लेकर इन दोनों नेताओं के मन में मलाल भी रहा है। उन्होंने पूरे देशभर में संचार क्रांति लाने के लिए सराहनीय प्रयास किए। उस जमाने में हिमाचल प्रदेश के दूरदराज के इलाके में टेलीफोन लगना एक बहुत बड़ी बात थी लेकिन दूरदराज के इलाकों में टेलीफोन लगे। उस व़क्त गांवों में टेलीफोन लगना प्रतिष्ठा के साथ-साथ सुविधा का विषय भी होता था। वे लम्बे समय तक कांग्रेस पार्टी में रहे लेकिन उसके बाद बीच में एक दौर ऐसा आया जब उनको लगा कि हटकर कुछ अलग करते हैं तथा उन्होंने हिमाचल प्रदेश में "हिमाचल विकास कांग्रेस" के नाम से अलग दल का गठन किया। उनमें से यहां माननीय सदन में भी हमारे तीन साथी बैठे हैं। हिमाचल प्रदेश की राजनीति में तीसरे दल की महत्वपूर्ण भूमिका नहीं रही है। सिर्फ वर्ष 1990 में प्री-पोल एलाइंस हुआ था और हमने 17 सीटें छोड़ी थीं। हिमाचल प्रदेश में विकास कांग्रेस ने काफी वोट लिए और इनके कुल 5 सदस्य जीत करके आए थे। कर्नल धनी राम शांडिल जी हिमाचल विकास कांग्रेस के टिकट पर पहली बार सांसद बने थे। मैं यह बात इसलिए कह रहा हूं क्योंकि उस चुनाव के दौरान एक बहुत बड़ा परिदृश्य हुआ था और हिमाचल प्रदेश में कुछ दिनों के लिए कांग्रेस पार्टी की सरकार बनी थी। उसमें श्री रमेश

ध्वाला जी की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका रही। लेकिन कुछ दिनों के बाद पूर्ण बहुमत न होने के कारण भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनी और वह सरकार चली। इस तरह

10.08.2022/1115/TCV/AS/2

से उन दिनों राजनीति में जो घटनाक्रम घटित हुआ उसमें पंडित सुखराम जी की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका रही। जब वे सक्रिय राजनीति में नहीं थे, उसके बावजूद भी वे मण्डी शहर व पड्डल मैदान में लोगों से मिलने के लिए नियमिति रूप से निकलते थे। उन्होंने अपना जीवन बेहतर ढंग से जीया है इसमें कोई दो राय नहीं है।

एन.एस. द्वारा जारी

10-08-2022/1120/NS/DC/1

शोकोद्गार ..... जारी

मुख्य मंत्री ..... जारी

अध्यक्ष महोदय, पंडित सुख राम जी का हिमाचल प्रदेश के विकास में बहुत बड़ा योगदान रहा है। वे अलग-अलग समय में चाहे केंद्र सरकार या प्रदेश सरकार में मंत्री रहे और हिमाचल प्रदेश में उनका योगदान रहा है। मैं उनके उस योगदान को स्मरण करता हूं और प्रशंसा करता हूं तथा हिमाचल प्रदेश के राजनीति में उनका जिक्र सदैव होता रहेगा। वे आज हमारे बीच में नहीं हैं। जब वे अचानक अस्वस्थ हुए और मुझे इसकी सूचना मिली तथा मेरी श्री अनिल शर्मा जी व उनके बेटे से बात हुई। इनका मन था कि हम इनको बेहतर स्वास्थ्य की सुविधा के लिए दिल्ली ले जाना चाह रहे हैं। उस समय शाम हो चुकी थी और शाम को चौपर में जाना संभव नहीं था तथा वे सुबह दिल्ली के लिए रवाना हुए। मुझे कुल्लू जाना था तो मैंने इनसे कहा कि चौपर की सुविधा यहां उपलब्ध है और आप इनको लेकर जाइए। इनका स्वस्थ होना हम सबके लिए महत्वपूर्ण है। उसके पश्चात दिल्ली में उनका ट्रीटमैंट चलता रहा लेकिन आखिरकार होनी को जो मंजूर हो वही होता है। वे हमारे बीच में नहीं रहे और हमें इस बात का दुःख है। मैं उनको श्रद्धांजलि देता हूं और ईश्वर परिवार को इस दुःख को सहन करने के लिए ताकत दे। मैं ऐसी प्रार्थना करता हूं और उनके योगदान को हिमाचल प्रदेश सदैव स्मरण करता रहेगा, ऐसी मेरी कामना है।

10-08-2022/1120/NS/DC/2

अध्यक्ष महोदय, इसी प्रकार से श्री रूप सिंह चौहान जी का दुःखद निधन 29 मई, 2022 को 95 वर्ष की आयु में हुआ है। यह माननीय सदन उनके निधन पर गहरा शोक प्रकट करता है। श्री रूप सिंह चौहान जी का जन्म 13 जनवरी, 1927 को जिला सिरमौर के गांव व तहसील नौहराधार में हुआ था। उन्होंने प्राज्ञ (संस्कृत) और जे0बी0टी0 की शिक्षा प्राप्त की थी। स्वर्गीय श्री रूप सिंह चौहान जी वर्ष 1977 में श्री रेणुकाजी विधान सभा क्षेत्र से विधायक रहे तथा सूचना एव जनसम्पर्क विभाग के राज्य मंत्री भी रहे। उनकी सामाजिक कार्य में रुचि थी और इस रुचि के साथ उन्होंने लोगों की सेवा की तथा अपने क्षेत्र के विकास को आगे बढ़ाने के लिए प्रयत्न किया। यह माननीय सदन श्री रूप सिंह चौहान जी के प्रदेश तथा समाज के लिए किए गए कार्य के लिए प्रशंसा करता है। उनके निधन पर हार्दिक संवेदना प्रकट करते यह माननीय सदन ईश्वर से दिवंगत आत्मा की शांति तथा परिजनों को इस असहनीय दुःख को सहन करने की शक्ति दे, ऐसी प्रार्थना करता है।

10-08-2022/1120/NS/DC/3

अध्यक्ष महोदय, मुझे अत्यंत दुःख है कि पूर्व विधायक स्वर्गीय श्री मस्त राम जी का दिनांक 11 जुलाई, 2022 को 75 वर्ष की आयु में निधन हुआ। यह माननीय सदन उनके निधन पर गहरा दुःख प्रकट करता है। उनका जन्म 16 सितम्बर, 1946 को जिला मण्डी के डाकघर व तहसील निहरी के गांव दुगला में हुआ था। उन्होंने बी0एस0सी0 बी0एड0 तक की शिक्षा ग्रहण की थी।

स्वर्गीय श्री मस्त राम जी वर्ष 1993 में पहली बार हिमाचल प्रदेश विधान सभा के लिए विधायक चुने गए थे। वे वर्ष 2003 में पुनः विधायक निर्वाचित हुए। उनकी सामाजिक कार्य व श्रमिक वर्ग के उत्थान में विशेष रुचि थी। यह माननीय सदन स्वर्गीय श्री मस्त राम जी के प्रदेश तथा समाज के लिए की गई सेवाओं की भूरि-भूरि प्रशंसा करता है। उनके निधन पर हार्दिक संवेदना प्रकट करते हुए माननीय सदन ईश्वर से दिवंगत आत्मा की शांति तथा परिजनों को इस असहनीय दुःख को सहन करने की प्रार्थना करता है।

श्री आर0 के0 एस0 द्वारा..... जारी।

शोकोद्गार... जारी

मुख्य मंत्री... जारी

अध्यक्ष महोदय, स्वर्गीय श्री मस्त राम जी मेरी पड़ोस की विधान सभा क्षेत्र, करसोग से संबंध रखते थे। हम लोगों ने इस सदन में एक साथ मिलकर काम किया है। वे बहुत मिलनसार व्यक्ति थे। सरलता और सहजता उनके जीवन का हिस्सा रहे लेकिन जिस प्रकार से उनकी मृत्यु हुई उसकी कल्पना करना हमारे लिए दूभर है। उनका समाज के लिए बहुत योगदान रहा। जब भी मैं विधान सभा क्षेत्र, करसोग में आता-जाता था तो वे कहीं-न-कहीं मुझसे मिलने आते थे। जब मैं अपने विजिट के दौरान विश्राम गृह, करसोग में ठहरता था तो वे मुझसे मिलने जरूर आते थे। चाहे वे उस समय वहां के विधायक थे या नहीं परंतु वे मुझसे मिलने जरूर आते थे। जब मैं विश्राम गृह, चिंधी या किसी अन्य विश्राम गृह में ठहरता था तो वे मुझसे जरूर मिलते थे। वे लंबे समय से कांग्रेस पार्टी के सदस्य थे और उन्होंने अपनी मेहनत से काफी प्रतिष्ठा कमाई जिसके फलस्वरूप वे करसोग, विधान सभा निर्वाचन क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करने में सफल रहे। जब मुझे अचानक उनके मृत्यु की खबर मिली तो सचमुच में ही मुझे बहुत सदमा लगा। मेरी ईश्वर से प्रार्थना है कि ईश्वर उनके परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति दे।

मुझे इस सदन को सूचित करते हुए यह भी दुःख हो रहा है कि हमारे पूर्व मंत्री, स्वर्गीय श्री प्रवीण शर्मा जी का 4 अगस्त, 2022 को 64 वर्ष की आयु में निधन हो गया। यह माननीय सदन उनके निधन पर गहरा शोक प्रकट करता है। उनका जन्म 20 दिसम्बर, 1957 को धर्मशाला के जिला कांगड़ा में हुआ था। उन्होंने वाणिज्य स्नातक तक की शिक्षा प्राप्त की थी। वर्ष 1998 में वे हिमाचल प्रदेश विधान सभा के लिए निर्वाचित हुए। वे युवा सेवाएं एवं खेल विभाग के राज्य मंत्री थे। वर्तमान में वे हिमुडा के उपाध्यक्ष थे। स्वर्गीय श्री प्रवीण शर्मा की एक अलग पहचान थी। उनका पहनावा और काम करने का तरीका अलग था। उनके

लाल व गोरे चेहरे पर सफेद मूछ बहुत खुबसूरत लगती थी। अपनी मूछों के कारण वे शर्मा नहीं लगते थे। पहली नज़र में वे कोई तगड़े राजपूत लगते थे। शर्मा होते हुए भी उनके काम

10.08.2022/1125/RKS/DC-2

करने का तौर-तरीका राजपूतों से भी कई गुना ऊपर था। जिस काम को वे करना चाहते थे उसे वे अवश्य पूरा करते थे। उनकी अलग विशेषता थी। वे दबंग छवी के व्यक्ति थे। वे वर्षों से संगठन में काम करते आ रहे थे और हमने भी उनसे काफी कुछ सीखा। बतौर मंत्री वे सबको अपने साथ लेकर चलते थे। तात्कालीन सरकार में वे बहुत पावरफुल मिनिस्टर थे। जब किसी का कोई काम रूकता था तो उस काम को स्वर्गीय श्री प्रवीण शर्मा जी करवाने में माहिर थे। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि जटिल काम करवाने में उनकी महारथ थी। जब वे लंबा सफर करते थे तो अपने ड्राइवर को पीछे वाली गाड़ी में बिठा देते थे और फिर स्वयं गाड़ी ड्राइव करते थे। लेकिन जिस रफ्तार से वे गाड़ी चलाते थे उस हिसाब से उनके साथ बैठने में हिम्मत होनी चाहिए थी। लेकिन उनका गाड़ी पर पूरा कंट्रोल था जोकि काबिले तारीफ है। मैंने कई बार उनके साथ गाड़ी में सफर किया है। मुझे उनके जीवन की बहुत सारी घटनाएं याद हैं। जब वे मंत्री थे तब भी वे इस विधान सभा परिसर में विधायकों के लिए स्थापित सैट में रहा करते थे।

श्री बी.एस. द्वारा जारी

10.08.2022/1130/बी.एस./एच0के0/-1

मुख्य मंत्री जारी...

जब वे होस्टल में रहा करते थे तो उन्होंने एक अच्छी परंपरा आरंभ की थी कि काम तो जिंदगी में कभी खत्म नहीं होंगे लेकिन उसके बावजूद हम सब लोगों को मिलते रहना चाहिए। जब कभी भी उन्हें अपने घर में भोजन करवाना होता था तो वे चार-पांच माननीय सदस्यों को सादर आमंत्रित करते थे और वे कभी लंच पर तो कभी डीनर पर बुला लिया करते थे। यानी की सब को साथ ले करके चलने का जो उनका प्रयास होता था वह गजब

का था। हम आज देखते हैं कि आज वे सभी चीजें कम हो रही हैं। सभी आदमी अपने एकांत में रहना पसंद करते हैं लेकिन उनको बहुत सारे लोगों के साथ रहना अच्छा लगता था। यदि वे एक सप्ताह तक शिमला रुकते थे तो दो या तीन बार इस तरह के आयोजन उनके घर पर हुआ करते थे। उनके पास आने वाले भी विशेष लोग हुआ करते थे और वे देर शाम तक बैठ करके अनेक विषयों पर भी चर्चा किया करते थे। यह उनकी बहुत बड़ी विशेषता हुआ करती थी। उनके काम करने का तरीका भी उसी तरह का था। वे हमेशा इस बात को स्पष्ट किया करते थे और कहा करते थे कि जो मेरा काम करने का तरीका है यह नहीं बदल सकता। वे कहते थे कि मैं जीत करके आऊं, इस बात को मैं ज्यादा नहीं सोचता हूं। मैं जीत का प्रयत्न करता रहूंगा परंतु मेरा तरीका नहीं बदलेग और उन्होंने अंत तक वह बदला भी नहीं। उनका अंत तक काम करने और बात करने का वही तरीका रहा। वे हमेश बहुत सारी चीजों को ले करके जानकारी रखते थे। वे आज हमरे बीच नहीं रहे हैं। पिछले कुछ अर्से से वे अस्वस्थ चल रहे थे और उनको शुगर की बीमारी बहुत समय पहले से थी। उसके बावजूद वे नियमित रूप से अपना जीवन जिया करते थे। खाने में बहुत ज्यादा परहेज करना उनका स्वभाव नहीं था। वे दवाई का इस्तेमाल किया करते थे परंतु मीठा खा लिया करते थे। बीमारी के कारण वे अस्पताल में भर्ती भी रहे और उसके बाद अभी जो घटना घटित हुई कि रात को वे दूध पी करके सोये थे और सुबह जब देखा तो प्रवीण शर्मा जी नहीं थे और वे इस दुनिया से जा चुके थे। जब यह सूचना मिली तो बहुत दुःख हुआ। हमने बहुत समय तक उनके साथ कार्य किया है और बहुत सारी चीजें हमने उनसे सीखी हैं। संगठन में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। वे पार्टी के महासचिव और उपाध्यक्ष के पद पर वर्षों तक रहे हैं। अध्यक्ष महोदय मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि उनके परिवार

10.08.2022/1130/बी.एस./एच0के0/-2

को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे। इस अवसर पर यह भी स्मरण करता हूं कि उन्होंने हिमाचल प्रदेश की राजनीति में जो योगदान दिया है उसे हिमाचल सदैव याद रखेगा। व्यक्ति कितने समय तक रहता है यह महत्वपूर्ण नहीं है परंतु व्यक्ति ने समाज के लिए क्या किया है, इस सदन में विधायक के नाते क्या भूमिका निभाई है वह ज्यादा महत्पूर्ण है। उस चीज के लिए उन्हे स्मरण किया जाएगा। अध्यक्ष महोदय आपने समय दिया आपका बहुत-गहुत धन्यवाद।

अध्यक्ष : अब नेता प्रतिपक्ष, आदरणीय मुकेश अग्निहोत्री जी शोकोद्गार प्रस्ताव में हिस्सा लेंगे।

10.08.2022/1130/बी.एस./एच0के0/-3

श्री मुकेश अग्निहोत्री : माननीय अध्यक्ष महोदय, सदन के नेता मुख्य मंत्री जी ने यहां पर शोकोद्गार प्रस्तुत किए हैं और पिछले सत्र से इस सत्र के दौरान चार माननीय पूर्व विधायक जिन्होंने इस सदन की शोभा बढ़ाई है वे हमारे बीच से चले गए हैं। देश में पंडित सुख राम जी एक ऐसा नाम जो राजनीति में किसी भी परिचय का मोहताज नहीं है। हम लोक 1962 में जब पैदा भी नही हुए थे तो वे इस माननीय सदन के सदस्य बन चुके थे। वे आठ बार इस माननीय सदन के सदस्य रहे।

श्री एन0 जी0 द्वारा जारी...

10-08-2022/1135/एच.के.-एन.जी./1

श्री मुकेश अग्निहोत्री जारी.....

वर्ष 1962 में जब हम पैदा भी नहीं हुए थे तब वे इस माननीय सदन के सदस्य बन चुके थे। वे आठ बार विधायक रहे और मुझे लगता है कि विधायक के जितने भी चुनाव उन्होंने लड़े थे, वे सभी जीते। आज के दौर में एक चुनाव जीतना भी बहुत मुश्किल काम है लेकिन वे आठ बार विधायक और तीन बार लोकसभा सदस्य बने। वे हिमाचल प्रदेश में लगभग हर मंत्रालय के मंत्री रहे। उन्होंने केन्द्रीय राजनीति में भी जाकर अपना सिक्का जमाया और हिमाचल प्रदेश को एक नई पहचान दी। उन्होंने एक बहुत बड़ा नाम पैदा किया और राजनीति के चाणक्य की भूमिका में वे शह और मात का खेल खेलते रहे। उन्हें हमेशा संचार क्रांति के अग्रदूत के तौर पर जाना जाएगा। इस देश में जो संचार क्रांति आई उसमें उनकी बहुत बड़ी भूमिका रही है। उन्होंने ग्रामीण स्तर तक टेलिफोन बूथ, टेलिफोन एक्सचेंज, फाइबर से लेकर मोबाइल क्रांति तक अपनी विशेष छाप छोड़ी है। यही कारण है कि जब उनका निधन हुआ तब देश के संचार से जुड़े बड़े-बड़े घरानों ने भी उन्हें

श्रद्धासुमन अर्पित किए और उन्होंने इसलिए किया क्योंकि उन घरानों को संचार कार्य शुरू करवाने में पंडित सुखराम जी का बहुत बड़ा योगदान था।

मुख्य मंत्री जी ने सही कहा कि हिमाचल प्रदेश की राजनीति में तीसरी पार्टी का कभी कोई विकल्प नहीं रहा। लेकिन पंडित सुखराम जी ने यह साबित कर दिया था कि हिमाचल प्रदेश में भी तीसरी पार्टी आ सकती है। उन्होंने एक अलग पार्टी बनाई जिसका नाम 'हिमाचल विकास कांग्रेस' था और उसके विधायक भी चुन कर आए थे। उनमें से कुछ विधायक तो आज भी सरकार में प्रमुख कुर्सियों पर बैठे हुए हैं और विपक्ष में भी कुछ सदस्य बैठे हुए हैं। उनके सुपुत्र भी इस माननीय सदन के सदस्य हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि उन्होंने हिमाचल विकास कांग्रेस के सिम्बल पर शिमला संसदीय क्षेत्र से डॉ. (कर्नल) धनी राम शांडिल जी को तलाश व तराश कर सांसद बनाया। जो भी लोग उनके साथ रहे उन सभी की बहुत अच्छी राजनीतिक पारियां चली हैं।

10-08-2022/1135/एच.के.-एन.जी./2

उनके सुपुत्र श्री अनिल शर्मा भी लगातार इस माननीय सदन के सदस्य बनते आ रहे हैं। श्री अनिल शर्मा पिछली सरकार में भी मंत्री रहे और वर्तमान सरकार में भी मंत्री रह चुके हैं। मण्डी के विकास के लिए, जिले के कल्याण के लिए और प्रदेश के विकास में उनकी भूमिका को हमेशा याद किया जाएगा। यहां पर जो प्रस्ताव आया है मैं और मेरा दल उसमें अपने आप को शामिल करता है। पंडित सुखराम जी ने 50 वर्ष से भी ज्यादा की राजनीतिक पारी यहां पर खेली है और हम आज उसे याद करते हैं। हम उनके द्वारा किए हुए विकास को याद करते हैं और उनके द्वारा की गई राजनीति को याद करते हैं। अध्यक्ष महोदय, पंडित सुखराम जी को हम सभी आपके माध्यम से और इस माननीय सदन में बैठे उनके सुपुत्र को प्रत्यक्ष रूप से श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं।

अध्यक्ष महोदय, स्वर्गीय श्री प्रवीण शर्मा जी मेरे जिला ऊना से सम्बंध रखते थे। उनका व्यक्तित्व हरफनमौला था। वे वर्ष 1998 में एक बार ही विधायक बने थे। लेकिन एक

बार में ही उन्होंने अपनी पूरी छाप छोड़ दी थी। वे दबंग थे और इसमें कोई दोराय नहीं है। मैं यह कहना चाहता हूं कि विकास करवाने के बाद जो लोग हारते हैं उसमें श्री प्रवीण शर्मा जी भी शामिल थे। उन्होंने बहुत विकास करवाया था।

श्री एस.एस. द्वारा जारी.....

10.08.2022/1140/SS-YK/1

श्री मुकेश अग्निहोत्री क्रमागत :

उस समय के दौर में अपने चुनाव क्षेत्र और जिला में प्रवीण शर्मा जी ने बहुत भाग-दौड़ की और जो कुछ वे ऊना या चिंतपुरनी के विकास के लिए कर सकते थे, वह किया। वे युवा सेवाएं एवं खेल विभाग के राज्य मंत्री भी थे। जैसे मुख्य मंत्री जी ने कहा कि वे सरकारी गाड़ी भी खुद ही चलाते थे और मुझे याद है कि जब मैं दिल्ली में पत्रकारिता के क्षेत्र में था तो वे मुझे विशेष तौर पर मिलने आए। मुझे कहने लगे कि यहां क्या रखा है आप राजनीति में आ जाओ। मैंने उनसे कहा कि राजनीति कैसे होगी तो उन्होंने मुझे कहा कि जो आपका चुनाव क्षेत्र है आप वहीं से आ जाओ। मैंने उनसे कहा कि वहां तो भारतीय जनता पार्टी के राज्याध्यक्ष हैं तो उन्होंने मुझसे कहा कि यह बात आप मुझ पर छोड़ दो। तो यह एक सोच उनकी लोगों को अपने साथ जोड़ने वाली थी। उसी ढंग से वे लोगों से बात करते थे। जब मैं पिछली दफ़ा मंत्री था तब वे मुझे मिले। मुझे कहने लगे कि बहुत भागदौड़ कर रहे हो लेकिन अपने लिए भी समय निकालो। वे कहने लगे कि मैं एक बार हॉस्पिटल जा रहा था तो मुझे एक व्यक्ति मिलने के लिए आया और कहने लगा कि मुझे एक काम है। मैंने उनसे कहा कि मैं अभी हॉस्पिटल जा रहा हूं, वापिस आकर आपकी बात सुनूंगा। वह व्यक्ति कहने लगा कि हॉस्पिटल गए आदमी का क्या पता होता है, आप मेरा काम करके ही जाओ। तो उन्होंने कहा कि राजनेताओं की यह स्थितियां हैं। इसलिए राजनीति में अपने लिए भी समय रखो। अकसर घर पर भी मैं देखता था कि इंसान के पास इंसान नहीं बैठता लेकिन उनके पास मोर बैठे रहते थे। उनके आस-पास बहुत अच्छा वातावरण पक्षियों का

लगा रहता था। पक्षी उनके हाथ व कंधे पर आकर बैठ जाते थे। उन्होंने इतना प्रेमभाव पक्षियों के साथ रखा हुआ था। वे हाउसिंग बोर्ड के वाइस-चेयरमैन थे। इस दफ़ा तो बहुत ज्यादा उनकी सक्रियता नहीं दिखी। लेकिन प्रवीण शर्मा जैसे लोग भी बार-बार इस दुनिया में नहीं आते। मैं उनको दिल की गहराइयों से याद करता हूं।

10.08.2022/1140/SS-YK/2

रूप सिंह चौहान जी से हमारी नज़दीक से बातचीत नहीं हुई। लेकिन 1977 में वे सूचना एवं जन-सम्पर्क विभाग के मंत्री रहे। वे हमारे सिरमौर के नौहराधार क्षेत्र से आते थे। वे एक दफ़ा विधायक बने। उन्होंने प्रदेश के लिए जो कुछ किया, उसे हम याद करते हैं।

मस्त राम जी, मंडी जिला से दूसरे ऐसे व्यक्ति हैं जो इस दौरान हमारे बीच से चले गए। वे किसी भले जमाने के बी0एस0सी0, बी0एड0 थे। वे शराफत की प्रतिमूर्ति थे। बहुत ही दुखद परिस्थितियों में उनका निधन हुआ। हम उनसे अकसर मिलते रहते थे और वे अगला चुनाव लड़ने की बात भी करते थे। वे कहते थे कि मैंने एक चुनाव और लड़ना है। लेकिन क्या परिस्थितियां बनीं, क्या उनके दिलोदिमाग में आया कि उन्होंने अपना जीवन समाप्त कर लिया। लेकिन इस प्रदेश के लिए जो भी उनकी भूमिका रही, वह सराहनीय है। वे दो दफ़ा इस सदन के सदस्य रहे। उन्होंने अपने चुनाव क्षेत्र व प्रदेश के विकास के लिए जो भी कार्य किया, उसे हम हमेशा याद करते रहेंगे। अध्यक्ष महोदय, आपके माध्यम से जो भी शोक संवेदनाएं उनके परिवारजनों को भेजी जाएं, उसमें आप मुझे और मेरे दल को भी शामिल करें। आपने मुझे बोलने के लिए समय दिया, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

10.08.2022/1140/SS-YK/3

अध्यक्षः अब ठाकुर महेन्द्र सिंह, माननीय जल शक्ति मंत्री अपनी बात रखेंगे।

जल शक्ति मंत्री : आदरणीय अध्यक्ष जी, आज हम उन चार महान् विभूतियों को याद कर रहे हैं जिन्होंने इस माननीय सदन को एक बार नहीं बल्कि अनेक बार सुशोभित किया है। उन्होंने इस प्रदेश व देश के लिए बहुत बड़े-बड़े काम किए हैं।

जारी श्रीमती के0एस0

10.08.2022/1145/केएस/वाईके/1

जल शक्ति मंत्री जारी---

आदरणीय सुखराम जी हमारे मण्डी जिला से एक ऐसे जननायक थे जो कि धरातल से जुड़े हुए थे। ऐसे बहुत कम नेता होते हैं जिनको जमीन से लेकर ऊपर तक पूरा पता होता है कि गरीबी क्या है, गुरबत क्या है, विकास क्या है, कैसे हमने समाज की सेवा करनी है, प्रदेश की सेवा करनी है और राष्ट्र में अपना योगदान देना है। मुझे उनके साथ लम्बे समय तक रहने का मौका मिला। हमारे मण्डी जिला के कोटली क्षेत्र में उनका जन्म हुआ था जो कि बहुत ही पिछड़ा हुआ क्षेत्र था। उन्होंने अपना पहला चुनाव निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में लड़ा था। फिर दूसरा, तीसरा, चौथा, आगे के सभी चुनाव वे लगातार कांग्रेस पार्टी से लड़ते रहे। वे डॉ0 वाई0एस0 परमार के बहुत ही निकटतम सहयोगियों में से थे। वर्ष 1967, 1971, 1974,1977 में लगातार उन्होंने जहां सरकार का काम किया वहां पार्टी का भी काम किया। आदरणीय मुख्य मंत्री जी ने जैसे कहा कि मण्डी जिला से ऐसी दो महान विभूतियां रही हैं एक ठाकुर कर्म सिंह जी जो टैरिटोरियल काउंसिल के चेयरमैन रहे हैं और दूसरे पंडित सुखराम जी, इन दोनों में राजनीतिक तौर पर एक रेस थी कि हम मण्डी जिला में मुख्य मंत्री की कुर्सी को ला पाएं लेकिन विधि-विधाता ने पता नहीं क्या लिखा था वह सम्भव नहीं हो सका। वर्ष 1984 में वे लोकसभा में गए और 1989 तक उन्होंने लोकसभा में मंत्री के रूप में काम किया। वर्ष 1989 के चुनाव में वे हार गए। मैं जब वर्ष 1990 में पहली बार विधायक बना था तो वर्ष 1991 में वे ऐसे ही धर्मपुर विधान सभा क्षेत्र के दौरे पर थे। ऐसा किसी को मालूम नहीं था कि लोकसभा के चुनाव कभी भी हो सकते हैं लेकिन जब वे हमारे क्षेत्र के दौरे पर थे तो उस समय में अलग से अपने दौरे पर था उनका अलग से दौरा था। उनको अचानक संदेश आया कि तुरंत दिल्ली आ जाओ। वे वहीं से दिल्ली चले गए और

उसके बाद लोकसभा भंग हो गई। चुनाव आए, जब चुनाव आए तो उन्होंने अपनी पार्टी के कार्यकर्ताओं के माध्यम से मुझे संदेश भेजा कि महेन्द्र सिंह जो धर्मपुर से निर्दलीय प्रत्याशी जीता है, उसको आप मुझसे मिलवाओ। हम मिले और उसके उपरांत उन्होंने

10.08.2022/1145/केएस/वाईके/2

कहा कि आप इस चुनाव में मेरी मदद करें आगे मैं आपकी मदद करुंगा। जो मदद मुझसे हो सकती थी मैंने की लेकिन मैंने उस समय एक बात महसूस की कि वे अपने वचनों के बहुत पक्के थे। अगर उन्होंने किसी को भी मदद करने का आश्वासन दे दिया तो वे निश्चित तौर पर मदद करते थे। मुझे याद है वर्ष 1993 में जब मुझे उन्होंने कांग्रेस पार्टी में शामिल कर लिया तो उस वक्त जब टिकटों का आबंटन होने लगा तो नूरपुर से पहले राउंड में सत महाजन जी को कहा गया कि उनका टिकट कट जाएगा। मैंने माननीय सुखराम जी से निवेदन किया कि सत महाजन जी बहुत ही उच्च कोटि के नेता हैं, आप इनको टिकट दिलवा दो, मैं दोबारा इंडिपैंडैंट लड़ लूंगा। उन्होंने कहा कि सत महाजन जी को भी और आपको भी कांग्रेस पार्टी का टिकट मिलेगा। तो जो वर्ष 1993 और 1998 में जब हम जीतकर गए तो प्रदेश में कांग्रेस पार्टी के दो धड़े खड़े हो गए। एक ग्रुप राजा वीरभद्र सिंह जी के साथ था और दूसरा ग्रुप पंडित सुखराम जी के साथ था।

श्रीमती अ0व0 द्वारा जारी-----

10-08-2022/1150/av/ag/1

शोकोद्गार क्रमागत ---------

जल शक्ति मंत्री -----**जारी**

मुझे याद है उस समय श्री नरसिम्हा राव जी देश के प्रधान मंत्री हुआ करते थे। हम उस समय 22 चुने हुए विधायक श्री नरसिम्हा राव जी को मिलने गए तो वे जब कमरे में आए तो उन्होंने कुर्सी पर बैठकर केवल एक ही बात कही कि आप सभी जाइए, श्री वीरभद्र सिंह जी

ही मुख्य मंत्री होंगे। उसके बाद यहां पर दोबारा से कांग्रेस पार्टी की सरकार बनी थी। वर्ष 1997 में किन्हीं कारणों से उन्हें कांग्रेस पार्टी ने निष्कासित किया था। उनके कुशल नेतृत्व में हमने उस समय हिमाचल प्रदेश में हिमाचल विकास कांग्रेस पार्टी का गठन किया था। उसके बाद वर्ष 1998 में चुनाव हुए और मण्डी जिला के सदर विधान सभा क्षेत्र से पं0 सुख राम जी, बल्ह विधान सभा क्षेत्र से श्री प्रकाश चौधरी जी, करसोग विधान सभा क्षेत्र से श्री मनसा राम जी और धर्मपुर विधान सभा क्षेत्र से मैं चुनकर आया था। उस समय माननीय सदस्य श्री रमेश चंद ध्वाला जी निर्दलीय जीतकर आए थे। उस समय स्थिति ऐसी थी कि प्रदेश में सरकार केवल उसी पार्टी की बननी थी जहां हम 5 लोग जाते। उस समय प्रदेश में सत्ता के लिए पार्टियों में काफी जद्दोजहद हुई। यहां 2 मार्च से लेकर 24 मार्च तक सरकार बनाने के लिए एक विचित्र परिस्थिति पैदा हुई थी। उस समय श्री वीरभद्र सिंह जी ने शपथ तो ले ली मगर जब उन्हें यह लगा कि सरकार नहीं बन पाएगी तो दिनांक 24 मार्च, 1998 को हिमाचल प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी और हिमाचल विकास कांग्रेस पार्टी के गठबंधन की सरकार बनी। माननीय सदस्य श्री अनिल शर्मा जी दिनांक 27 मार्च, 1998 को राज्य सभा के लिए चुने गए और माननीय सदस्य डॉ0राम लाल मारकण्डा का दिनांक 6 जून, 1998 को परिणाम निकला था और ये उस समय हिमाचल विकास कांग्रेस के 5वें सदस्य चुनकर आए थे। हमने पं0 सुख राम जी से बहुत कुछ सीखा है। वे एक बात जरूर कहते थे कि बहुत तेज नहीं चलना चाहिए बल्कि आहिस्ता-आहिस्ता चलना चाहिए और आपके साथ जो लोग आज चले हैं यह जरूरी नहीं है कि ये आपका पूरे सफर में साथ देंगे। ये लोग बीच-बीच में

10-08-2022/1150/av/ag/2

साथ छोड़कर निकल जाते हैं और आपके साथ लंबे समय तक चलने वाले कुछेक साथी ही होते हैं। वे चाहे प्रदेश सरकार में मंत्री रहे या केंद्र सरकार में मंत्री रहे, उन्होंने हर जगह अपनी एक अलग छाप छोड़ी है। वर्ष 1993-96 के बीच में वे यह कहते थे कि मैं हिन्दुस्तान के लिए एक ऐसा फोन ला रहा हूं जोकि आपकी जेब में होगा। आप अपनी जेब से फोन

निकालकर देश व विदेश में बात करेंगे। मगर हम उस वक्त यह सोचते थे कि पंडित जी क्या बोल रहे हैं और यह कैसे सम्भव हो सकता है। परंतु आज वही युग चला हुआ है। हमारी जेब में फोन है और हम अपनी-अपनी जेब से फोन निकालकर बात करते हैं। इस प्रकार उनकी एक बहुत लंबी सोच थी। आज वे हमारे बीच में नहीं है और कुदरत का एक नियम है कि जो इस संसार में आया है उसको यहां से जाना ही पड़ता है। उनके द्वारा इस प्रदेश व देश के विकास के लिए कार्यों को हम याद करते हुए हम उन्हें अपने श्रद्धा के सुमन अर्पित करते हैं।

दूसरे, पूर्व सदस्य श्री रूप सिंह चौहान जी रेणुका विधान सभा क्षेत्र से निर्वाचित हुए थे, मैं उस समय विधायक तो नहीं था मगर रेणुका में हुए एक उप चुनाव के दौरान मेरा उनसे मिलना हुआ था। मेरा उनसे नोहराधार में मिलना हुआ था और उनको देखकर व सुनकर ऐसा लग रहा था कि वे एक दमदार लीडर है। उन्होंने मुझे कहा था कि रेणुका विधान सभा क्षेत्र के साथ-साथ पूरे सिरमौर जिला में अभी बहुत काम करने के लिए हैं और यहां आपको भी काम करना है। मैं उस पुण्य आत्मा को भी नमन करता हूं और साथ में अपने श्रद्धा के सुमन अर्पित करता हूं।

इसके अतिरिक्त पूर्व सदस्य श्री मस्त राम जी ने करसोग विधान सभा क्षेत्र से दो बार चुनाव लड़ा था। वे बहुत ही सोम्य स्वभाव के थे और जब भी मिलते थे हंस कर व मीठी वाणी में बात करते थे।

टी सी द्वारा जारी

10.08.2022/1155/TCV/AG/1
शोकोद्गार ..... जारी
माननीय जल शक्ति मंत्री ..... जारी

हम वर्ष 1993,1998, 2003 और 2007 में साथ रहे लेकिन उसके बाद भी जब मैं करसोग जाता था, मेरे भी वहां पर सेब के बागीचे हैं तो हम आपस में मिलते रहते थे। लेकिन यह

बात मेरी भी समझ में नहीं आई कि उन्होंने ऐसा क्यों किया? मुझे आज भी याद कि आज से चार साल पहले वे मेरे पास आए कि मुझे चिंडी में जमीन लेनी है और आप मेरी मदद करें। उन्होंने कहा की मेरे पास दो लाख रूपये कम है। मैंने कहा कि मेरे पास दो लाख रुपये नहीं है, सिर्फ एक साल रुपये हैं। ये मैं आपको दे सकता हूं। यह बात समझ में नहीं आ रही है कि उन्होंने ऐसा गलत निर्णय क्यों लिया। वे मेरे साथी रहे हैं। करसोग के विकास के लिए उन्होंने भरपूर प्रयास किया है। मैं इस पुण्य आत्मा को नमन और श्रद्धासुमन अर्पित करता हूं।

10.08.2022/1155/TCV/AG/2

श्री प्रवीण शर्मा जी वर्ष 1998 में राजनीति में आए और वे मेरे साथ स्टेट मिनिस्टर बने। उनको लोक निर्माण विभाग भी स्टेट मिनिस्टर के रूप में मेरे साथ अटैच किया था। हम अक्सर साथ बैठते थे और मिलकर निर्णय लेते थे। उन्होंने संगठन के लिए बहुत बड़ा काम किया है। उनके जाने से सबसे ज्यादा नुकसान भारतीय जनता पार्टी को हुआ है। जब भी कभी कोई निर्णायक मोड़ आता था तो श्री प्रवीण शर्मा जी को याद किया जाता था कि उनको यह कार्य को सौंपा जाए और वे निश्चिततौर पर कोई-न-कोई समधान जरूर निकालेंगे। आज वे भी हमारे बीच से चले गये। मुख्य मंत्री जी ने जिन चार पुण्य आत्माओं को श्रद्धासुमन अर्पित किए हैं, मैं भी उनके लिए श्रद्धासुमन अर्पित करता हूं और ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि इनको इतनी ताकत दें कि वे इस दुःख की घड़ी से उभर सके।
अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे समय दिया, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

10.08.2022/1155/TCV/AG/2

अध्यक्ष : अब इस चर्चा में श्री सुखविन्द्र सिंह सुक्खु जी भाग लेंगे।

श्री सुखविन्द्र सिंह सुक्खु (नदौन) : अध्यक्ष महोदय, मुख्य मंत्री जी जो शोकोद्गार यहां माननीय सदन में लाये है, मैं भी उसमें अपने आप को शामिल करता हूं। अध्यक्ष महोदय,

पंडित सुख राम जी एक ऐसी राजनीतिक शख्सियत थे जिसके कारण बी0जे0पी0 का उदय हुआ। वे हिमाचल प्रदेश में एक ऐसी पार्टी के निर्माता बने जो एच0पी0सी0 के नाम से जानी जाती है। वे अपनी आंतरिक कलह के कारण कांग्रेस से टूट कर अलग हुए और वर्ष 1998 में उनके सहयोग से भारतीय जनता पार्टी सत्ता में आई। मुझे उनके साथ वर्ष 1991 से जुड़ने का मौका मिला। उन दिनों मैं विश्वविद्यालय में पढ़ता था और पंडित सुख राम जी प्लानिंग मिनिस्टर बनें। प्लानिंग मिनिस्टर बनने के पश्चात् उनके मन में हिमाचल के लिए हमेशा दर्द रहता था। जब वे योजना राज्य मंत्री बने तो उन्होंने एन0जे0पी0सी0 के रूप में हिमाचल प्रदेश को एक तोफाह दिया। आज यह एस0जे0वी0एन0एल0 के नाम से जानी जाती है। प्लानिंग में यह प्रोजैक्ट काफी समय से अटका पड़ा था और वर्ष 1991 में केन्द्रीय राज्य मंत्री के रूप में उन्होंने इसको स्वीकृति दिलाई। जब उन्हें केन्द्रीय राज्य मंत्री से संचार मंत्रालय का कार्यालय मिला तो उस समय जो लैंड-लाइन टेलीफोन हुआ करता था, वह आधुनिक और धनी परिवार की निशानी हुआ करती थी। हिमाचल प्रदेश में वर्ष 1991-92 में लैंड लाइन फोन की डेन्सिटी 20-30 प्रतिशत हुआ करती थी।

एन0एस0 द्वारा... जारी

10-08-2022/1200/NS/AS/1

शोकोद्गार ..... जारी

श्री सुखविन्द्र सिंह सुक्खु ..... जारी

हिमाचल प्रदेश में अगर कोई एक लैंडलाइन टेलीफोन प्राईवेट लेने जाता था तो यह 5000 रुपये से लेकर 10,000 रुपये तक बिका करता था। दिल्ली में एक लैंडलाइन टेलीफोन 40 से 50,000 रुपये तक बिका करता था। पंडित सुख राम जी के आने के बाद पूरे हिंदुस्तान में उन्होंने इस प्रकार से टेलीफोन स्वीकृति करनी शुरू की कि उन्होंने ब्लैक मार्किटिंग को खत्म कर दिया और हिमाचल प्रदेश पहला राज्य बना जहां टेली डायनेस्टी सबसे ज्यादा लैंडलाइन टेलीफोन की खत्म हुई। वे जो भी कार्य करते थे तो उस चीज़ को ध्यान में रख कर करते थे और उनके मन में जो हिमाचल के संदर्भ में भी भौगोलिक परिस्थिति हुआ करती थी। वे हमेशा यही सोचते थे कि हिमाचल की आम जनता, सादगीपूर्ण जीवन जीने वाली जनता को कैसे फायदा पहुंचाया जा सके? उस समय यही एक ऐसा मंत्रालय था।

उस समय माननीय महेन्द्र सिंह जी आजाद उम्मीदवार के तौर पर चुनाव लड़ा करते थे। हम उनसे उस समय यूनिवर्सिटी के प्रोफैसर्ज़ और स्टूडैंट्स के काफी टेलीफोन स्वीकृत करवाया करते थे। कुछ समय बाद टेलीफोन की वेटिंग लिस्ट ही खत्म हो गई। जिस प्रकार की तकनीक वे हिंदुस्तान और हिमाचल प्रदेश को देकर गए उसमें दिल्ली के चार मैट्रोसिटी में ओ.सी.वी. नाम की तकनीक लेकर आए जोकि optical fiber से रिलेटिड थी और पी.सी.ओ. से रिलेटिड थी। उन्होंने हिमाचल के पढ़े लिखे युवाओं को लगभग 1000 पी.सी.ओ. स्वीकृत करवाए जिससे वे आय प्राप्त कर सकें। उन्हें कोई जानता भी न हो फिर भी वे एक साधारण से आवेदन पत्र पर टेलीफोन स्वीकृत कर दिया करते थे। इसके पीछे उनका क्या भाव था? उनका भाव प्रदेश का विकास और आम आदमी की सेवा था। ऐसे बहुत कम लोग होते हैं जो राजनैतिक जीवन में ऊंचाइयां छूते हैं लेकिन अपनी जमीन को नहीं भूलते हैं। यही कारण था कि जब वे वर्ष 1952 में विधायक बने तो आज तक उन्होंने एम0एल0ए0 के रूप में कोई चुनाव नहीं हारा था। माननीय मुकेश जी ने ठीक कहा कि ऐसे कुछ ही लोग होते हैं। आज के राजनैतिक जीवन में एक या दो चुनाव लड़ना मुश्किल होता है। पंडित सुख राम

10-08-2022/1200/NS/AS/2

जी और ठाकुर राम लाल जी दोनों ने कोई चुनाव नहीं हारा है और यह सदन के लिए बड़ी गरिमा की बात है।

अध्यक्ष महोदय, मैं पंडित सुख राम जी के बारे में एक और बात कहना चाहूंगा। हम लोग छात्र जीवन में थे और राजनीति की सीढ़ियां चढ़ रहे थे लेकिन उनका प्यार हमेशा से युवाओं को प्रेरित करता रहा कि आपको काम करना है, आपको मेहनत करनी है। डॉ0 राम लाल माकण्डा उस समय एन0एस0यू0आई0 के जनरल सेक्रेटरी थे और इन्होंने एच0पी0सी0सी0 ज्वाईन की। एक एस0सी0 नेगी जी थे और वे भी विश्वविद्यालय में पढ़ते थे और इन्होंने भी एच0पी0सी0सी0 ज्वाईन की। वे दो स्थानों किन्नौर, लाहौल और स्पिति से टिकट मांग रहे थे। डॉ0 राम लाल मारकण्डा जी यूनिवर्सिटी में प्रोफैसर लगना चाहते थे और वे अभी सभागार में नहीं हैं। लेकिन वे प्रोफैसर न लग कर जब राजनीतिक पृष्ठभूमि में गए तो उन्हें महेन्द्र सिंह जी ने लाहौल और स्पिति से चुनाव लड़ाया। उन्होंने युवाओं को जो स्टूडैंट्स लाइफ से आगे बढ़ना चाहते थे बहुत मौका दिया क्योंकि मैं एन0एस0यू0आई0 का स्टेट प्रेजीडैंट था और मेरे ये जनरल सेक्रेटरी थे और राम लाल जी उस समय

मिनिस्टर बने तथा आज बी0जे0पी0 में दोबारा से मंत्री बने। यह उन्हीं की प्रेरणा थी कि युवा साथी आगे बढें। मैं रूप सिंह चौहान जी को कम जानता हूं लेकिन इस सदन की उन्होंने शोभा बढ़ाई है और मुख्य मंत्री जी व विधायक दल के नेता ने जो उनके प्रति विचार प्रस्तुत किए हैं, उसमें मैं भी अपने आपको सम्मिलित करता हूं।

श्री मस्त राम जी से मृत्यु से पहले मिला था और मैं अपने कार्यालय में बैठा हुआ था तथा वे मुझसे मिलने आए। कभी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी कि जो व्यक्ति राजनैतिक जीवने में हो और यह विडम्बना ही है कि राजनैतिक जीवन में रहने वाले लोगों को आज ऐसी क्या परिस्थितियां पैदा हो गई हैं, चाहे सांसद के रूप में राम स्वरूप जी थे या मस्त राम जी थे, ये क्यों आत्महत्या कर रहे हैं? यह सोचने वाली बात है। 75 वर्ष की आयु में ऐसी क्या परिस्थितियां हुईं? जिनसे लोग आशा करते हैं और राजनीतिक जीवन में जो व्यक्ति होता है उसने सब कुछ देखा होता है क्योंकि वह हर छोटी-छोटी इकाई से निकल कर आगे बढ़ता है। वह दु:ख और सुख से निकलता है, कभी चुनाव जीतता है और कभी चुनाव हारता है।

श्री आर0 के0 एस0 द्वारा जारी।

10.08.2022/1205/RKS/AS-1

शाकोद्गार..जारी

श्री सुखविन्द्र सिंह सुक्खु जारी....

कभी वह चुनाव जीतता है, कभी चुनाव हारता है, बीमारी में सभी का सहयोग करने की चेष्ठा करता है और दूसरों को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है फिर एक सांसद और एक विधायक ने किस परिस्थिति में आत्महत्या की इस पर सोचने की आवश्यकता है। सुनने में यह भी आ रहा है कि आत्महत्या करने से पहले वे नहर की तरफ गए थे जहां उनका आत्महत्या करने का मन बदल गया था। लेकिन बाद में उन्होंने अपने कमरे में आकर फंदा लगाया और आत्महत्या कर ली। उनके जीवन में किसी चीज़ की कमी नहीं थी। उनके बच्चे डॉक्टर बन चुके थे। स्वर्गीय श्री सुख राम जी का देहांत 93 वर्ष और श्री

रूप सिंह चौहान जी का निधन 95 वर्ष की आयु में हुआ है। मैं इन सभी के शोकोद्गार में अपने आप को शामिल करता हूं। हमें इस दृष्टिकोण से भी देखने की आवश्यकता है कि जो लोग इस सदन की गरिमा को बढ़ा चुके हैं वे आत्महत्या क्यों कर रहे हैं।

जब मैं वर्ष 1998 में पार्षद था तो उस समय स्वर्गीय श्री प्रवीण शर्मा जी राज्य मंत्री थे। स्वर्गीय श्री प्रवीण शर्मा जी, प्रो. प्रेम कुमार धूमल जी के राइट हैंड थे। जैसा माननीय मुख्य मंत्री जी ने कहा कि स्वर्गीय श्री प्रवीण शर्मा जी काफी दबंग स्वभाव के व्यक्ति थे। मुझे गाड़ी चलाने की घटना से एक किस्सा याद आ रहा है। जब वे रात को 10-11 बजे विकास नगर के नीचे बहुत तेज गति से गाड़ी चला रहे थे तो उनकी गाड़ी का टकराव मेरी गाड़ी के साथ हो गया। उन्होंने पुलिस को फोन किया और मुझे डराने लगे। मैं उस समय उस क्षेत्र का पार्षद था। वे दिल के बहुत अच्छे थे। जब मैंने उन्हें समझाया तो वे बात समझ गए और फिर उन्होंने उस घटना को वहीं खत्म कर दिया। उन्होंने ही पुलिस वालों को बुलाया और फिर वापिस भी भेज दिया। जब वे बात समझ जाते थे तो उस पर अमल भी करते थे और यह उनकी एक अच्छी लोकतांत्रिक ताकत थी। मुझे उस दिन उनसे पहली बार मिलने का मौका मिला था। दूसरी बार उन्होंने मुझे अपने घर

10.08.2022/1205/RKS/AS-2

ब्रेकफास्ट के लिए बुलाया और कहा कि आपके गृह क्षेत्र के साथ मेरा विधान सभा निर्वाचन क्षेत्र भी लगता है। मैं उस समय पार्षद था और वे मंत्री थे लेकिन मुझे उनका स्वभाव बहुत अच्छा लगा। मुझे उनकी अचानक मृत्य की खबर सुनकर बहुत गहरा दुःख हुआ । इन सभी लोगों ने इस सदन की गरिमा को बढ़ाया है। माननीय मुख्य मंत्री ने जो शोकोद्गार प्रस्तुत किया है मैं भी इसमें अपने आपको शामिल करता हूं। माननीय मुख्य मंत्री जी ने ठीक कहा कि इस जीवन में काई भी चीज़ स्थाई नहीं है। जो आया है उसने जाना ही है लेकिन इस सदन की गरिमा बनी रहे, इन्हीं शब्दों के साथ मैं इस शोकोद्गार में अपने आपको शामिल करता हूं। धन्यवाद।

अध्यक्ष : अब शहरी विकास मंत्री इस शोकोद्गार में भाग लेंगे।

शहरी विकास मंत्री : अध्यक्ष महोदय, माननीय मुख्य मंत्री ने जो शोकोद्गार प्रस्तुत किए हैं, मैं भी इसमें अपने आपको शामिल करता हूं। इस प्रदेश के वरिष्ठ नेता स्वर्गीय श्री पंडित सुख राम जी जो लगभग 94-95 वर्ष की आयु में इस संसार को छोड़कर चले गए उन्हें केवल हिमाचल प्रदेश के लोग ही नहीं बल्कि पूरे देश के लोग जानते थे। हिमाचल प्रदेश की राजनीति में उनका विशेष नाम रहा है। वर्ष 1977 में जनता पार्टी की बहुत बड़ी लहर थी लेकिन उस समय कांग्रेस पार्टी के जो 8-9 लोग जीतकर इस विधान सभा में आए थे उनमें पंडित सुख राम एवं ठाकुर राम लाल जी भी थे। पूरे भारतवर्ष व विशेष रूप से हिमाचल प्रदेश में टेलीफोन बहुत ही प्रिविलेज्ड लोगों के पास हुआ करता था।

श्री बी.एस.द्वारा जारी

10.08.2022/1210/बी.एस./डी0सी0/-1

शहरी विकास मंत्री जारी...

जिस प्रकार से बताया जाता है कि उस समय दूरभाष बहुत ही विशिष्ट लोगों के पास हुआ करता था और जब टेलीफोन के लिए आवेदन किया जाता था तो कम-से-कम तीन-चार साल के बाद उसका नंबर आता था। लेकिन हिमाचल प्रदेश का कोई भी राज नेता केन्द्रीय स्तर पर स्थान प्राप्त करता है तो वहां निश्चित रूप से अपनी छाप छोड़ता है। पंडित सुख राम जी सर्वश्रेष्ठ थे जिन्होने संचार राज्य मंत्री, स्वतंत्र के रूप में जब काम संभाला तो सारे देश भर में एक क्रांति पैदा की। उसके कारण देश में कनेक्टिविटी ही नहीं बढ़ी परंतु बहुत से रोजगार के अवसर भी लोगों को मिले। हम उस समय हिमाचल प्रदेश में अनेक स्थानों पर सड़कों को खोदा हुआ देखा करते थे और उनमें टेलीफोन की लाइने बिछाई जाती थी। कितने ही नौजवानों को उस समय कार्य मिला। अनेकों पी0सी0ओज0 उन्होंने आबंटित किए। यह कार्य केवल हिमाचल प्रदेश में ही नहीं हुआ परंतु दिल्ली एयरपोर्ट, बस अड्डा और अन्य कार्यालयों में यह काम हुआ है। देश में यदि कही भी हिमाचल प्रदेश में युवा ने नौकरी के लिए आवेदन किया तो उसे स्वीकार करते हुए उस नौजवान को कार्य दिया गया। यहां

आदरणीय सुखविन्द्र सिंह सुक्खु जी ने ठीक कहा कि युवाओं को आगे बढ़ाने में उनका बहुत योगदान हुआ करता था। मुख्य मंत्री जी ने यहां पर एच0वी0सी0 की चर्चा की है। हिमाचल प्रदेश में तीसरी राजनीतिक ताकत कोई बन करके आई नहीं है लेकिन पंडित सुख राम जी ने वर्ष 1998 के चुनाव में ज्यादा तैयारी नहीं की थी उसके बावजूद भी हिमाचल प्रदेश में ऐसी ताकत बन करके आए कि उनके बगैर सरकार बनना संभव नहीं था। उनके कारण ही उस समय सरकार बनी और वह सरकार पांच वर्ष तक चली। उन्हें हिमाचल प्रदेश की राजनीति का चाणक्य कहा जाता था। वे गुरू और शिक्षक के रूप में भी बहुत सी बाते सिखाते थे। जब मैं राज्य सभा का सदस्य था और मुझ से पहले उनके सुपुत्र आदरणीय अनिल शर्मा जी राज्य सभा के सदस्य थे। हम दोनों पीछे वाली सीटों पर बैठा करते थे। वहां पर उनका सैंट्रल हॉल में सप्ताह में दो-तीन बार आना हुआ करता था। वहां पर देश के बड़े-बड़े मंत्री, पत्रकार, सांसद और पूर्व सांसद आया करते थे वे लोग उठ-उठ करके पंडित जी के पास आते थे और हमें गर्व महसूस होता था कि हिमाचल प्रदेश का एक व्यक्ति इस स्थान पर है। उनका नेतृत्व प्रदेश के लिए

10.08.2022/1210/बी.एस./डी0सी0/-2

तो था ही परंतु देश के लिए भी उन्होंने संचार क्रांति के रूप में नाम कमाया है और उससे प्रदेश का नाम सुशोभित हुआ है। उन्होंने काफी उम्र पाई है। आज हमरे बीच उनके सुपुत्र इस माननीय सदन के सदस्य हैं। हम पंडित जी को श्रद्वांजलि अर्पित करते हैं और ईश्वर से प्राथना करते हैं कि उनके परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

आदरणीय रूप सिंह चौहान जी, सिरमौर के शिलाई क्षेत्र से चुन करके आए थे। बाद में डीलिमिटेशन भी हुई। वे ठेठ लोइया पहन करके रहते थे।

श्री एन0 जी0 द्वारा जारी...

10-08-2022/1215/डी.सी.-एन.जी./1

शहरी विकास मंत्री जारी.....

वे मास्टर जी के नाम से ही ज्यादा जाने जाते थे। उनके सदन के व्यवहार के बारे में मुझे ज्यादा मालूम नहीं है लेकिन माननीय श्री शांता कुमार की जी की सरकार में वे राज्य मंत्री के रूप में शामिल हुए थे। वे बहुत ही सौम्य स्वभाव के व्यक्ति थे और ठेठ पहाड़ी तौर पर ही रहते थे। उनका बातचीत करने का तरीका भी ठेठ पहाड़ी ही था। उनके समय में मैं जनता पार्टी का सदस्य था और यूवा मोर्चा का प्रदेश अध्यक्ष था। वे सदन से बाहर मुझे मिला करते थे इसलिए मैं उनसे परिचित था। उन्हें सौम्य स्वभाव व बहुत अच्छे व्यक्तियों में जाना जाता है। जिला सिरमौर और हिमाचल प्रदेश के विकास के लिए उनका बहुत योगदान रहा है। हम सभी उनको आज स्मरण करते हैं और श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

इसी प्रकार से पूर्व सदस्य श्री मस्त राम जी का भी दुःखद निधन हुआ है। किन परिस्थितियों में उनका निधन हुआ उनके बारे में न हम ज्यादा जानते हैं और न मैं ज्यादा अधिक कहने की आवश्यकता महसूस करता हूं क्योंकि उनसे हमारा बहुत ज्यादा परिचय नहीं था। वे जिस समय इस माननीय सदन के सदस्य रहे उस समय हम इस माननीय सदन में नहीं थे। हमने उनके बारे में जो सुना है उसके मुताबिक वे बहुत सौम्य स्वभाव के व्यक्ति थे। वे भी एक टीचर थे और उन्होंने बी.एड की हुई थी। वे अपने इलाके के बहुत पुराने समय के साइंस ग्रेजुएट थे। हम सब उन्हें भी अपने श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं।

अध्यक्ष महोदय, अभी कुछ दिन पहले हमारे परम मित्र श्री प्रवीण शर्मा जी का आक्समिक निधन हो गया। उनके साथ मेरा वर्ष 1971 से सम्बंध रहा है। जब मैं ए.बी.वी.पी. के संगठन मंत्री के रूप में धर्मशाला जाया करता था तब मैं ही उन्हें विद्यार्थी परिषद में लेकर आया था। उनमें कॉलेज समय से ही दबंगता का स्वभाव था। उन्होंने बी.कॉम की पढ़ाई की थी।

10-08-2022/1215/डी.सी.-एन.जी./2

वे उन लोगों में से थे जो आपातकाल के दौरान मीसा के तहत गिरफ्तार हुए थे। मिसा का अर्थ था कि किसी को पकड़ लिया, उसे जेल में बंद कर दिया और फिर वह जेल से बाहर

नहीं आ सकता था। वे आपातकाल का विरोध करने के कारण गिरफ्तार हुए और उन पर डी.आई.आर. (Defence of India Rules) लगाया गया। उन्होंने धर्मशाला कॉलेज के 6-7 विद्यार्थियों के साथ मिलकर सत्याग्रह किया था जिस कारण उन्हें जेल में डाल दिया गया। डी.आई.आर. के तहत जो केसिस बनते थे उनमें मृत्युदण्ड और उम्रकैद की सजा का प्रावधान होता था। वे उन लोगों में से हैं जिन्हें सत्याग्रह करने पर डी.आई.आर. के तहत पकड़ा गया था और वे 14 दिन तक पुलिस रिमांड पर रहे थे। यहां पर जो कानून के जानकार हैं वे सभी जानते हैं कि 14 दिन से अधिक का पुलिस रिमांड नहीं दिया जा सकता और जो बड़े-बड़े अपराधों में सम्मलित लोग होते हैं उन्हें भी दो से पांच दिन का ही रिमांड दिया जाता है। लेकिन वे 14 दिन के पुलिस रिमांड में रहे थे और वह रिमांड आज के समय जैसा नहीं था।

अध्यक्ष महोदय, आप स्वयं अंदाजा लगा सकते हैं कि आपातकाल के समय में पुलिस रिमांड किस प्रकार का हो सकता है। आज के समय में तो मर्डर के अपराधी को भी गिरफ्तार करने पर हथकड़ी नहीं लगा सकते और उस समय तो छोटा सा नारा लगा देने पर या एक पर्चा बांटने पर भी जिसको पकड़ा जाता था उसका जेल में असली रिमांड होता था। उन्हें परीक्षा के लिए जमानत पर जेल से बाहर आना पड़ता था। शिमला विश्वविद्यालय में कईं बार आना-जाना लगा रहता था क्योंकि उनका परिणाम नहीं निकल रहा था

श्री एस.एस. द्वारा जारी.....

10.08.2022/1220/SS-HK/1

शहरी विकास मंत्री क्रमागत :

उसी बीच में सी0आई0डी0 इत्यादि की पता नहीं क्या रिपोर्ट आई, उसके बाद शिमला में उनको दोबारा से गिरफ्तार कर लिया गया। शिमला में भी उनको 14 दिन के पुलिस रिमांड पर रखा गया। क्योंकि उसी वक्त मैं भी गिरफ्तार हुआ था लेकिन मेरे साथ एडवोकेट शब्द जुड़ा हुआ था इसलिए चीफ ज्यूडिशियल मैजिस्ट्रेट श्री सुरेन्द्र प्रकाश जी ने मुझे 7 दिन का

रिमांड दिया, वे अब नहीं रहे हैं। लेकिन उनको पूरे 14 दिन का रिमांड दिया। उसके बाद वे जेल में आए। हम दोनों इकट्ठे जेल में थे। उस वक्त सर्दियों का मौसम था। आधे-आधे चार-चार कम्बल मिलते थे। तो हम दोनों चार कम्बल नीचे डालते थे और चार कम्बल ऊपर ओढ़ते थे तथा दोनों इकट्ठे सोते थे क्योंकि बाहर बर्फ का मौसम होता था। वे उसी जमाने से एक जुझारू व्यक्ति के रूप में जाने जाते थे। ग्रैजुऐशन करने के बाद उन्होंने अपने जीवन में काम करने के लिए बहुत संघर्ष किया। आयुर्वेद की एक छोटी-सी फार्मेसी लगाकर उन्होंने अपना काम प्रारम्भ किया था। उसके बाद माननीय प्रो0 प्रेम कुमार धूमल जी के साथ क्योंकि जब मैं प्रदेश में अध्यक्ष था तो वे युवा मोर्चा के उपाध्यक्ष थे। उन्होंने प्रेम कुमार धूमल जी के साथ हमीरपुर संसदीय क्षेत्र में विशेष रूप से दिन-रात मेहनत की और 1998 में पहली बार वे चिंतपुरनी विधान सभा क्षेत्र से चुनकर आए। जब वे चुनकर आए थे, यहां बताया गया कि 2 मार्च का समय था तो माल रोड पर किस तरह की परिस्थिति थी, उस समय एक दबंग विधायक के रूप में लोगों को उनकी पर्सनैल्टी का आभास हुआ। राजनीति का स्टीक विश्लेषण कैसे करना है उसमें उनको महारथ हासिल थी। इसीलिए वे सबके साथ उसी ढंग से संबंध बनाते थे और काम किया करते थे। जिसके कारण वे दबंग नेता के रूप में जाने जाते थे। यह बिल्कुल ठीक कहा कि विकास के क्षेत्र में जितना काम उन्होंने अपने जीवन में एक चुनाव क्षेत्र में एक टर्म में किया होगा, उतना शायद दूसरा विधायक भी सोच नहीं सकता। लेकिन वे दोबारा विधान सभा में चुनकर नहीं आए। उसके बाद वे अनेक वर्षों तक पार्टी का काम करते रहे। हालांकि वे शुगर के पुराने मरीज हुआ करते थे लेकिन

शायद जो ईश्वर को मंजूर था उस कारण से वे ज्यादा परहेज इत्यादि नहीं रखते थे। इसकी वजह से उनकी किडनी में इफैक्ट हो गया, हार्ट की प्रॉब्लम हो गई। पहले वे पी0जी0आई0 में रहे, उसके बाद जालंधर के हॉस्टिपल में रहे लेकिन उस वक्त भी उनकी भतीजी की शादी थी। उस शादी के लिए वे हॉस्पिटल से जबरदस्ती उठकर आ गए। हालांकि शादी के बीच में ही उनको दोबारा से हॉस्पिटल में दाखिल करना पड़ा। आजकल

वे हमारे हिमुडा के वाइस-चेयरमैन थे। वहां पर उनका बहुत बड़ा योगदान रहता था हालांकि खराब स्वास्थ्य की वजह से उनका काफी अर्से से आना-जाना मुश्किल हो गया था। वे डायलेसिज पर थे। लेकिन डायलेसिज पर रहते हुए भी अगर कोई व्यक्ति उनके पास आ रहा था तो उसके काम के लिए कहना, एक बड़ी बात है। जिस दिन उनकी डैथ हुई थी उसके पहले दिन मुझे उनका टेलीफोन आया था कि मैं किसी व्यक्ति को भेज रहा हूं आपने उसका काम कर देना। उसके दूसरे दिन जब डॉ0 परमार जी की जयंती थी तो हमें मालूम पड़ा कि वे हमारे बीच में नहीं रहे हैं। इसलिए नियति में जो लिखा होता है उसके अनुरूप ही सब कुछ होता है। इस माननीय सदन को सुशोभित करने वाले इन चारों माननीय सदस्यों के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवार को ईश्वर इस सदमे को सहन करने की शक्ति प्रदान करे, ऐसी मैं ईश्वर से कामना करता हूं।

अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे समय दिया, इसके लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

10.08.2022/1220/SS-HK/3

अध्यक्ष : अब माननीय सदस्य श्री रोहित ठाकुर जी शोकोद्गार में भाग लेंगे।

श्री रोहित ठाकुर (जुब्बल-कोटखाई) : अध्यक्ष महोदय, जो माननीय मुख्य मंत्री ने आज इस माननीय सदन में शोकोद्गार प्रस्ताव लाया है, उसमें मैं अपने आपको शामिल करता हूं।

जारी श्रीमती के0एस0

10.08.2022/1225/केएस/एचके/1

श्री रोहित ठाकुर जारी---

गत बजट सत्र के उपरांत इस मॉनसून सैशन के प्रारम्भ होने की अवधि के बीच में प्रदेश के चार महान सपूत हमारे बीच नहीं रहे। अगर हम पंडित सुखराम जी की बात करें तो वे इस प्रदेश के वरिष्ठ नेता थे और हिमाचल की राजनीति में वे हमेशा एक महारथियों की गिनती

में शुमार रहेंगे। निरंतर सात मर्तबा इस माननीय सदन के सदस्य रहे, तीन मर्तबा लोकसभा के सांसद रहे। डॉ0 परमार, ठाकुर राम लाल जी व वीरभद्र सिंह जी सहित सभी के मंत्रिमंडल में उनका एक बहुमूल्य योगदान रहा और केन्द्र में भी उन्होंने विशेष रूप से अपनी छाप छोड़ी है। डिफेंस प्रोडक्शन एंड सप्लाई प्लानिंग के मंत्री रहे, नॉन कन्वेंशनल एनर्जी के केन्द्र में मंत्री रहे। संचार क्रांति के साथ तो हमारे प्रदेश में ही नहीं, समस्त भारतवर्ष में उनका एक नाम जुड़ा है और जैसा मुझसे पूर्व कहा गया, वे धरातल से जुड़े व्यक्ति थे जो शिखर तक पहुंचे। साथ ही साथ यहां पर हमारे जो अन्य माननीय सदस्य हमारे बीच नहीं रहे उनमें रूप सिंह चौहान जी का सम्बन्ध हमारे सिरमौर जिला से था और वर्ष 1977 से पूर्व, परिसीमन से पूर्व जो हमारा रेणुका विधान सभा क्षेत्र है, वह हिमाचल निर्माता डॉ0 यशवंत सिंह परमार जी का विधान सभा क्षेत्र हुआ करता था। वे बहुत ही नेक आदमी थे। इसी तरह से श्री मस्त राम जी भी बहुत ही नेक और सौम्य स्वभाव के व्यक्ति थे। प्रथम बार उन्होंने वर्ष 1982 में कांग्रेस प्रत्याशी के रूप में चुनाव लड़ा था लेकिन उन्हें सफलता नहीं मिल पाई। उसके उपरांत वे वर्ष 1993 और 2003 में इस माननीय सदन के सदस्य रहे। वर्ष 2003 में मैं भी प्रथम बार इस सदन का सदस्य बना था और हम लोग एक ही सीट पर साथ में बैठा करते थे। जिन परिस्थितियों में उनका दुखद निधन हुआ है वह हम सभी के लिए भी एक चिंता का विषय है। इसी तरह से प्रवीण शर्मा जी भारतीय जनता पार्टी के एक वरिष्ठ नेता थे, वे हमारे मंत्री रहे। वर्तमान में भी हाउसिंग बोर्ड के वाइस चेयरमैन थे, उन्होंने भी हिमाचल की राजनीति में अपनी एक अलग छाप छोड़ी है। सभी दिवंगत आत्माओं को प्रभू अपने चरणों में स्थान दें और उनके परिवारजनों को इस दुख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें, यही मेरी कामना है। अध्यक्ष महोदय, आपने समय दिया, आपका धन्यवाद।

10.08.2022/1225/केएस/एचके/2

ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज मंत्रीः माननीय अध्यक्ष जी, आज माननीय सदन के नेता माननीय मुख्य मंत्री जी ने जो शोकोद्गार रखा, मैं उसमें बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं। निश्चित रूप से पिछले सदन और इस सदन के बीच में जो इस माननीय सदन में मंत्री व सदस्य रहे तथा जिन्होंने प्रदेश की राजनीति में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और हिमाचल के विकास को ऊंचाइयों तक ले जाने के लिए काम किया, ऐसे हमारे पूर्व सदस्यों

को हमने खोया है। उनमें से स्वर्गीय सुखराम जी, जिनके बारे में हम बचपन में स्कूल में सुना करते थे, वर्ष 2003 में हमें भी उनके साथ काम करने का मौका मिला। वे इस सदन के और विधान सभा की विभिन्न कमेटियों के सदस्य भी रहे। ऐस्टिमेट कमेटी में हमेशा मैं उनके साथ बैठा करता था। उनके विज़न और उनके अनुभवों के बारे में हम उनसे सुना करते थे। उनका संचार क्रांति के लिए हिमाचल में बड़ा योगदान रहा है। वैसे ही जब वे केन्द्र में मंत्री थे, डिफेंस मिनिस्टर थे, उस समय भी हिमाचल प्रदेश के नौजवानों के कोटे को बढ़ाने में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा।

श्रीमती अ0व0 द्वारा जारी---

10-08-2022/1230/av/yk/1

शोकोद्गार क्रमागत ---------

ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज मंत्री क्रमागत-----

उनके चले जाने से एक बहुत बड़ी कमी महसूस हो रही है।

स्वर्गीय श्री मस्त राम जी के साथ भी हमें वर्ष 2003 से 2007 तक बैठने का मौका मिला है। वे बहुत ही अच्छे, ईमानदार और समाज सेवक थे। उन्होंने अपने जीवनकाल में समाज के उत्थान के लिए बहुत अच्छे कार्य किए। यहां पर अभी जैसे पूर्व वक्ताओं ने भी कहा कि उनकी जिन परिस्थितियों में मौत हुई, वह बहुत बड़ा चिंता का विषय है। हमें प्रदेश की राजनीति में उनकी कमी हमेशा खलेगी।

स्वर्गीय रूप सिंह चौहान जी भी इस सदन के सदस्य रहे हैं। हम यहां पर उनके बारे में जैसे पढ़ और सुन रहे हैं तो वे एक बहुत ही पिछड़े हुए विधान सभा क्षेत्र से निर्वाचित होकर आए थे तथा उन्होंने यहां पर अपने क्षेत्र का प्रतिनिधित्व किया था। वे वर्ष 1977 में प्रदेश सरकार में मंत्री भी रहे। उनके जाने से पूरे प्रदेश और हमें बहुत दुःख हुआ है।

स्वर्गीय श्री प्रवीण शर्मा जी भी हमारे बीच में से अचानक चले गए। उनको एक अच्छे संगठनकर्ता के रूप में जाना जाता है और हमारी पार्टी को उनकी कमी हमेशा खलेगी। उनका वर्ष 1998-2003 के कार्यकाल वाली सरकार में एक प्रशासक के रूप में सराहनीय

योगदान रहा। उस समय उन्होंने जिला ऊना के लिए बहुत कुछ करके वहां पर विकास की गति को तेज किया था। उस समय खेल मंत्री के नाते उन्होंने यहां पर खेल गतिविधियों को आगे बढ़ाने का काम किया था। आज भी चिन्तपुरनी विधान सभा के लोग उस समय के उनके द्वारा किए गए विकास कार्यों को याद करते हैं। मैं यह समझता हूं कि ऊना जिला के साथ-साथ हमारी पार्टी और हमें उनकी कमी हमेशा महसूस होती रहेगी। ये सारी दिवंगत आत्माएं जो कभी इस सदन की हिस्सा हुआ करती थीं और आज हमारे बीच में नहीं हैं, मैं उन सबके लिए अपने श्रद्धा के सुमन अर्पित करता हूं। साथ में, ईश्वर से यही प्रार्थना करता हूं कि उन सबके परिवारों को इनके जाने से हुए दुःख को सहने की क्षमता प्रदान करें। ऊँ शांति।

10-08-22/1230/अ0व0/वाई0के0/2

श्री विनय कुमार (श्री रेणुकाजी) : अध्यक्ष महोदय, मैं भी अपने आपको माननीय मुख्य मंत्री जी द्वारा लाए गए शोकोद्गार में शामिल करता हूं। स्वर्गीय पं0 सुख राम जी इस सदन के अंदर और केंद्र सरकार में समय-समय पर कई पदों पर आसीन रहे। आज भी उनको इस प्रदेश के साथ-साथ पूरे देश में संचार क्रांति के लिए जाना जाता है। मैं उनके चरणों में श्रद्धा के सुमन अर्पित करता हूं।

स्वर्गीय श्री रूप सिंह चौहान मेरे ही विधान सभा क्षेत्र से संबंद्ध रखते थे। मैं बताना चाहूंगा कि डॉ0 वाई0एस0परमार जी के बाद श्री रूप सिंह चौहान जी ने वर्ष 1977 में जनता पार्टी से चुनाव लड़ा और उसके बाद वर्ष 1980 में उन्होंने कांग्रेस पार्टी को ज्वाईन किया था। वे वर्ष 1980 तक स्टेट मिनिस्टर रहे। इसके अतिरिक्त वर्ष 1981 से 1984 तक वे हाउसिंग बोर्ड के चेयरमैन रहे।

टी सी द्वारा जारी

10.08.2022/1235/TCV/YK/1

शोकोद्गार ..... जारी
श्री विनय कुमार ..... जारी

इनको सिरमौर में मास्टर जी के नाम से जाना जाता था। वर्ष 1947 से वर्ष 1977 तक इन्होंने जे0बी0टी0 अध्यापक के रूप में सेवाएं दी। मुझे कई बार इनके साथ बातचीत करने का मौका मिला। ये विशेषतौर पर नौहराधार में स्कूल के फंक्शन में अपनी उपस्थिति जरूर दर्ज करवाते थे। ये हमेशा बस में ट्रैवल करते थे और इनकी एक खासियत थी कि ये सीट न0 1 पर ही बैठा करते थे। जब भी ये फ्रंट सीट पर बैठते थे तो इनका फेस हमेशा बस में बैठी सवारियों की तरफ होता था और ये सबको अट्रैक्ट करते थे। इनका जिन लोगों से परिचय नहीं भी होता था, ये उनसे भी जान-पहचान कर लेते थे और सभी से हंसकर बात करते थे तथा यह अहसास दिलाने की कोशिश करते थे कि मास्टर रूप सिंह जी इस बस में बैठे हुए हैं। इनका निधन 95 वर्ष की आयु में हुआ और पिछले पांच सालों से इनकी याददाश्त बिल्कुल चली गई थी। जब घर वाले अपने काम में व्यस्त होते थे तो कई बार ये घर से भाग जाते थे और फिर इनको ढूंढने इधर-उधर जाना पड़ता था। कई बार मैं भी इनसे मिलने गया तो ये मुझे नहीं पहचान पाये। इनका निधन 29 मई, 2022 को हुआ। उन्होंने रेणुका चुनाव क्षेत्र के लिए बहुत-सारे कार्य किए। उनकी सोच बहुत लम्बी थी और जब भी हमसे मिलते थे तो जिक्र किया करते थे कि हमने सोचा था कि यहां सीनियर सेकेंडरी स्कूल होगा या यहां के लिए सड़क होगी। वे हमेशा विकास की बात किया करते थे। मैं इनके चरणों में श्रद्धासुमन अर्पित करता हूं।

10.08.2022/1235/TCV/YK/2

अध्यक्ष महोदय, मुझे पिछले उप-चुनाव में श्री मस्त राम जी के साथ रहने का मौका मिला। मैं इनके साथ करसोग विधान सभा चुनाव क्षेत्र में रहा। वे हमेशा मेरे साथ प्रचार करने जाया करते थे। वे सुबह जल्दी आ जाते थे और दिनभर हमारे साथ रहते थे। वे हमेशा करसोग विधान सभा क्षेत्र के विकास की बात किया करते थे। जिन परिस्थिति में उनके मृत्यु हुई, यह घटना सुनकर मुझे बहुत दुःख हुआ। मैं उनके लिए भी श्रद्धासुमन अर्पित करता हूं।

माननीय सदस्य श्री प्रवीण शर्मा जी के साथ मुझे उन दिनों विधान सभा में रहने का मौका मिला जब मेरे स्वर्गीय पिता डॉ0 प्रेम सिंह जी इस माननीय सदन के सदस्य थे लेकिन मेरा इनसे ज्यादा मिलना-जुलना नहीं रहा।

अध्यक्ष महोदय, मैं स्वर्गीय, सर्वश्री सुख राम जी,रूप सिंह जी, प्रवीण शर्मा जी और मस्त राम जी के लिए ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि दिवंगत आत्माओं को शांति प्रदान करें और इनके परिवारों को इस दुःख को सहने करने की शक्ति प्रदान करें।

अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे समय दिया, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

10.08.2022/1235/TCV/YK/3

अध्यक्ष : अब वन मंत्री जी अपने शोकोद्गार व्यक्त करेंगे।

Forest Minister : Hon'ble Speaker, Sir, I would also like to participate in the Condolence Resolution moved by the Hon'ble Chief Minister, Shri Jai Ram Thakur Ji. श्री सुखराम जी, श्री रूप सिंह चौहान जी, श्री मस्त राम जी और श्री प्रवीण शर्मा जी में से रूप सिंह चौहान और मस्त राम जी के साथ हमारा ज्यादा मिलना-जुलना नहीं हुआ। I have had the honour to serve a term with late Shri Sukh Ram Ji, वर्ष 1998 में जब हम पहली बार जीत कर आए थे। जैसा श्री महेन्द्र सिंह ठाकुर जी बता रहे हैं कि 2 मार्च से 14-15 दिन तक जो संघर्ष शुरू हुआ उस समय हम भी एक नौजवान विधायक के रूप में चुनकर आए थे उन दिनों श्री सुख राम जी के साथ हमारा काफी उठना-बैठना हुआ करता था। बाद में ये हमारी सरकार में लोक निर्माण मंत्री भी बने। ये मुझे बेटे की तरह ट्रीट करते थे और जब भी हम इनके साथ बैठते थे तो कुछ-न-कुछ सीखने को मिलता

एन0एस0 द्वारा ... जारी

10-08-2022/1240/NS/AG/1

शोकोद्गार ..... जारी

वन मंत्री ..... जारी

एज ए कम्युनिकेशन मिनिस्टर आज भी हिमाचल का नाम पूरे नेशनल मैप पर लेकर आए। मुझे याद है, जब मैं यंग हुआ करता था और मैंने मण्डी में एक नौकरी ज्वाइन की तो उस समय चुनाव था तथा मैं अकेला एक ऐसा व्यक्ति होता था जो अपने मोटर साइकिल पर बी0जे0पी0 का झंडा लगा कर घूमा करता था। मुझे एक मेडिकल शोप वाले ने बताया और वार्न किया कि आप यह झंडा खोल लो और मण्डी में यह झंडा लगा कर घूमना ठीक नहीं है। मुझे आज भी वह दिन याद है जब उन्होंने नोमिनेशन भरी तो उस समय पूरा मण्डी शहर लाइटों से सजा हुआ था। हर घर में लाइट लगी हुई थी। तब मैं एक नौजवान था और I used to wonder कि यह क्या शख्सियत हुई कि कल नोमिनेशन हो रही है और पूरे शहर के एक-एक घर में लाइट लगी हुई है।

बाद में मुझे उनके साथ पूरे एक टर्म में काम करने का मौका मिला। तभी मैंने आपको कहा था कि that I was honoured to work with him for one term. बहुत बड़ा नाम, बहुत बड़ी शख्सियत और हिमाचल प्रदेश को बहुत बड़ा नुकसान हुआ है।

अध्यक्ष महोदय, श्री रूप सिंह जी, श्री मस्त राम जी के साथ मेरी इतनी जान पहचान नहीं थी लेकिन श्री प्रवीण शर्मा was a family member. वर्ष 1998 में जब पहली बार उनके साथ आए और महेन्द्र सिंह जी ने जो घटना बताई। विधायक दल की बैठक रात को 11.00 बजे खत्म हुई और ध्वाला जी के पास जाना था तथा इस बैठक में कुछ तय नहीं हो पाया कि क्या करना है, कैसे करना है और कौन जाएगा? अचानक 12.30 बजे इन्होंने मेरे कमरे का दरवाजा खटखटाया और कहा कि आप तैयार हो जाओ हमने अभी चौपाल जाना है। मैंने कहा अभी पंडित जी रात के 12.45 बज रहे हैं। इस पर उन्होंने कहा कुछ नहीं बाहर गाड़ी खड़ी है और हम दोनों चलेंगे। उस समय बाहर बर्फ पड़ रही थी और हमने मारूति 800 गाड़ी स्टार्ट की। इनकी दिलेरी देखिए कि रात को हम चौपाल गए और मैं जिंदगी में पहली बार चौपाल गया। उस विश्राम गृह के अंदर जाना और जिस कमरे में ये सोए हुए थे तो

10-08-2022/1240/NS/AG/2

इनके बिस्तरे के नीचे भी 10 लोग सोए हुए थे। ये तो सोए हुए थे और उस डबल बैड पर तीन आदमी सोए हुए थे। उन आदमियों को लांघ कर जाना, इनको उठाना और उठा कर बाथरूम में ले जाना तथा वहां पर इनसे एफिडेविट साइन करवाना व हैंडीकैम से रिकॉर्डिंग करना कि मेरे जीवन को सुरक्षा नहीं है और मेरी जान जा सकती है। वापिस आते समय रातों रात हमारे पीछे गाड़ियां लगीं और जिस तरीके से वापिस पहुंचे तथा सुबह अडवाणी जी को सारा हाल बताया क्योंकि वे उस समय केंद्र सरकार में गृह मंत्री हुआ करते थे तब ये मामला फ्लैश हुआ और इनको वहां से निकाला गया। मुझे आज तक वह रात नहीं भूलती है कि किस तरीके से हम रात को 1.00 बजे बर्फ पड़ रही हो और मारूति कार में चौपाल जाकर इन्हें उठाना हो। ऐसे बहुत सी घटनाएं हैं। वे युवा सेवाएं एवं खेल मंत्री बने और बाद में उनको आबकारी एवं कराधान विभाग भी मिला। उस समय जय राम जी , मैं और प्रवीण जी भी पहली बार जीत कर आए थे। जैसे मुख्य मंत्री जी बता रहे हैं कि he was an ideal. आज सुबह ये पांच विधायक नाश्ता करेंगे, आज ये पांच लोग दोपहर का खाना खाएंगे और रात को ये 10 लोग across the Party lines डिनर करेंगे, आज इस सदन में माननीय चंद्र कुमार जी नहीं हैं और राम लाल ठाकुर जी बाहर बैठे हैं। वर्ष 1998 में हम सब लोग रात को आम भोज किया करते थे और हमारा फेवरिट ठिकाना एच0एच0एच0 हुआ करता था तथा सब लोग इकट्ठे बैठते थे। इसमें बाली जी, राम लाल ठाकुर जी, चंद्र कुमार जी रेग्युलर होते थे। वहां पर पार्टी लाइन्ज के साथ कोई नहीं होता था। वहां सिर्फ एक ही पार्टी होती थी कि सभी विधायक हैं। यह एक परिवार है और हमने इस परिवार के साथ शाम को बैठना है। मुझे याद है कि वे मुकेश जी के बहुत मित्र हुआ करते थे और हम आपके घर में कई बार जाया करते थे जब आप पत्रकार होते थे तथा आपको यहां पर एक घर होता था, वहां पर जाना और आपस में बातचीत करनी तथा एक ऐसा माहौल क्रिएट करना कि वहां पर सबको अपनापन महसूस हो। आज हम उससे बहुत दूर चले गए हैं और हम आज प्रवीण जी को इस मामले में बहुत याद करते हैं।

श्री आर0 के0 एस0 द्वारा जारी।

10.08.2022/1245/RKS/AG-1

शोकोद्गार... जारी

वन मंत्री... जारी

उस दिन प्रातः 6.45 बजे उनके छोटे भाई का मैसेज आया कि स्वर्गीय श्री प्रवीण शर्मा जी आज उठ नहीं पाए। वे रात 1.30 बजे तक अपने मोबाइल में सोशल मीडिया पर एक्टिव रहे। जो लड़का उनकी सेवा करता था उसने उन्हें कहा कि अब बहुत रात हो गई है और आप सो जाओ। उसने कहा कि उस रात उन्होंने मुझे बुलाया और कहा कि अपना सिर नीचे करो और फिर मेरे सिर में दोनों हाथ रखकर आशीर्वाद देने लगे। उसके बाद उन्होंने मुझे एक बर्फी का पीस लाने के लिए कहा और यह भी कहा कि इसका पता आपकी भाभी को नहीं चलना चाहिए। जब मैं बर्फी का एक छोटा-सा पीस लेकर उनके पास गया तो उन्होंने कहा कि आप एक बड़ा पीस लाइए। फिर उन्होंने उस बड़े पीस को खाने में 10 मिनट लगाए। He relished that last piece of his sweet. क्योंकि मिठाई उनकी बहुत बड़ी कमजोरी थी। उन्होंने उस लड़के को आशीर्वाद दिया और कहा कि बेटा बहुत मजा आया। जब वही लड़का प्रातः 5.45 बजे उन्हें शुगर की दवाई देने गया तो वे उठ नहीं पाए और वे इस संसार को छोड़ गए थे। जब मुझे उनकी मृत्यु का समाचार मिला तो मैंने सबसे पहले माननीय मुख्य मंत्री को इसकी सूचना दी। मैं और श्री विरेन्द्र कंवर जी उनकी अंतिम यात्रा में पूरा दिन उनके साथ रहे। उनकी अंतिम यात्रा में आंसूओं का सैलाब बह गया। वे सबको साथ लेकर चलते थे। जब मेरे घर में बेटी पैदा हुई तो उस समय स्वर्गीय श्री प्रवीण शर्मा जी ने मेरी बेटी का नामकरण एवं सारी पूजा-अर्चना अपने हाथों से की। वे मेरे लिए सगे भाई की तरह थे। He was to be involved in everything. जब मेरे पिता जी का देहांत हुआ तो उस समय भी वे मेरे साथ थे। वे एक सामाजिक व्यक्ति थे और मुझे ऐसा लग रहा है कि जैसे मेरे सगे भाई का देहांत हुआ हो। वर्ष 1998 में हमने जो उनसे नैतिकता और विधायक फर्टिनिटी का रिश्ता सीखा है it is an example for any MLA to be coming in the coming years. वह आने वाले विधायकों के लिए भी एक उदाहरण होगा। स्वर्गीय पंडित सुख राम जी एवं प्रवीण शर्मा जी दोनों अपने आप में एक अद्वितीय व्यक्तित्व के स्वामी थे। हिमाचल प्रदेश को इन दोनों शख्सियत के जाने से काफी नुकसान हुआ है और मेरे लिए यह एक पर्सनल लॉस है। इससे पहले की मैं अपनी बात को समाप्त करूं मैं माननीय मुकेश अग्निहोत्री जी की बात को भी आपके समक्ष रखना चाहूंगा। आपने कहा कि जब उनसे कोई डी.ओ. साइन करवाने के लिए आया था तो उस वक्त मैं उनके साथ ही था। हम उस समय

भरवाईं में किराये के मकान में रहते थे। उन्हें उस समय appendicitis का अटैक पड़ा था और हम उन्हें मंजी में डालकर अस्पताल ले जा रहे थे। वे बड़ी भयंकर पीड़ा में थे और उनकी दोनों आंखों से पानी बह रहा था। उनका एक रिश्तेदार जो बिजली बोर्ड में जे.ई. था अपना डी.ओ. साइन करवाने के लिए उनके पास आया था। उसने उनसे कहा कि आप अस्पताल से आएंगे या नहीं लेकिन आप मेरा डी.ओ. साइन कर दो। उन्हें लेटे-लेटे इतना गुस्सा आया और मुझे कहा कि पठानिया जी अपनी जूती खोलकर इसके सिर में चार मारो। मैं उस दृश्य को कभी जिंदगी में नहीं भूल सकता। उनसे हिला नहीं जा रहा था अगर वे हिल जाते तो अपने आप ही उसके सिर में जूती मार देते। वे हमेशा यह कहा करते थे कि राजनीति में कोई पता नहीं कब क्या हो जाए लेकिन आपको अपने लिए जरूर समय निकालना चाहिए।

अध्यक्ष जी आपने मुझे बोलने का समय दिया, आपका धन्यवाद।

10.08.2022/1245/RKS/AG-3

अध्यक्ष : अब माननीय सदस्य डॉ. (कर्नल) धनी राम शांडिल जी शोकोद्गार में भाग लेंगे।

डॉ. (कर्नल) धनी राम शांडिल : अध्यक्ष महोदय, माननीय मुख्य मंत्री एवं नेता प्रतिपक्ष जी ने जो शोकोद्गार प्रस्तुत किए हैं , उनमें मैं भी अपने आपको शामिल करता हूं। सदन के नेता ने ठीक कहा कि जो इस संसार में आया है उसे एक दिन जाना ही है लेकिन वे अपना इतिहास और अपनी कार्य-प्रणाली का तरीका यहां छोड़कर जाते हैं। My first encounter with any political leader in the year 1999 was with Pandit Sukh Ramji. I found in him that he was a great visionary leader with great insight into the problems of the area, particularly, Himachal. No wonder, he was pioneer in the communication field. उन्हें संचार क्रांति का मसीहा कहा जाता था।

श्री बी.एस. द्वारा जारी

10.08.2022/1250/बी.एस./ए0एस0/-1

डॉ0 (कर्नल) धनी राम शॉंडिल जारी...

चार प्रांतों का मसीहा बना करके उन्हें एक बहुत ही उपयुक्त सम्मान मिला है। अभी इस वक्त उन में से तीन उधर हैं। Panditji was very clear on one thing की जो कुछ भी काम करना हो उसकी एक रूपरेखा होनी चाहिए and with a set programme it should be done. There was something very good because he had been a Minister of State for Defence Production and somehow we had a very good relationship with that great man. जिनके प्रति संवेदना प्रकट की जा रही है, उन्होंने देश व प्रदेश के विकास में अपना बहुमूल्य योगदान दिया है। मुझे भी उस समय स्वर्गीय पंडित सुखराम जी व खास कर ठाकुर महेन्द्र सिंह जी के द्वारा बताया गया था कि किस प्रकार चुनाव लड़े जाते हैं because Shri Mahender Singh was very deeply involved in that exercise. I would also like to say in this august House that such a vibrant and committed workers should always remain an inspiration for any party. श्री महेन्द्र सिंह जी को सेना के काम करने का ढंग भी आता है। इन्होंने इस प्रकार की कार्यप्रणामी बताई जो कारगर सिद्ध हुइ, क्योंकि हम एक ही रेजिमेंट के हैं ये मुझसे थोड़े समय पहले सेवानिवृत्त होकर आ गये थे मैं इनसे थोड़े समय बाद रिटायर हुआ। I put it on record that जो इनका अतुल्य योगदान था उसे मैं कभी नहीं भूलूंगा। पंडित सुख राम जी के काम करने का जो तरीका था that was very efficient for the State. वह कहा करते थे कि अगर हमें युवाओं की बेरोजगारी समाप्त करनी है तो हमें स्वीटरलैंड की लाईन पर काम करना होगा। वहां के गांव में हर छोटे-छोटे कॉटिजिज को एक सेट कार्यक्रम के अन्तर्गत काम दे दिया जाता है। वे घड़ियों या किसी अन्य उपकरणों के पूर्जे बनाते हैं। वो कहते थे इस प्रदेश में, जहां वातावरण को संरक्षित रखना है, तो इस प्रकार की तकनीक हमें भी अपनानी चाहिए and in so many other fields like Hydro, he had countless ideas and suggestions. If I recollect those memories, I think they were very valuable suggestions for us. पूर्व मंत्री

10.08.2022/1250/बी.एस./ए0एस0/-2

श्री प्रवीण शर्मा जी, हमारे पूर्व विधायक और श्री मस्त राम जी, अच्छे समाज सेवी थे। माननीय वन मंत्री, श्री राकेश पठानिया जी ने सही कहा कि Late Shri Praveen Sharma had a very brave face and he was very fond of his moustache और इन मूंछों के साथ उनका एक ब्रेव फेस दिखता था। There was no doubt in it that स्वर्गीय श्री प्रवीण शार्मा जी जो भी बात कहते थे वह बड़ी स्पष्टता से कह देते थे। मुझे अभी-अभी श्री विनय कुमार जी के द्वारा स्वर्गीय श्री रूप सिंह जी बारे में बताया गया मैं उनके बारे में कुछ कहना चाहूंगा। मेरे वक्त में वे मंत्री तो नहीं थे परंतु जब मैं नौराधार के इलाके में गया तो वे हमें बहुत अच्छी तरह से अनेक स्थानों में ले जाते थे और कभी जब लड़ाई हो जाती थी तो वे कहते थे कि लड़ाई बंद करो और फिर वे हलवा बनवाते थे और सबको हलवा खाने के लिए कहते थे। So I pay my condolences to all these icons of our State. प्रभु को याद करते हुए मैं उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित करता हूं, ईश्वर उनके परिवार को इस दु:ख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें। धन्यवाद।

10.08.2022/1250/बी.एस./ए0एस0/-3

अध्यक्ष : अब आदरणीय राजीव बिन्दल जी शोकोद्गार में भाग लेंगे।

श्री राजीव बिन्दल (नाहन) : अध्यक्ष महोदय, मुख्य मंत्री जी ने इस सदन में जो शोकोद्गार प्रस्तुत किए हैं, मैं भी अपने आप को उसमें शामिल करता हूं। स्वर्गीय पंडित सुख राम जी, स्वर्गीय रूप सिंह चौहान जी, स्वर्गीय मस्त राम जी और स्वर्गीय प्रवीण शर्मा जी। इन चारों दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए प्रभु के श्री चरणों में प्रार्थना करता हूं। पंडित सुख राम जी के व्यक्तित्व के बारे में यहां पर विस्तार से चर्चा हुई है। पूरा प्रदेश उनकी राजनीतिक और सामाजिक गतिविधियों से परिचित है।

श्री एन0 जी0 द्वारा जारी...

10-08-2022/1255/ए.एस.-एन.जी./1

डॉ0 राजीव बिन्दल जारी.....

वर्ष 1998 से वर्ष 2003 के मध्य उनके साथ कुछ समय रहने व बहुत कुछ सीखने का अवसर हमें प्राप्त हुआ था। उस समय भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनाने में उनकी बहुत बड़ी भूमिका रही थी। मैं उन्हें विनम्र भाव से श्रद्धासुमन अर्पित करता हूं।

अध्यक्ष महोदय, पूर्व सदस्य स्वर्गीय श्री प्रवीण शर्मा जी के साथ मेरा बहुत गहरा व्यक्तिगत लगाव रहा है। मुझे लम्बे समय तक उनके साथ काम करने का अवसर मिला। मेरे पहले चुनाव के समय उन्होंने बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। उसके बाद से लगातार हम उनके साथ बैठकर अनेक विषयों पर चर्चा करते रहे और उनसे सीखते रहे। आज वे हमारे मध्य नहीं हैं और उनके जीवन के अनेकाएक संस्मरण हमारे मनस पटल पर अंकित हैं। वर्ष 2003 के बाद उन्हें इस माननीय सदन में आने का अवसर नहीं मिल पाया लेकिन उनके चहरे पर कभी कोई शिंकन देखने को नहीं मिली। उन्होंने कभी भी अपनी पार्टी के साथ यह शिकवा नहीं किया कि मुझे इस माननीय सदन में दोबारा भेजने का प्रयास नहीं किया गया। वे अलग ही प्रकार की प्रतिभा के धनी थे। उनके बारे में बहुत कुछ विस्तार से कहा जा सकता है लेकिन चंद शब्दों में कहना चाहूंगा कि वे राजनीति क्षेत्र में extraordinary personality थे। एक अलग प्रकार की प्रतिभा को रखने वाले व्यक्ति आज हमारे बीच में नहीं हैं। दिवंगत आत्मा के श्रीचरणों में नमन करते हुए उनके परिवार के प्रति संवेदनाएं व्यक्त करता हूं। राजनीतिक क्षेत्र में उनके योगदान की मैं भूरी-भूरी प्रशंसा करता हूं। इन्हीं शब्दों के साथ आपनी बात को समाप्त करता हूं और अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे समय दिया आपका आभार।

समाप्त/-

10-08-2022/1255/ए.एस.-एन.जी./2

अध्यक्ष : अब माननीय सदस्य श्री राकेश सिंघा जी शोकोद्गार में भाग लेंगे।

श्री राकेश सिंघा (ठियोग) : अध्यक्ष महोदय, मुख्य मंत्री जी ने इस माननीय सदन में जो शोकोद्गार प्रस्तुत किया है उसमें मैं भी अपने आप को शामिल करता हूं। मैं उन सभी पूर्व सदस्यों, जो हमारे मध्य नहीं रहे, को श्रद्धांजलि प्रकट करना चाहता हूं। स्वर्गीय श्री सुख राम जी का देश व हिमाचल प्रदेश के लिए बहुत योगदान रहा है। आज वे इस दुनिया में नहीं हैं तो बहुत दुःख होता है और मैं उनके योगदान को रिकॉर्ड करना चाहता हूं।

अध्यक्ष महोदय, मेरा मानना है कि चुन कर तो बहुत लोग आते हैं लेकिन श्री सुख राम जी रियल सेंस में एक पॉलिटिकल साइंटिस्ट थे। एक पॉलिटिकल साइंटिस्ट होने के नाते वे अपने अंदर राजनीतिक स्थिति का सटीक विश्लेषण करने की क्षमता रखते थे। मुझे आज भी याद है कि वर्ष 1998 में भाजपा के साथ जो गठबंधन बनाया गया था और वर्ष 2003 में उसमें कुछ खटास पैदा हो गई थी। वर्ष 2003 में अगले चुनाव की तैयारियां हो रही थी

श्री एस.एस. द्वारा जारी.....

10.08.2022/1300/SS-DC/1

श्री राकेश सिंघा क्रमागत :

तो बहुत-सी विपक्षी पार्टियों की बैठक परवाणू के सर्किट हाउस में हुई थी। मैं भी उसमें शामिल था और पंडित सुखराम जी भी उसमें शामिल थे। लेकिन मैं कह रहा हूं कि उनकी जो क्षमता एनालाइज करने की थी वह बहुत गहरी थी। जब उनसे आग्रह किया गया कि हिमाचल प्रदेश में चुनाव से पहले जो नया गठबंधन बनना है उसमें वे लीड करें। उनकी

दूर-दृष्टि में उनके जो स्पष्ट विचार थे उसके तहत उन्होंने कहा कि मैं पिछला पांव तब उठाऊंगा जब अगला पांव रखने की गुंजाइश मुझे मिलेगी। अभी मुझे लग रहा है कि ऐसा विकल्प बन नहीं पाएगा और सबको शुभ-कामनाएं दीं तथा जो एक विकल्प बनाने का प्रयत्न राजनीतिक चुनाव से पहले किया जा रहा था वह उस समय सफल नहीं हो पाया। यह क्षमता पंडित सुखराम जी में ही थी, और मैं भी होगी लेकिन वे रियल सैंस में एक राजनीतिक वैज्ञानिक रहे हैं। यह बात सही है। वे हिमाचल प्रदेश के मुख्य मंत्री नहीं बन पाए। लेकिन उनकी कंट्रीब्यूशन बहुत डीप रही है। वे गुण अनिल जी में हैं, इसके बारे में मैं कह नहीं सकता हूं। लेकिन उनके गुणों से सबको सबक लेने की कोशिश करनी चाहिए। हिमाचल प्रदेश के समूचे विकास के लिए जो उनका योगदान रहा है उसमें हमारी भी कोशिश होनी चाहिए कि हिमाचल प्रदेश आगे जाए। 1977 में जिस समय जनता पार्टी बनी थी, मास्टर रूप सिंह जी जीत कर आए थे और मैं समझता हूं कि उस समय शायद सिरमौर जिले से एक ही सीट कांग्रेस पार्टी की आई थी। जो जनता पार्टी के उस समय के अलग-अलग घटक थे उसमें से शायद तीन बाद में जनता पार्टी में रहे थे। श्यामा जी थीं, मास्टर रूप सिंह जी थे और शायद एक अन्य विधायक उसमें रहे हैं। वैसे सीधा मौका तो नहीं मिला लेकिन उस दौरान उनके साथ छात्र जीवन में इकट्ठे रहते थे। श्यामा जी हमारे लिए उस समय आदर्श थीं क्योंकि उन्होंने इमरजैंसी में बहुत संघर्ष किया। खोदरी-माजरी का बहुत बड़ा आंदोलन भी चला। उस समय एक मीटिंग में उनके साथ बैठने का मुझे एक मौका जरूर मिला। लेकिन मैं उनके अस्तित्व/व्यक्तित्व को बहुत समझ नहीं पाया।

10.08.2022/1300/SS-DC/2

श्री प्रवीण शर्मा जी ने प्रो0 प्रेम कुमार धूमल जी की कैबिनेट में एक महत्वपूर्ण रोल अदा किया। मैं ओ0एस0डी0 का दर्जा तो कह नहीं सकता लेकिन वे धूमल जी की सरकार में महत्वपूर्ण कार्य करते थे। नजदीकी से मैं प्रवीण जी को नहीं जानता था लेकिन जैसे सबने यहां ज़िक्र किया कि उन्होंने एक गहरी छाप हिमाचल प्रदेश की राजनीति में छोड़ी है। वे बहुत बोल्ड डिसीजन लेने की क्षमता रखते थे। विपरीत परिस्थिति में भी वे बहुत धाकड़

तरीके से खड़े रहते थे। मैं समझता हूं कि ऐसे गुण हर फाइटर के अंदर होने चाहिएं क्योंकि राजनीति में कब क्या हो, हिम्मत से ही आदमी आगे बढ़ सकता है। ऐसी क्वालिटी श्री प्रवीण जी में थी। 1993 में मैं चुनकर आया था तो मस्तराम जी पहली दफ़ा चुनकर आए थे। हमारी सीट इकट्ठी थी और मुझे उस दिन बहुत दुख हुआ जिस दिन यह खबर आई कि किस तरीके से वे इस दुनिया को छोड़कर गए हैं, मैं समझता हूं कि ऐसा किसी के साथ नहीं होना चाहिए लेकिन यह सच्चाई है। चाहे इस सदन के सदस्य हैं, चाहे इस सदन के बाहर लोग हैं आज की तारीख में जो समाज की टेंशन, दर्द या पीड़ा हैं वह इतनी अधिक होती है कि कई दफ़ा हम बड़े-बड़े आंदोलनों में आगे बढ़ जाते हैं, मुकाबला कर लेते हैं लेकिन ये जो

जारी श्रीमती के0एस0

10.08.2022/1305/केएस/डीसी/1

श्री राकेश सिंघा जारी---

जिंदगी में कभी एक घड़ी, एक क्षण ऐसा आ जाता है जिसका हम मुकाबला नहीं कर पाते और हार मान जाते हैं। उस हार के अंदर जब ऐसा कदम उठाया जाता है तो आदमी सोचने के लिए मज़बूर हो जाता है कि ऐसी क्या परिस्थिति रही होगी जिसमें किसी व्यक्ति को आत्महत्या करनी पड़ी। अध्यक्ष महोदय, इन सभी सदस्यों के प्रति मैं दिल की गहराइयों से अपनी श्रद्धांजलि प्रकट करता हूं। आपने मौका दिया, मैं आपका शुक्रगुज़ार हूं।

10.08.2022/1305/केएस/डीसी/2

अध्यक्षः दोपहर के भोजन का समय हो गया है और अभी पांच-छः सदस्यों ने शोकोद्गार में और भाग लेना है जिनको बोलने के लिए समय भी लगेगा तो क्या इस चर्चा को जारी रखें या भोजनावकाश के उपरांत शुरू करें?

अभी शोकोद्गार में बोलने वाले लगभग 6 माननीय सदस्य और हैं। मेरा सभी माननीय सदस्यों से आग्रह रहेगा कि काफी बातें बार-बार रिपीट हो रही है। कृपया शोकोद्गार की भावना से ही अपना वक्तव्य यहां पर रखें। भोजनावकाश का समय हो गया है और पूरे सदन की अनुमति भी है कि भोजनावकाश के उपरांत ठीक दो बजे सत्र पुनः शुरू हो।

अब इस माननीय सदन की बैठक दोपहर के भोजन के लिए अपराह्न 2.00 बजे तक स्थगित की जाती है।

10-08-2022/1410/av/hk/1

माननीय सदन की कार्यवाही दोपहर के भोजनोपरांत 02.10 बजे(अपराह्न) पुनः आरम्भ हुई।

अध्यक्ष : अब माननीय सदस्य श्री बलबीर सिंह जी शोकोद्गार में भाग लेंगे।

श्री बलबीर सिंह (चिन्तपुरनी) : अध्यक्ष महोदय, इस सदन के नेता माननीय मुख्य मंत्री जी आज जिन चार दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए प्रस्ताव लेकर आए हैं, उसमें मैं भी कुछ शब्द जोड़ना चाहता हूं।

स्वर्गीय पं0 सुख राम जी का नाम राजनीतिक इतिहास में एक चमकते हुए सितारे के रूप में आंका जाएगा। मैं यह बात भी मानता हूं कि उन्होंने प्रदेश में तो सेवा की ही परंतु देश में भी सेवा की है। केंद्र में मंत्री रहते हुए उन्होंने जो संचार क्रांति लाई, उसके संदर्भ में मैं केवल अपने प्रदेश की बात करना चाहता हूं। उस संचार क्रांति के कारण पंडित जी को हिमाचल को 50 साल आगे ले जाने का श्रेय जाता है। अगर वे हिमाचल प्रदेश से संबंद्ध न रखते होते तो शायद आज हिमाचल की तस्वीर ऐसी नहीं होनी थी। प्रदेश में रहकर भी उन्होंने राज्य और पार्टी को अपनी सेवाएं दी हैं। मैं उनकी सेवाओं की जहां भूरि-भूरि प्रशंसा करता हूं वहीं हमें उनका स्वर्गवास हो जाने का दुःख है। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि उन्हें पुनः अपने चरणों में लीन करे और उनकी आत्मा को शांति प्रदान करे।

स्वर्गीय श्री रूप से चौहान जी और श्री मस्त राम जी ने भी अपने कार्यकाल में जो प्रदेश के विकास के लिए कार्य किए, वे भी सराहनीय रहे हैं। आज इस माननीय सदन में बहुत सारे वक्ताओं ने अपनी-अपनी बात रखते हुए कहा है कि उन्होंने भी अपने-अपने वक्त में समाज के विकास के लिए अच्छे कार्य किए और समाज के साथ जुड़े रहें।

स्वर्गीय श्री प्रवीण शर्मा जी जिला ऊना के चिन्तपुरनी विधान सभा क्षेत्र से संबंद्ध रखते थे। उन्होंने वर्ष 1998 से वर्ष 2003 तक चिन्तपुरनी विधान सभा क्षेत्र का प्रतिनिधित्व किया। प्रदेश में राज्य मंत्री के रूप में उन्होंने अपनी सेवाएं दीं। मैं हमेशा

10-08-22/1410/अ0व0/एच0के0/2

उनके साथ बड़ी नजदीकी से जुड़ा रहा। वर्ष 2002 में मैंने पार्टी में जब सक्रिय रूप से हिस्सा लिया तो आदरणीय श्री प्रवीण शर्मा जी मेरे मार्गदर्शक भी रहे। हमें उनके जीवन से एक प्रेरणा मिलती है। बाल्यकाल में उनके पिताजी जब धर्मशाला में सर्विस में थे तो उनका जन्म वहीं हुआ था और शिक्षा भी उन्होंने धर्मशाला में ही ग्रहण की थी। कॉलेज में शिक्षा ग्रहण करने के दौरान जब देश में आपातकाल लगा था तो उसके विरोध में वे खड़े हुए थे। यह संयोग है कि वे एक तरफ आपातकाल का विरोध कर रहे थे और दूसरी तरफ उन्होंने नेशनल डिफैंस एकेडमी का इग्ज़ाम भी पास कर लिया था। उनके पास उस समय दो विकल्प थे जिसमें एक राष्ट्र की सेवा और दूसरा समाज की सेवा था। अंततः उन्होंने उस समय समाज सेवा में आगे बढ़ने का फैसला किया।

टी सी द्वारा जारी

10.08.2022/1415/TCV/HK/1
शोकोद्गार ..... जारी
श्री बलबीर सिंह ..... जारी

वे समाज सेवा में आगे बढ़े। लोकतंत्र में आपतकाल न हो उसके विरोध में उन्होंने कार्य किया और 16 महीने तक जेल में रहे। जैसा आदरणीय सुरेश भारद्वाज जी ने कहा कि उनका 14-14 दिन का रिमांड भी हुआ। समाज सेवा का पक्ष लेने के बाद अगर उनकी उम्र उस व़क्त 25 साल होती तो वे उस व़क्त ही इस माननीय सदन के सदस्य बन गये होते परंतु कम उम्र की वजह से ऐसा नहीं हो सका। जब वे इस सदन के सदस्य बने तो उन्होंने दबंगता से पार्टी को आगे बढ़ाने का काम किया और पार्टी ने उनको एक अच्छा व्यक्ति समझकर चिन्तपुरनी से मौका दिया और वे वहां से जीकर कर इस माननीय सदन में आए। उसके बाद उन्होंने मंत्री बनकर प्रदेश के हित में बहुत-सारे काम किए जिस पर आप सभी ने चर्चा की। लेकिन यदि चिन्तपुरनी क्षेत्र के विकास की बात की जाए तो वे हमेशा अग्रणी रहेंगे। जब वर्ष 1998 में वे विधायक बने तो चिन्तपुरनी विधान सभा क्षेत्र में ऐसे बहुत सारे गांव थे जहां पैदल चलना भी मुश्किल था परंतु अपने समय में उन्होंने हर गांव को सड़क से जोड़ने का काम किया, पीने के पानी की नई-नई योजनाएं लेकर आए और जहां पर टयूबवैल नहीं लग सकता था वहां पर भी खड्ड के पानी को रोकर, उसको साफ-सुथरा करके गांव में पहुंचाने का काम किया। चिन्तपुरनी विधान सभा क्षेत्र की जनता के जहन में श्री प्रवीण शर्मा जी का नाम हमेशा रहेगा। जब उनका देहान्त हुआ तो उससे दो दिन पहले उन्होंने मुझे रात को फोन किया और कहा कि कुछ काम है, कल जरूर मिलना। मैं मण्डलाध्यक्ष को साथ लेकर दूसरे दिन सुबह ही उनके घर पहुंच गया। वे ठीक लग रहे थे और मैंने कहा की अब आप ठीक हो रहे हैं। मैंने पूछा कि आपने मुझे पिछले कल रात को बुलाया था, क्या बात है? उन्होंने दो बातों का जिक्र किया। एक तो उन्होंने मेरी कार्यशैली को सराहा और कहा कि यदि कोई रूठा है तो मुझे बताओ मैं उससे फोन पर ही बात कर लूंगा। दूसरी बात उन्होंने यह कही कि जितने भी वरिष्ठ कार्यकर्ता है उनको सम्मानीत करना है। मैंने सहर्ष उनकी यह बात स्वीकार की और कहा कि दिनांक 10 अगस्त से 13 अगस्त तक सत्र चलेगा उसके बाद मेरी विधान सभा के जितने भी वरिष्ठ कार्यकर्ता है जिन्होंने अपना जीवन राजनीति में खपा दिया और उनको कुछ भी हासिल नहीं हो सकता, उनको सम्मानीय करेंगे। मैं इस

10.08.2022/1415/TCV/HK/2

पर खरा उतने का प्रयास करूंगा। अंत में मैं प्रभु से प्रार्थना करता हूं कि इन चारों नेताओं को जो इस माननीय सदन के सदस्य रहे हैं, इनकी आत्मा को शांति मिले और इनके परिवार के सदस्यों को इस दुःख से बाहर निकलने की ताकत मिले।

अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे समय दिया, आपका धन्यवाद।

श्री राकेश जम्बाल एन0एस0 द्वारा ... शुरू

10-08-2022/1420/NS/YK/1

शोकोद्गार ..... जारी

श्री राकेश जम्वाल (सुन्दरनगर) : अध्यक्ष महोदय, इस सदन के चार वरिष्ठ सदस्य रहे जिनमें आदरणीय पंडित सुख राम जी, श्री रूप सिंह चौहान जी, श्री मस्त राम जी व श्री प्रवीण शर्मा जी शामिल हैं। इनके लिए जो शोक प्रस्ताव इस माननीय सदन में मुख्य मंत्री जी ने रखा है, उसमें मैं अपने आपको सम्मिलित करता हूं। मेरे से पूर्व कई माननीय सदस्यों ने विस्तार से बातें कही हैं। पंडित सुख राम जी का नाम पूरे देश व प्रदेश में बड़े आदर के साथ लिया जाता रहा है और मण्डी से उनका संबंध रहा है। हम बड़ी छोटी उम्र से पंडित सुख राम जी के बारे में सुनते रहे हैं। जबसे हमने होश संभाला पंडित सुख राम जी का नाम इस प्रदेश में बड़े नेता के रूप में लिया जाता था और मैं भी उनको देखने और मिलने के लिए जाया करता था क्योंकि वे अक्सर आते जाते मेरे गांव में रूकते थे। वहां पर वे उनके बहुत नजदीकी पंडित तिथ राम जी के पास रूकते थे तो हम भी वहां पर उनसे मिलने के लिए जाते थे।

अध्यक्ष महोदय, पंडित सुख राम जी ने हिमाचल प्रदेश के विकास के लिए काम किया है। निश्चित तौर पर हिमाचल प्रदेश की जनता सदैव उनके योगदान को भूल नहीं सकती। इस देश में दूरसंचार क्रांति के रूप में उन्होंने बहुत काम किया है। मेरे विधान सभा क्षेत्र में भी जब वे दूरसंचार मंत्री थे तो सर्किल टेलीकॉम ट्रेनिंग सैंटर दिया है। उन्होंने इसे वर्ष 2000 में सुन्दरनगर में खोला जिसमें जे0ई0 स्तर की ट्रेनिंग सुन्दरनगर में होनी शुरू हुई।

इसी के साथ वर्ष 2017 में जब भाजपा ने मुझे सुन्दरनगर से प्रत्याशी बनाया और मैं पंडित सुख राम जी से मिलने के लिए उनके घर गया तो मुझे उन्होंने आशीर्वाद दिया और कहा कि मैं आपके प्रचार के लिए आपके क्षेत्र में आऊंगा। वे मेरे प्रचार के लिए सुन्दरनगर आए। 90 साल की उम्र में सुन्दरनगर पहुंच कर मुझे आशीर्वाद दिया और वहां पर जन सभा को संबोधित किया। अध्यक्ष महोदय, जब पंडित सुख राम जी बीमार हुए और उनको मण्डी अस्पताल में एडमिट किया गया और मुझे उसी शाम को पता चला तो मैं तुरंत जोनल अस्पताल, मण्डी पहुंचा, तब वहां पर आदरणीय अनिल शर्मा जी भी मौजूद थे। उनका जो योगदान हिमाचल प्रदेश के विकास के लिए रहा है निश्चित तौर पर उस योगदान को भूलाया नहीं जा सकता है।

10-08-2022/1420/NS/YK/2

मुझे व्यक्तिगत तौर पर पंडित सुख राम जी का आशीर्वाद मिला है। मैं सदैव उनका ऋणी रहूंगा।

अध्यक्ष महोदय, यहां पर बहुत से वक्ताओं ने श्री रूप सिंह चौहान जी के बारे में कहा है। मेरा उनसे न कोई परिचय रहा और न कभी मिलना हुआ। यहां पर माननीय सदस्यों ने जिक्र किया कि उनका भी बड़ा योगदान इस प्रदेश के लिए रहा है।

आदरणीय प्रवीण शर्मा जी जो वर्तमान में भारतीय जनता पार्टी के उपाध्यक्ष भी थे और वाइस चेयरमैन थे तथा पूर्व में मंत्री रहे। पार्टी में विभिन्न दायित्व निभाते हुए उनका हिमाचल प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी को मजबूत करने के लिए बहुत बड़ा योगदान रहा है। मैंने जब युवा मोर्चा के कार्यकर्ता के रूप में काम करना शुरू किया तो प्रवीण शर्मा जी उस समय हिमाचल प्रदेश सरकार में मंत्री थे और वे लगातार भारतीय जनता पार्टी में जो युवा जुड़ते थे तो एक सरंक्षक के रूप में सभी कार्यकर्ताओं की चिंता करते थे। उनके पास युवा सेवाएं एवं खेल विभाग था।

श्री आर0 के0 एस0 द्वारा जारी।

10.08.2022/1425/RKS/DC-1

शोकोद्गार... जारी

श्री राकेश जम्वाल... जारी

उसमें मैं यूथ बोर्ड का मैम्बर था। जैसा माननीय वन मंत्री ने भी कहा कि Hotel Holiday Home उनका फेवरिट स्थान था। उन्होंने सभी यूथ बोर्ड के मैम्बर्स को वहां पर डिनर के लिए बुलाया और उनसे देर रात तक बातचीत की। इस डिनर में भारतीय जनता पार्टी का सारा युवा नेतृत्व शामिल था। वे हमें समझाते थे कि पार्टी के भीतर रहकर किस प्रकार पार्टी के लिए काम करना है। जब वे अपने प्रवास के दौरान मण्डी आते थे तो व्यक्तिगत तौर पर मुझे फोन करके रैस्ट हाउस बुलाते थे। उनका इस दुनिया से जाना भारतीय जनता पार्टी के लिए बहुत बड़ी क्षति है। जब वे पहली बार विधायक चुने थे तो उन्हें पहली दफा ही मंत्री बना दिया गया था। जब वर्ष 2012 व वर्ष 2017 में चुनाव हुए तो उन चुनावों में चुनाव प्रबंधन की जिम्मेवारी स्वर्गीय श्री प्रवीण शर्मा जी को सौंपी गई थी। स्वर्गीय श्री प्रवीण शर्मा जी ने एक महीने तक शिमला में बैठकर इस चुनाव प्रबंधन का काम किया। वे फाफी समय से अस्वस्थ चल रहे थे लेकिन जब भी प्रदेश कार्य समिति की मीटिंग होती थी तो उस मीटिंग में सबसे आगे स्वर्गीय श्री प्रवीण शर्मा जी की कुर्सी होती थी। उनका फोटो अक्सर अखबारों में आता था। जब इस बार भारतीय जनता पाटी का शीर्ष नेतृत्व आने वाले विधान सभा चुनावों के बारे में चर्चा करने लगा तो उसमें पार्टी को स्वर्गीय श्री प्रवीण शर्मा जी की काफी कमी महसूस हुई। लेकिन उनकी यह कमी अब पूरी नहीं हो सकती।

स्वर्गीय श्री मस्त राम जी मेरे विधान सभा निर्वाचन क्षेत्र के साथ लगते करसोग विधान सभा चुनाव क्षेत्र के विधायक रहे हैं। उनका मूल घर मेरे विधान सभा निर्वाचन क्षेत्र के निहरी में है। डी-लीमिटेशन से पहले यह क्षेत्र करसोग विधान सभा क्षेत्र में पड़ता था। उनका परिवार इसी घर में रहता है। उनके बेटे श्री भागीरथ जी ने भारतीय जनता पार्टी ज्वाइन की है और उनकी बहू वहां से पंचायत की प्रधान भी रही है। मेरा

10.08.2022/1425/RKS/DC-2

स्वर्गीय श्री मस्त राम जी से दो बार मिलना हुआ था और उन्होंने मुझे आशीर्वाद भी दिया है। निहरी में जो गत चार वर्षों में काम हुए हैं उन कामों को लेकर उन्होंने मेरी काफी तारीफ भी की थी। उन्होंने मुझे कहा था कि आप उस क्षेत्र के विकास के लिए इसी प्रकार से

काम करते रहें। जिस दिन उनका निधन हुआ उस दिन माननीय मुख्य मंत्री का मण्डी का दौरा था। जब हमें उनके देहांत की सूचना मिली तो मुख्य मंत्री ने कहा कि आप तुरंत वहां जाएं। मैं वहां पर पहुंचा और उनके परिवार के सदस्यों से भी मिला। जिन परिस्थितियों में उनका देहांत हुआ है, वह बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है। वे एक नेक दिल इंसान थे। जब उनकी मृत्यु हुई तो उन्होंने वहां एक नोट छोड़ दिया था और उस नोट में लिखा था कि आप इस होटल के कर्मचारियों को तंग न करें। श्री राम लाल ठाकुर भी उस दिन उस होटल में पहुंचे थे। आपने भी स्वर्गीय श्री मस्त राम जी के परिवार के लोगों का ढांढस बंधाया था। स्वर्गीय श्री मस्त राम जी ने करसोग विधान सभा क्षेत्र का काफी विकास करवाया है। डी-लिमिटेशन के दौरान मेरे विधान सभा क्षेत्र की 6 पंचायते जो वर्तमान में 9 हो गई है उस क्षेत्र में पड़ती हैं और उन पंचायतों के विकास के लिए भी उन्होंने समय-समय पर काम किये हैं। इन कामों के लिए उस क्षेत्र की जनता उन्हें हमेशा याद रखेगी। जो हिमाचल प्रदेश के लिए इन चारों माननीय सदस्यों का योगदान रहा है वह निश्चित तौर पर हमेशा स्मरण रहेगा। मैं भगवान से प्रार्थना करता हूं कि भगवान इन चारों आत्माओं को अपने चरणों में स्थान दे तथा इनके परिवारजनों को इस असहनीय दुःख से उबरने की शक्ति प्रदान करे।

अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बोलने का समय दिया, आपका धन्यवाद।

अध्यक्ष : अब माननीय सदस्य श्री विक्रमादित्य सिंह जी शोकोद्गार में भाग लेंगे।

श्री बी.एस. द्वारा जारी

10.08.2022/1430/बी.एस.ए0जी0/-1

अध्यक्ष : अब माननीय सदस्य श्री विक्रमादित्य सिंह जी शोकोद्गार प्रस्ताव पर भाग लेंगे।

श्री विक्रमादित्य सिंह (शिमला ग्रामीण) : अध्यक्ष महोदय, आज जो शोकोद्गार विधान सभा में आये हैं, स्वर्गीय श्री सुख राम जी हमारे देश व प्रदेश के बहुत ही वरिष्ठ नेता थे, श्री रूप सिंह चौहान जी, मस्त राम जी व श्री प्रवीण शर्मा जी के लिए ले करके आए हैं इस शोकोद्गार में मैं अपने आपको व अपने विधान सभा चुनाव क्षेत्र के लोगों को भी सम्मिलित

करना चाहता हूं। स्वर्गीय पंडित सुख राम जी के बारे में जैसा अभी सभी वक्ताओं ने कहा कि he was one of the tallest Congress leaders in the country. उनका जो योगदान देश के टेलिकोम सैक्टर में लिए रहा है उसे देश और प्रदेश का कोई भी नौजवान नहीं भूल सकता। खासकर आज के जमाने में जब 4-जी, 5-जी हमारे जीवन का एक महत्पूर्ण हिस्सा बन चुका है। इसकी शुरूआत पंडित जी ने वर्ष 1993 के अपने कार्यकाल में केन्द्र से की थी।

इसके साथ-साथ हिमाचल प्रदेश के विकास में इनका बहुत बड़ा योगदान रहा है। कई बार ये मण्डी संसदीय क्षेत्र से सांसद रहे व विधायक रहे। प्रदेश सरकार में इन्होंने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है और एक अलग छाप हिमाचल प्रदेश की राजनीति में छोड़ी है। अगर हम दलगत राजनीति से ऊपर उठ करके बात करें तो he will always be remembered as a person who initiated alternative politics in Himachal Pradesh. आज तक हिमाचल प्रदेश में कोई ऐसा नेता नहीं हुआ जिन्होंने अपने बल पर अगल से दो विकल्पों के अलावा तीसरा विकल्प खड़ा किया हो और कामयाबी हासिल की हो। मेरे पिता जी स्वर्गीय वीरभद्र सिंह जी के साथ उनका एक बहुत लम्बा राजनीतिक, पारिवारिक और भावनात्मक जुड़ाव हमेशा से रहा है। उन्होंने बहुत से उतार चढ़ाव राजनीतिक जीवन में देखे परंतु मुझे खुशी है कि जब-जब पंडित जी ने लोक सभा के चुनाव लड़े उसमें हमारे गृह क्षेत्र रामपुर बुशहर से वर्ष 1984 और 1993 में उन्हें सबसे ज्यादा लीड मिली थी। यह इस चीज को दर्शता है कि राजा साहब का प्रेम हमेशा उनके साथ था। उनके दिखाए हुए रास्ते पर चलने के लिए हम सब प्रेरणा प्राप्त करते हैं। जो पिछले चुनाव हिमाचल प्रदेश के अन्दर वर्ष 2017 के हुए उसमें भी सरकार को बनाने में एक निर्णायक भूमिका पंडित सुख राम जी

10.08.2022/1430/बी.एस.ए0जी0/-2

ने अदा की है। हिमाचल प्रदेश का बच्चा-बच्चा इस चीज को जानता है और मण्डी जिला के लोग इस चीज को जानते और समझते हैं। हम अपनी और से अपने चुनाव क्षेत्र की जनता की ओर से बहुत आदर से श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं। May his soul rest in peace. उनके दिखाए हुए रास्ते पर हम चलें यही मैं कामना करता हूं।

स्वर्गीय मस्त राम जी, जो हमारे पार्टी के पूर्व में विधायक रहे हैं। वे बहुत ही जमीन से जुड़े हुए व्यक्ति थे। जब वे विधायक नहीं थे तो भी वे पार्टी की सेवा करते रहे। मुझे याद है कि जब वे विधायक नहीं रहे तो उस समय वे श्री वीरभद्र सिंह जी के पास आए और उन्होंने

कहा कि मेरे पास शिमला में रहने के लिए कोई स्थान नहीं है उन्हें अपने बच्चों की पढ़ाई करवानी थी इसलिए वे पांच साल तक हमारे सरकारी निवास पर रहे। यह दर्शाता है कि वे कितने जमीन से जुड़े हुए व्यक्ति थे। उन्होंने अपने पद का कभी भी गलत इस्तेमाल नहीं किया। वे आखिरी सांस तक जनता से जुड़े रहे। अभी मण्डी संसदीय क्षेत्र में उप चुनाव हुए उसमें भी उनका बहुत अच्छा योगदान रहा है। इसलिए भी हम उन्हें याद करते हैं।

स्वर्गीय रूप सिंह चौहान जी को हम व्यक्तिगत रूप से नहीं जानते थे परंतु इस मान्य सदन के वे सदस्य रहे हैं। श्री प्रवीण शर्मा जी, जो भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता भी थे और पूर्व में मंत्री भी रहे हैं उनको भी मैं अपनी ओर से और अपने निर्वाचन क्षेत्र के लोगों की ओर से बहुत श्रद्धांजलि देते हैं।

श्री एन0 जी0 द्वारा जारी...

10-08-2022/1435/ए.जी.-एन.जी./1

श्री विक्रमादित्य सिंह जारी.....

माननीय श्री रूप सिंह चौहान इस माननीय सदन के सदस्य रहे हैं और उनको भी हम श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं।

अध्यक्ष महोदय, स्वर्गीय श्री प्रवीण शर्मा जी, भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता थे और इस माननीय सदन के सदस्य भी रहे हैं। हम उन्हें भी अपनी व अपने निर्वाचन क्षेत्र के लोगों की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

अध्यक्ष महोदय, मुख्य मंत्री जी ने ठीक कहा कि यह जीवन का सत्य है कि जो भी इस संसार में आया है उसे इस संसार को छोड़ कर जाना ही है। लेकिन एक व्यक्ति देश व प्रदेश के लोगों के ऊपर क्या छाप छोड़ कर जाता है उसी से वह जाना जाता है। कोई कितनी देर सत्ता में या कुर्सी पर रहा, वह मायने नहीं रखता लेकिन आप लोगों के बीच में क्या छाप छोड़ कर जा रहे हैं, लोग आने वाले समय में वही याद रखते हैं। इन सभी पूर्व सदस्यों ने अपने-अपने दायित्व को बहुत अच्छे तरीके से निर्वहन किया है। हम आशा करते

हैं कि उनके दिखाए हुए रास्ते पर हम सभी आगे बढ़ें और हिमाचल प्रदेश को आने वाले समय में और ऊंचाइयों पर लेकर जाएं।

अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बोलने का समय दिया आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। जय हिंद।

समाप्त/-

10-08-2022/1435/ए.जी.-एन.जी./2

अध्यक्ष : अब माननीय सदस्य श्री हीरा लाल शोकोद्गार में भाग लेंगे।

श्री हीरा लाल (करसोग) : अध्यक्ष महोदय, मुख्य मंत्री जी द्वारा जो शोकोद्गार प्रस्तुत किया गया है उसमें मैं भी अपने आप को शामिल करता हूं। इस सत्र से पहले चार महान विभूतियों का निधन हुआ है। स्वर्गीय पंडित सुख राम जी, जोकि सात बार इस माननीय सदन के सदस्य रहे हैं और तीन बार माननीय सांसद भी रहे हैं। पूरे हिमाचल प्रदेश में उनका नाम एक वरिष्ठ नेता और एक समाजसेवक के रूप में लिया जाता है। उन्होंने हिमाचल प्रदेश में संचार क्रांति के लिए बहुत कार्य किया है और उसके लिए उन्हें सदैव याद किया जाएगा। मैं वर्ष 1996 में जिला परिषद का सदस्य बना था और तब वे करसोग में अनेक बार आए थे। उन्होंने उस समय करसोग में टेलिकोम का एस.डी.ओ. कार्यालय खोला था। उस समय करसोग में उनका बहुत बड़ा सम्मान भी किया गया था। उनका निधन हो गया और आज वे हमारे बीच में नहीं हैं। मैं दिवंगत आत्मा को अपनी ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और परिवारजनों के प्रति संवेदनाएं प्रकट करता हूं।

अध्यक्ष महोदय, पूर्व सदस्य स्वर्गीय श्री रूप सिंह चौहान जी का भी इस दौरान निधन हुआ है। वे सिरमौर क्षेत्र के रहने वाले थे। वे वर्ष 1977 में इस माननीय सदन के सदस्य रहे। मैं उनके प्रति भी अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और परिवारजनों के प्रति संवेदनाएं प्रकट करता हूं।

अध्यक्ष महोदय, पूर्व सदस्य स्वर्गीय श्री प्रवीण शर्मा जी भी आज हम सब के मध्य नहीं हैं। वे भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ सदस्य रहे हैं। मैं उनके प्रति भी अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और परिवारजनों के प्रति संवेदनाएं प्रकट करता हूं।

अध्यक्ष महोदय, पूर्व सदस्य स्वर्गीय श्री मस्त राम जी मेरे विधान सभा क्षेत्र से ही सम्बंध रखते थे। उनका निधन 11 जुलाई, 2022 को हुआ था और 12 जुलाई, 2022 को उनके पैतृक गांव में उनका दाहसंस्कार हुआ था।

10-08-2022/1435/ए.जी.-एन.जी./3

मैं भी उनके दाहसंस्कार में शामिल हुआ था और उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की थी। स्वर्गीय श्री मस्त राम जी इस माननीय सदन में दो बार चुन कर आए थे। उनका जन्म 16 सितम्बर, 1946 को उनके पैतृक गांव निहरी में हुआ था। पिता श्री नारू राम और माता श्रीमती नारदू देवी के घर में उनका जन्म हुआ था। उनकी दसवीं तक की शिक्षा उनके पैतृक गांव निहरी में हुई थी। वे उच्च शिक्षा के लिए महाविद्यालय मण्डी गए और वहां से उन्होंने बी.एससी व बी.एड की थी। उस समय यह कहा जाता था कि वे बी.एड करने वाले जिला मण्डी के अनुसुचित जाति समाज के पहले विद्यार्थी थे। उसके पश्चात

श्री एस.एस. द्वारा जारी.....

10.08.2022/1440/SS-AG/1

श्री हीरा लाल क्रमागत :

वे शिक्षक भी रहे और सबसे पहले उनकी ज्वाइनिंग छतरी में हुई और छतरी के पश्चात् उन्होंने ट्रेसी और निहरी में स्कूल में शिक्षक के रूप में सेवाएं दीं। मेरी उनसे कई बार बातचीत हुई। उन्होंने मुझे कहा कि मुझे बचपन से ही राजनीतिक क्षेत्र में आने का शौक था और उन्होंने 1982 में कांग्रेस पार्टी का टिकट लिया तथा उस पर चुनाव लड़ा। लेकिन वे 1982 में अपना चुनाव हार गए। 1982 के पश्चात् एक दसवीं कक्षा तक प्राइवेट स्कूल था, उसमें वे बी0एस0सी0 टीचर रहे। उन्होंने वहां पर अपनी सेवाएं दीं। उनका जीवन बहुत

संघर्षपूर्ण रहा। 1992 में उनकी पहली पत्नी का निधन हुआ। उनके चार बेटे और एक बेटी थी। उसके पश्चात् उन्होंने संघर्ष किया और 1993 में वे कांग्रेस का टिकट लेने में सफल हुए। वे 1993 में पहली बार विधान सभा के सदस्य बने। 1993 से लेकर 1998 तक वे हाउसिंग बोर्ड के वाइस-चेयरमैन रहे। 1994 में फिर उन्होंने दूसरी शादी की। उनके दो बेटे भी हैं। उसके पश्चात् वे 1997 में विधान सभा चुनाव हार गए। 2003 में वे फिर से विधान सभा के लिए चुने गए।

अध्यक्ष : माननीय सदस्य, ये सारी बातें उनकी जीवनी के बारे में आ गई हैं। अगर कोई विशेष उल्लेख है तो आप वह करें।

श्री हीरा लाल : उसके पश्चात् 2007 में उन्होंने कांग्रेस टिकट से चुनाव लड़ा। 2012 और 2017 में उन्होंने आज़ाद उम्मीदवार के रूप में चुनाव लड़ा। उन्होंने कुल 7 बार चुनाव लड़े और उनमें से सिर्फ दो चुनाव जीते हैं। उनका बहुत ही अच्छा स्वभाव था। कई बार उनसे बातचीत होती थी और 2017 के चुनाव में जब हमारी चुनावी रैली जा रही थी तो हम दोनों सड़क के बीच में इकट्ठे हो गए। उन्होंने बहुत जोर-शोर से कहा कि मैं जीतूं या न जीतूं परन्तु हीरा लाल को जरूर जिताना है। ऐसा आशीर्वाद उन्होंने 2017 में मुझे दिया है। वे बहुत ही अच्छे व्यक्ति थे और उन्होंने करसोग के लिए जो कार्य किया है उसके लिए उन्हें हमेशा याद रखा जाएगा। मैं उनके परिवार के प्रति संवेदना प्रकट करता हूं और उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे समय दिया, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

10.08.2022/1440/SS-AG/2

अध्यक्ष : अब श्री अनिल शर्मा जी शोकोद्गार में भाग लेंगे।

श्री अनिल शर्मा (मण्डी) : अध्यक्ष जी, जो माननीय मुख्य मंत्री जी ने चार पूर्व विधायकों के बारे में शोकोद्गार प्रस्ताव माननीय सदन में प्रस्तुत किया है, उसमें श्री रूप सिंह चौहान, मस्त राम जी, प्रवीण शर्मा जी और मेरे पिता जी माननीय पंडित सुखराम जी शामिल हैं। उसमें बहुत-सी अच्छी बातें नेताओं के बारे में कही हैं। माननीय मुख्य मंत्री जी ने ठीक कहा

कि इंसान हमेशा के लिए नहीं आता, एक दिन सभी को इस दुनिया से जाना ही है। परन्तु परिवार के अंदर से जब बड़ा आदमी जाता है तो एक खालीपन-सा लगता है। वह खालीपन तब लगता है जब कि ऐसे इंसान का साया आपके ऊपर हो जो मार्गदर्शक सिर्फ आपका ही नहीं बल्कि प्रदेश व देश का मार्गदर्शक रहा हो। मैं सबसे पहले उन सभी दिवंगत आत्माओं को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। रूप सिंह चौहान जी को मैं व्यक्तिगत रूप से जानता नहीं हूं क्योंकि मैं बहुत छोटा था मुझे इनके बारे में ज्ञान नहीं है। मस्तराम जी के साथ 1993 में मैंने चुनाव लड़ा था। वे विधायक बने और मैं मंत्री बन गया था। उस वक्त मेरी उनसे वाकफ़ियत हुई। वे करसोग से आते थे। प्रवीण शर्मा जी ने भी 1998 के अंदर जब गठबंधन की सरकार बनी तो एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। मैंने मुख्य मंत्री जी का भी आभार प्रकट किया जो आज इस बात की चर्चा कर रहे थे, जब इंसान का समय आता है तो आदमी को डर लगता है कि अब क्या होने वाला है। शायद मैं मुख्य मंत्री को न भी कहता, मेरी आदत कुछ और है तथा जब मैं हॉस्पिटल के अंदर था उस वक्त मैंने अपनी पुत्र बहू से बोम्बे के अंदर बात की

जारी श्रीमती के0एस0

10.08.2022/1445/केएस/डीसी/1

श्री अनिल शर्मा जारी---

जब मैं हॉस्पिटल में था, उस वक्त मैंने अपनी पुत्र वधू से बॉम्बे बात की कि बेटा ऐसा-ऐसा हुआ है। उसने कहा कि डैडी आप चिंता न करो मैं कल चौपर भेज रही हूं इनको अपोलो हॉस्पिटल ले जाएंगे। मुझे कुछ नज़र नहीं आ रहा था क्योंकि मेरे लिए शायद वह वक्त ही ऐसा था। मेरे बेटे ने कहा कि आप मुख्य मंत्री से क्यों बात नहीं करते? मैंने कोशिश की और जैसे ही मैंने मुख्य मंत्री जी से बात की, इन्होंने दरियादिली दिखाई और सवेरे हमने उनको दिल्ली ले जाने का प्रयास किया। समय जब आ जाता है तो इन्सान को जाना ही पड़ता है। आज हम जो चर्चा कर रहे हैं, मैं अभी बैठे-बैठे यह बात सोच रहा था कि क्या मैं सदन में

होता या नहीं होता और क्यों नहीं होता, मैं उसके बारे में भी कहना चाहता हूं। राजनीति के अंदर हम बहुत सी ऐसी बातें करते हैं जो शायद पर्दे के पीछे कुछ और होता है और पर्दे के आगे कुछ और नज़र आता है। मुझे याद है, वर्ष 1984-85 की बात है, यहां कहा गया कि आपको केंद्र में पार्लियामेंट का चुनाव लड़ना है। मेरे पिताजी ने हामी भरी कि ठीक है मुझे केंद्र में भेज दो क्योंकि उस वक्त यह सोचा जा रहा था कि स्टेट की पोलिटिक्स से उनको केंद्र में भेजा जाए। जब वे वहां गए तो मुझे वह वक्त याद है कि लोग उनसे कहते थे कि आप अनिल शर्मा को चुनाव लड़वाओ। जब मुझसे पूछा तो मैंने कहा कि मुझे राजनीति का शौक नहीं है इसलिए आप किसी और से चुनाव लड़वा लो। मेरे पिताजी ने गांव से ही किसी नौजवान को टिकट दिया और उसको जीताकर विधानसभा में पहुंचाया। उस वक्त कुछ नेताओं ने कहा कि पंडित जी आप जब केंद्र में जाएंगे तो आपको वहां कौन पहचानेगा? यहां तो 68 विधायक है शक्ल नज़र आ जाती है परन्तु पार्लियामेंट में आपको कौन पहचानेगा? मुझे उस वक्त की याद है। हम हिमाचल भवन में रहा करते थे। मेरे पास एक छोटी सी मारूति कार हुआ करती थी। राष्ट्रपति के वहां से जब फोन आया कि पंडित जी आप ओथ के लिए आओ तो मुझे राष्ट्रपति भवन के रास्ते का पता ही नहीं था। मारूति कार में मैं और मेरे पिताजी दोनों गए और ढूंढते-ढूंढते राष्ट्रपति भवन पहुंचे। उनको डिफेंस

10.08.2022/1445/केएस/डीसी/2

मिनिस्टर का विभाग दिया था । मेरे पिताजी ने मुझे भेज दिया क्योंकि ड्राइवर तो मैं खुद ही था। मेरे पिताजी ने कहा कि बेटा तू चला जा अब मैं सरकारी गाड़ी में आऊंगा। राजनीति में वक्त का पता नहीं लगता, मैं यह कहना चाहता हूं। जब उन्होंने वर्ष 1962 में चुनाव लड़ा, उस वक्त कांग्रेस के खिलाफ चुनाव लड़ना एक बहुत बड़ी चुनौती होती थी। उनका चुनाव चिन्ह शेर था और वे शेर की तरह ही लड़ते रहे। यदि दुश्मनी की तो लड़कर दुश्मनी की और यदि दोस्ती निभाई तो पूरी शिद्दत से निभाई। मुझे याद है वर्ष 1993 में, मैं सदन का समय इसलिए ले रहा हूं क्योंकि आज हम उनके बारे में चर्चा कर रहे हैं और बहुत सी चीजें ऐसी हैं जिनके बारे में मैं बताना चाहता हूं। वर्ष 1993 में चुनाव से दो दिन पहले उन्होंने मुझसे कहा कि बेटा तूने चुनाव लड़ना है। मैंने कहा पिताजी मुझे तो भाषण देना भी नहीं

आता क्योंकि आप मुझे कभी राजनीति के अंदर नहीं ले गए तो कहां से मैं चुनाव लड़ूंगा और मैं बैठ गया कि मैं चुनाव नहीं लड़ूंगा। मुझे याद है, जब मैं सरकारी नौकरी करता था, यह बात मैं इसलिए बता रहा हूं कि राजनेताओं के बच्चों पर एक दवाब होता है और मुझे मालूम है कि जब मैं नौकरी करता था तो रात को जब मैं मुख्य मंत्री के निवास से बैनमोर की तरफ जा रहा था तो पुलिस वाले ने मेरा चालान कर दिया । मैंने जब पिताजी को इस बारे में बताया तो उन्होंने कहा कि बेटा तूने गलती की है इसलिए मैं टूटू तक पैदल गया। मेरे पिताजी ने उस वक्त मेरा स्कूटर वहां से रिलीज़ नहीं किया। यह मैं नेताओं की बात करना चाहता हूं। मेरे पिताजी हमेशा कहते थे कि बेटा कभी अपनी पावर का गलत इस्तेमाल मत करो और मैंने वही चीज़ रखी। वर्ष 1993 में जब मैं चुनाव लड़ने लगा तो इसका विरोध हो रहा था। मैंने कहा कि पिताजी मैंने चुनाव नहीं लड़ना है आप क्यों इस विरोध के अंदर चुनाव लड़ने की बात कर रहे हैं। परन्तु लोगों के विरोध के बावजूद, जैसे मैंने कहा कि वे शेर थे, उन्होंने कहा कि बेटा तू यहां पर बैठा रह मैं देखता हूं और वह चुनाव उनसे ज्यादा मतों से जीतकर मैं विधान सभा में पहुंचा। यही मैं कहना चाहता हूं कि नेताओं के अंदर सोच क्या होनी चाहिए। सबसे बड़ी बात मैं इस माननीय सदन को बताना चाहता हूं कि मेरे दो गुरू रहे, एक मेरे पिताजी और एक राजा वीरभद्र सिंह जी मेरे गुरू रहे।

श्रीमती अ0व0 द्वारा जारी--

10-08-22/1450/अ0व0/डीसी/1

शोकोद्गार क्रमागत-----

श्री अनिल शर्मा----- **जारी**

मैंने दो राजनेताओं के आशीर्वाद से अपनी राजनीति शुरू की थी। वे दोनों ही काम के प्रति अनथक थें। इतनी बड़ी-बड़ी राजनैतिक चुनौतियों के बावजूद मेरे पिताजी ने 94 वर्ष की आयु पूरी की और मैं समझता हूं कि प्रदेश में ऐसी चुनौती किसी भी राजनैतिक व्यक्ति के पास नहीं आई होगी। कई प्रकार की चुनौतियां होने के बावजूद भी वे दोबारा राजनीति में खड़े हुए और मुझे भी कहा कि बेटा जब किसी रूप में पावर मिलती है तो उस पावर का

इस्तेमाल करना चाहिए। लोगों के इतने काम करो कि आपकी एक पहचान बन जाए। मैं इस सदन में आपको वही चीज कहना चाहता हूं कि जब पहली बार उनको वित्त व लोक निर्माण विभाग मिला तो शायद आपको हिमाचल की उस वक्त की हालत पता नहीं होगी। उस समय मण्डी से शिमला पहुंचने के लिए दो दिन का समय लगता था। उस समय रास्ते व सड़कें नहीं हुआ करती थीं बाकी पानी व बिजली की तो दूर की बात थी, उन दिनों हिमाचल के हालात इस प्रकार के थे। उस समय विकास की बातें करना और उन्हें अमलीजामा पहनाना एक सपने की तरह होता था। आज तो हम बड़ी-बड़ी बातें करते हैं कि पूर्व की सरकार ने क्या किया, कुछ नहीं किया। उस समय न पैसा होता था और न ही मशीनरी होती थी। मुझे याद है जब मेरे पिताजी जनजातीय क्षेत्र में प्रवास पर जाते थे तो दो-दो महीने के बाद वापिस आते थे। वापिस आने पर उनका मुंह और होंठ फटे होते थे। हम फोटो में देखते थे कि वे किस तरीके से टफ एरिया में पैदल चलकर हिमाचल की कंदराओं में पहुंचते थे। पूर्व मुख्य मंत्री डॉ0वाई0एस0परमार, राजा वीरभद्र सिंह जी और पं0 सुख राम जी ने ऐसा-ऐसा समय देखा है। ठीक है, उसके बाद वर्ष 1998 का समय आया। यहां पर माननीय महेन्द्र सिंह जी ने कुछ बातें कहीं। हमारे ऊपर उस समय विपत्ति आई थी और हम लोग अपने घर के अंदर बैठे थे। मैंने कहा कि अब जनता के बीच में जाने का समय नहीं रहा और हम अब जनता के बीच में नहीं जाएंगे। लेकिन कुछ समय बाद

10-8-22/1450/अ0व0/डीसी/2

मेरे पिताजी उठे और उन्होंने कहा कि बेटा चल, घर से बाहर निकलते हैं। मैंने कहा कि मैं नहीं जाऊंगा, हमारी राजनीति अब खत्म हो चुकी है। उन्होंने कहा कि मैंने जनता के बहुत काम किए हैं और अगर लोगों को लगता होगा कि मैंने उनके लिए कुछ किया है तो जनता मुझे फिर याद करेगी। हम जब गांव के अंदर गए तो लोगों ने हमारे ऊपर लगे इल्ज़ाम को भुलाकर हमारा ढोल-नगाड़ों से स्वागत किया। लोग हमारे साथ चल पड़े और हमारे साथ श्री महेन्द्र सिंह ठाकुर जी भी चल पड़े। हमने वहां पर एक चुनौती पैदा कर दी। हमने जब भारतीय जनता पार्टी के साथ मिलकर सरकार बनाई थी तो उस वक्त भी पहले राजा वीरभद्र सिंह जी ने शपथ ले ली थी। मैंने श्री प्रेम कुमार धूमल जी को फोन किया कि आप

यहां से निकल जाओ, उन्होंने पूछा कि क्या बात है तो मैंने कहा कि आपकी पार्टी की सरकार नहीं बनेगी। मैं उस समय मोबाइल के माध्यम से बात करता रहा। मुझे वर्ष 1998 की वह बात याद है जब हमने यहां पर सरकार बनाने के लिए कैसे-कैसे जदोजहद की थी। मुझे मालूम था कि यदि विधायक शिमला पहुंच जाएंगे तो सरकार नहीं बनेगी। यह पहली बार हुआ कि चुने हुए विधायकों को भारतीय जनता पार्टी में शामिल किया गया। लोगों ने उसको मास्टरस्ट्रोक कहा। उस मास्टरस्ट्रोक का तब पता चला जब किसी पत्रकार का मुझे फोन आया, उन्होंने कहा कि आप शिमला नहीं पहुंच सकते। मैंने कहा कि क्यों नहीं पहुंच सकते, विधायक हमारे साथ हैं। उन्होंने कहा कि आप यह गलती मत करना। अगर आप शिमला पहुंच गए तो दोनों विधायक भी जाएंगे। हमने उनको भारतीय जनता पार्टी में शामिल किया और हमने 5 वर्ष के लिए सरकार बनाने की बात की थी। मुझे याद है दिल्ली में श्रीमती सोनिया गांधी जी हमारे सामने से आई और हम वहां पर बैठे हुए थे। यह बात सही है, यहां पर जैसे माननीय श्री सुरेश भारद्वाज जी ने कहा कि संसद में लोग पं0 सुख राम जी को घेर कर रखते थे। सामने से मैडम आई और उन्होंने कहा कि आपने गलत किया है। मेरे पिताजी अंगुली घुमाकर बात करते थे जिसके लिए मैं उनको कई बार टोकता भी था। मगर उनकी वह आदत बन गई थी। उन्होंने अंगुली घुमाते हुए कहा कि मैडम, मैंने कहा था कि मैं सपोर्ट करके माइनस करूंगा मगर आपने मेरी बात नहीं सुनी। आज वे हमारे बीच में नहीं है पर मैं फिर भी कुछ बातें यहां पर कहना चाहता हूं। मैं जब भारतीय जनता पार्टी में शामिल हुआ तो उस बारे में मेरे पिताजी को मालूम नहीं था, फिर मेरे बेटे ने कहा कि मेरे दादाजी के साथ ऐसा हुआ है। लेकिन मैं अपने पिताजी का आभारी हूं कि उन्होंने कभी नहीं कहा कि

टी0सी0 द्वारा जारी

10.08.2022/1455/TCV/DC/1
शोकोद्गार ..... जारी
श्री अनिल शर्मा ..... जारी

मैं निकल गया और मैंने अपने पिता जी को नहीं बताया कि मैं भारतीय जनता पार्टी में जाने वाला हूं। मैं भारतीय जनता पार्टी में गया लेकिन पिता जी ने यह बात कभी मुहं से नहीं

निकाली। इसके लिए मैं उनका आभारी हूं। मुझे इस बात की खुशी है कि मेरे पिता जी इस संसार से एक कांग्रेस पार्टी के सदस्य के रूप में गये। यदि वे कांग्रेस से बाहर गये होंगे तो इसके पीछे उनका पोता उनकी कमजोरी हो सकती है लेकिन बेटा उनकी कमजोरी नहीं था। वे कहते भी थे कि बेटा आप इसको नहीं ले जा पाएंगे, इसको मैं ले जाउंगा। मैं एक बात इस माननीय सदन में रखना चाहूंगा। हमारे लोगों के पास रोजगार का कोई साधन नहीं था। मैं विधान सभा के अंदर बहुत कम बोलता हूं लेकिन एक बात जरूर रखना चाहता हूं कि मेरे पिता जी ने जर्मनी से जर्मन नस्ल की जर्सी गाय इस देश में लाई और आज रामपुर, कुल्लू, मण्डी के लोग दूध से रोजगार पैदा करते हैं। उन्होंने मुझे ठेकेदार नहीं बनाया। आज कोई विधायक या मंत्री बनता है तो पहले बेटा ठेकेदार बनता है। वे हमें कहते थे कि बेटा काम करो। वे इतनी लम्बी उम्र तक कैसे अपने को मेंटेन रख पाए इसके पीछे भी कुछ कारण थे। वे सुबह 3 बजे उठकर योगा करते थे और एक कागज और पैन उनके पास हमेशा पड़ा रहता था, चाहे वे मंत्री थे या नहीं थे। जब योगा करते थे तो उसमें नोट करते रहते थे कि मैंने किस से बात करनी है, कौन-कौन से काम करने हैं। क्या आज हमारी ऐसी सोच है? जब भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनी तो उन्होंने मुख्य मंत्री जी से कहा कि इनको बहुउद्देश्यीय परियोजनाएं एवं ऊर्जा विभाग दे दें। मैंने उनसे पूछा कि आपने मुझे इस विभाग को दिलाने के लिए क्यों कहा? उन्होंने कहा कि हमारी क्षमता क्या है इस प्रदेश के अंदर उसकी पहचान नहीं हो रही है। उस समय एक टेलीफोन कॉल 300-300 रुपये में होती थी। एक बिजनेसमैन मेरे पास आया और उसने बताया कि मैं 40 हजार रूपये प्रतिमाह टेलीफोन बिल के देता था। मेरे पिता जी ने टेलीफोन की दरों को सस्ता किया और आज हम सबकी जेब में

10.08.2022/1455/TCV/DC/2

टेलीफोन/मोबाइल है। मैं इस सदन में कहना चाहता हूं कि हम बोलियां लगा रहे हैं और राजनीति कर रहे हैं। मैं यह भी कहना चाहता हूं कि मुहं में मछली डालना न सिखाएं बल्कि मछली पकड़ना सिखाएं। आप उनको अपने तक सीमित रखना चाहते हैं। हिमाचल प्रदेश

को रेवैन्यू और पैसे की जरूरत है। ये बातें मैंने दोनों नेताओं से सीखी हैं। आगे हमारा समय कैसा आने वाला है, हम क्या करने जा रहे हैं? हमें उस पर गौर करना चाहिए। यहां पर सभी ने उनके बारे में बात की मुझे इस बात का गर्व भी होता है कि मैं उनका बेटा हूं। मुझे याद है, बॉम्बे में जब मैं अपने बेटे को कॉलेज में छोड़ने गया, उस समय राजा वीरभद्र सिंह जी मुख्य मंत्री थे। मैं बड़ी सिफारिशें लेकर गया, इधर-उधर चिट्ठियां बताता रहा

एन0एस0 द्वारा ... जारी

10-08-2022/1500/NS/HK/1

श्री अनिल शर्मा ..... जारी

लेकिन मैं लेट हो गया था और उसकी एडमिशन नहीं हो रही थी। मैं और मेरा बेटा हम दोनों मरिन ड्राइव में बैठे थे तो मैंने कहा बेटा, कल हम वापिस चलते हैं। वहां पर जय हिंद कॉलेज है। मैं इसलिए बता रहा हूं कि कर्म कोई करता है और फल किसी को मिल जाता है। दूसरे दिन जब हम जय हिंद कॉलेज में गए तो मैंने श्री वीरभद्र सिंह जी की चिट्ठी पकड़ा दी और वहां पर शिंदे जी की चिट्ठी पकड़ा दी तथा कहा कि मेरे बेटे की एडमिशन है। तब उन्होंने कहा कि आप क्या हैं? मैंने कहा कि मैं हिमाचल प्रदेश के मण्डी का विधायक हूं। तब उन्होंने मुझे कहा कि क्या आप पंडित सुख राम जी को जानते हैं? मैंने कहा कि मैं उनका पुत्र हूं। तब उन्होंने मुझे बैठने के लिए कहा। मैं अपने कॉलेज में एक सीट बढ़ा रहा हूं और इसकी एडमिशन मेरे कॉलेज में होगी। मैं पंडित सुख राम जी के पास गया था तब उन्होंने कहा था कि आपका काम परसों हो जाएगा। तब मैंने सोचा कि राजनीतिज्ञ ऐसे ही बोलते हैं। मैं शिव सेना से संबंध रखता था और मैं किसी की नहीं सुनता था। मैंने उस समय महसूस किया कि पिता जी ने किसका काम कब कर दिया और उसका फल आज मेरे बेटे को मिला। ये बातें मैं इसलिए कह रहा हूं क्योंकि राजनीति के अंदर हम सबको वक्त मिला है और हम लोग लोगों की सेवा कर रहे हैं परंतु राजनीति के अंदर पहचान तभी बनती है जब निस्भाव से सेवा करेंगे। मेरे पिता जी ने कभी किसी को नहीं कहा कि किस पार्टी से आए हो और कहां से आए हो? उनके दिल में हिमाचली हमेशा रहते थे। यहां पर सभी माननीय सदस्य जानते हैं कि जब उनसे मिलने हिमाचल से कोई भी व्यक्ति गया हो तो वे उसको पहले बुलाते थे तब तक अधिकारी और कर्मचारी बाहर बैठे रहते थे क्योंकि वे जानते थे कि इतनी दूर से अगर कोई आया है तो जरूरी काम के लिए आया है। अंत में

सभी दिवंगत आत्माओं का जो हमारे बीच में मौजूद नहीं हैं उनको भगवान अपने चरणों में स्थान दे।

इस माननीय सदन में आज जो भी मेरे पिता जी के बारे में कहा तो मैं सभी विधायकों का आभारी हूं। माननीय मुख्य मंत्री जी, श्री मुकेश अग्निहोत्री जी और सभी माननीय सदस्यों का आभार प्रकट करता हूं कि उन्होंने अपनी संवेदनाएं प्रकट कीं। हमें राजनीति में सीख लेकर चलना है। मुझे कई बार बोलते हैं कि आप कहां जाएंगे और क्या करेंगे तो जाने और न जाने की बातें जनता के ऊपर होती है। मैंने कभी सोचा नहीं था कि यहां तक पहुंच जाऊंगा और आगे भी नहीं सोचता हूं। आप अपना काम सही रखें। लोग अपने आप आगे ले जाते हैं। मैंने कांग्रेस पार्टी, भारतीय जनता पार्टी और

10-08-2022/1500/NS/HK/2

एच0वी0सी0 से भी चुनाव लड़ा है। महेन्द्र सिंह जी की तरह मैं कई पार्टियों से चुनाव लड़ा हूं। महेन्द्र सिंह जी भी तभी चुनाव जीतते हैं क्योंकि ये कई लोगों के काम करते हैं। मैंने इनके साथ बहुत अच्छा समय काटा है। मैं ड्राईवर होता था और ये साथ होते थे तथा हम दोनों ने एक पार्टी खड़ी कर दी थी। काम के ऊपर पार्टी भी खड़ी हो जाती है। अध्यक्ष जी, मैंने आपका थोड़ा समय ज्यादा ले लिया है। मैं चाहता था कि उनकी बातें कुछ ऐसी थी कि लोग कुछ और इस बात को कहते कि शायद पंडित जी ने किया। उस पर स्पष्टीकरण देना मैंने इसलिए जरूरी समझा कि राजनीति मैं डर के नहीं करता हूं और सबको पता होना चाहिए कि अगर लड़ाई लड़ी है तो डर के नहीं लड़ी है। आगे भी राजनीति में परिवार की तरह रहें और इस प्रदेश को आगे ले जाएं, यही सपना मेरे पिता जी का रहा है।

अध्यक्ष महोदय, मैं अंत में एक बात और कहना चाहूंगा कि जब मुझे बहुउद्देश्यीय परियोजनाएं एवं ऊर्जा मंत्री बनाया गया तो यहां पर एक पंप स्टोरेज की बात निकली। मैं आपसे इसलिए शेयर कर रहा हूं कि वे कोई वैज्ञानिक नहीं थे। वे लोगों से चर्चा करते थे। मैंने उनका काम करने का तरीका देखा है और इस बात को महेन्द्र सिंह जी भी जानते हैं। वे लोगों के बीच बैठकर बात करते थे और उससे कुछ ग्रैस्प करते थे। जब मैं बहुउद्देश्यीय परियोजनाएं एवं ऊर्जा मंत्री बना तो उन्होंने मुझसे कहा कि मैंने तेरे से एक बात करनी है। मैंने कहा कि बताईए आप क्या कहना चाहते हैं? तब उन्होंने कहा कि मैंने पानी ऊपर उठाना है और उससे बिजली पैदा करनी है, सिंचाई करनी है तथा जो पानी ऊपर उठाने

के लिए हम बिजली की राशि खर्च करते हैं इन तीनों पर मैं एक सिरे से काम करना चाहता हूं। मैंने यह प्रस्ताव विभाग के सामने रखा और कहा कि आप इसको देखें। मैं जब इन प्रोजैक्टों में गया तो मैंने देखा कि कभी 90 पैसे प्रति यूनिट बिजली बिक रही है, कभी 9 रुपये प्रति यूनिट बिजली बिक रही है। यह हमारी खपत के ऊपर निर्भर करता था। तब मैंने महसूस किया कि मेरे पिता जी की सोच सही है। 90 पैसे प्रति यूनिट बिजली हमें पैदा करनी पड़ती है और हमारे रेजरवायर भर चुके हैं। जब बिजली 90 पैसे प्रति यूनिट होगी तो आप उसको उठाएं और जब 9 रुपये प्रति यूनिट होगी तो आप उससे बिजली पैदा करें। अंतिम समय में, जब मेरा और पिता जी का साथ था और हम बैठे थे तो कई बार बोलते थे कि अभी मैंने आगे यह करना है। इतनी उम्र के होकर हिमाचल के अंदर अगर कोई यह बात सोचे तो शायद ऐसी शख्सियत बहुत कम होते हैं, मैं यह कहना चाहता हूं।

श्री आर0 के0 एस0 द्वारा जारी।

10.08.2022/1505/RKS/HK-1

शोकोद्गार... जारी

श्री अनिल शर्मा... जारी

राजनीति चलती रहती है। जब हम राजनीति के अखाड़े में उतरते हैं तो उसमें दाव-पेच अलग बात होती है लेकिन हमें इस समाज के उत्थान के लिए कार्य करना है।

अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बोलने का समय दिया, आपका धन्यवाद।

10.08.2022/1505/RKS/HK-2

अध्यक्ष : सदन के नेता माननीय मुख्य मंत्री एवं अन्य सदस्यों ने जो अपने शोकोद्गार स्वर्गीय सर्वश्री सुख राम जी, पूर्व सांसद एवं सदस्य, रूप सिंह चौहान, मस्त राम व श्री प्रवीण शर्मा जी के लिए प्रकट किए हैं, उसमें मैं भी अपने आपको शामिल करता हूं। यहां पर इन दिवंगत आत्माओं के जीवन वृतांत के बारे में बहुत सारी बातें कही गई। जिन माननीय सदस्यों ने इनके साथ काम किया है उनके अनुभव कथन भी यहां पर आए। पंडित सुख राम जी का बहुत लंबा राजनीतिक जीवन था। उन्होंने लगातार 8 चुनाव जीते। वे इस

विधान सभा के ही नहीं अपितु लोक सभा के भी तीन बार सदस्य रहे। उन्होंने अपने काम के आधार पर अपनी छाप बनाई है। वे हिमाचल प्रदेश के कदावर नेताओं में से एक हैं। उस समय जब हम विद्यार्थी जीवन में थे या सामाजिक संगठनों में काम करते थे या फिर भारतीय जनता पार्टी में आए तो ऐसे व्यक्तित्वों को सुनने का मन करता था। अगर संचार क्रांति के माध्यम से पूरी दुनिया को एक जगह एक टेलिफोन या मोबाइल में इकट्ठा किया गया तो उस व्यक्ति की अपने पद के प्रति क्या जिम्मेदारी थी; पूरे देश या अपने प्रदेश के लिए उनकी क्या सोच थी; विशेषकर इस पहाड़ी राज्य के लिए वे जो कर सकते थे, उन्होंने उसे करने का प्रयास किया। पहले एक पी.सी.ओ. बूथ लेने लिए भी दिल्ली में सिफारिश करनी पड़ती थी। इन विसंगतियों को तोड़ने के बाद यह सुविधा सभी प्रदेशवासियों को मिले, यह पहचान उन्होंने अपने कर्म के आधार पर बनाई। मैं यह कह सकता हूं कि हिमाचल प्रदेश के हर नेता और हर राजनीतिक पार्टी की यह सोच रहती है। अगर डॉ. वाई.एस. परमार को हिमाचल प्रदेश के निर्माता के रूप में जाना जाता है तो पंडित सुख राम जी को संचार के क्षेत्र में क्रांति लाने के लिए जाना जाता है। तदुपरांत जिन पार्टी के नेताओं को बागडोर मिली उन्होंने भी अपने कर्म व सोच के आधार पर हिमाचल प्रदेश को आगे बढ़ाने के लिए प्रयास किए। वर्ष 1998 में हमें भी इस सदन में उनके साथ बैठने, काम करने, उन्हें समझने और बातचीत करने का अवसर मिला।

श्री बी.एस. द्वारा जारी

10.08.2022/1510/बी.एस./वाई0के0/-1

अध्यक्ष जारी...

वर्ष 1998 में हमें भी इस माननीय सदन में उनके साथ बैठने का बातचीत करने का, और देखने का मौका मिला। एक लंबी पारी वाला व्यक्ति कैसा हो सकता है शायद यह शक्ल और शरीर से नहीं बल्कि वे क्या बोल रहे है, बोलने के पीछे हेतु क्या है? ये सब हमने उन पांच वर्षों में सीखा है। मैं इस बात को कहना चाहता हूं कि वे व्यक्ति दृढ़ संकल्पित, विजनरी थे। उनके मन में जो भाव था वह ही व्यवहार में था। ऐसा मैंने उनको पढ़ा और

देखा है। ऐसे व्यक्ति हमारे बीच में नहीं हैं परंतु इस विधान सभा को मंदिर में रूप में उन्होंने वर्षों तक सदस्य के रूप में रह कर पूजा है। ऐसे व्यक्ति को याद करना हमारा धर्म है जिसको हम धर्म के रूप में धारण कर रहे हैं। उनके चरणों में अपने आपको नमन करता हूं और श्रद्धासुमन अर्पित करता हूं।

दो अन्य व्यक्ति जो इस माननीय सदन में पूर्व में सदस्य रहे हैं, श्री रूप सिंह चौहान जी और मस्त राम जी उनके बारे में कुछ कहना चाहूंगा। स्वर्गीय मस्त राम जी जब कभी भी शिमला आते थे और यहां पर सत्र चलता था तो वे मेरे से जरूर मिलने आते थे। मैं यह कह सकता हूं कि मृदुभाषी सरल स्वभाव और अपने इलाके के लिए हमेशा चिंतित रहते थे। जब माननीय राष्ट्रपति जी यहां आए तो हमने सभी पूर्व विधायकों को यहां पर बुलाया था। उस समय वे मेरे कक्ष में आए और मेरा बार-बार धन्यवाद करने लगे और कहने लगे कि जो मौका आपने पूर्व में रहे निवर्तमान विधायकों को दिया है, क्योंकि निवर्तमान तो सभी को होना है। इस जन्म में हमेशा के लिए कोई नहीं है। वे बार-बार धन्यवाद करने लगे। मैंने कहा कि मेरा धन्यवाद नहीं परंतु यह हमने सोचा था कि हिमाचल प्रदेश के गठन के 50 वर्ष पूरे हो गए है और जिस विचार, पार्टी और जिन नेताओं तथा हिमाचल प्रदेश के लोगों के प्रयासों से तथा जिस नेता के हाथ में समय-समय पर बागडोर दी गई, चाहे वह एक विधायक ही है। क्योंकि वह भी 70-75 हजार लोगों का प्रतिनिधित्व करता है। उसने भी अपने जीवन का सुनहरा समय जनता को दिया है परंतु आज निवर्तमान हो गए। हमने कहा कि इस संस्था को हमें जीवित रखना है, जिंदा रखना है। उसका मान-सम्मान हमेशा रहे। मैंने कहा कि यह जिम्मेवारी मेरी नहीं इस कुर्सी की है और इस परंपरा को हमने आगे बढ़ाया है। वे उस समय बहुत प्रसन्न थे। उसमें हमारे निर्वमान पीठासीन अधिकारी और हमारे पूर्व मंत्री भी हमें मिले वे भी बहुत प्रसन्न थे। उन सब में स्वर्गीय मस्त राम जी भी एक थे।

10.08.2022/1510/बी.एस./वाई0के0/-1

यहां पर स्वर्गीय प्रवीण शर्मा जी के व्यवहार के बारे में बहुत लम्बी-चौड़ी बात बहुत से साथियों ने रखी है। हमें वर्ष 1998 में मौका मिला, वैसे तो उनसे परिचय बहुत पुराना था क्योंकि वे स्टूडेंट मूवमेंट में बड़े वरिष्ठ थे। वे आदरणीय सुरेश भारद्वाज जी के साथ के थे।

इन्होंने उस परंपरा को आगे बढ़ाया, यानी परंपरा किस तरीके से आगे बढ़ती है? यह परंपरा आचरण से आगे बढ़ती है और ऐसे व्यक्ति जहां कभी किसी कार्यक्रम में मिलते थे तो जो पुरानी बातें संजो करके रखी होती थी उसे भविष्य की पीढ़ी के साथ सांझा करते थे। कई बार ऐसा होता है कि व्यक्ति समझने लगता है कि हमने ही सब कुछ किया है। निवर्तमान में कुछ नहीं किया। ऐसा शायद मन और दिमान में आ जाता है। प्रवीण शर्मा जी ने छोटी सी आयु में बहुत कुछ हासिल कर लिया था। यहां पर उनकी मूछों का जिक्र हुआ। वे हमेशा मूछों की लाज रखते थे। लोग उनसे डरते थे। घर किसको प्यारा नहीं होता

श्री एन0 जी0 द्वारा जारी...

10-08-2022/1515/वाई.के.-एन.जी./1

अध्यक्ष जारी.....

उस समय माता-पिता भी बच्चों को रोकते थे और कहते थे कि तुम बड़े भगत सिंह बन रहे हो। देश में ऐसे हज़ारों लोग थे और उनमें से हिमाचल के चंद लोग ही थे। जिनमें से एक स्वर्गीय श्री प्रवीण शर्मा जी भी थे। वे रहने वाले अम्ब (चिन्तपूर्णी) के थे और धर्मशाला में पैदा हुए थे। उनकी शिक्षा-दिक्षा धर्मशाला में ही हुई थी। वे जज्बाती तो बहुत थे और उन्होंने कहा कि इस काले कानून का और कोई विरोध करे-न-करे लेकिन मैं तो करूंगा। उनका एक बार नहीं बल्कि दो बार पुलिस रिमांड हुआ था। इन सभी बातों के कारण ही ऐसे व्यक्तियों को जाना जाता है। मैं कह सकता हूं कि कोई भी पार्टी हो और उसकी कोई भी विचारधारा हो लेकिन उसमें काम करने वाले लोग कैसे हैं, क्या उन लोगों के व्यवहार में उस पार्टी की विचारधारा झलकती है और स्वर्गीय श्री प्रवीण शर्मा का व्यवहार बोलता था। वे अपने विचारों को सांझा करते थे, जानकारियों का आदान-प्रदान किया करते थे और हमेशा आगे बढ़कर के हिस्सा लेते थे। उनके व्यवहार में अपनापन झलकता था। यदि कोई व्यक्ति किसी कारण पीछे रह जाता था तो उसका साथ देकर उसे अपने साथ खड़ा कर

देने का स्वभाव उनमें था। मैं कहना चाहता हूं कि स्वर्गीय श्री प्रवीण शर्मा जी जहां भी रहे विचार के साथ रहे। उन्हें सरकार व संगठन में जो भी जिम्मेदारी दी गई उन्होंने उसका पूरा आदर व सम्मान किया। उन्होंने सभी को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। आज श्री प्रवीण शर्मा जी हम सब के बीच में नहीं हैं। उनकी उम्र बहुत ज्यादा नहीं थी। समय-समय पर मेरी उनसे बात होती रहती थी। पिछले कुछ वर्षों से उन्हें कुछ बीमारियों ने जकड़ लिया था और वे उनसे लड़ाई लड़ रहे थे। उनका डायलिसिस भी हो रहा था। उनके परिवारजनों ने बताया था कि अंतिम समय वे भजन सुन रहे थे और सुबह जब उनके सहयोगी ने उनका मोबाइल देखा तब भी भजन ही चले हुए थे। वे सोशल मीडिया के माध्यम से लोगों से जुड़े हुए थे और अपने विचारों को सांझा किया करते थे।

10-08-2022/1515/वाई.के.-एन.जी./2

मैं व्यक्तिगत रूप से कह सकता हूं कि जिस अवस्था में वे गए हैं वह विचार के लिए बहुत बड़ा घाटा है और उसकी क्षतिपूर्ति कभी भी नहीं हो सकती। क्योंकि व्यक्ति के निर्माण में कुछ माह नहीं बल्कि वर्षों लगते हैं और उनमें स्वर्गीय श्री प्रवीण शर्मा जी भी शामिल थे।

माननीय सदन के नेता एवं मुख्य मंत्री श्री जय राम ठाकुर जी ने शोकोद्गार का प्रस्ताव दिवंगत विभूतियों स्वर्गीय श्री सुख राम, स्वर्गीय श्री रूप सिंह चौहान, स्वर्गीय श्री मस्त राम और स्वर्गीय श्री प्रवीण शर्मा, पूर्व सदस्यों को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए लाया है। सदन के अनेक माननीय सदस्यों ने इसमें भाग लिया है और उनमें मैं भी अपने आप को शामिल करता हूं। शोक संतप्त परिवारों के प्रति अपनी संवेदनाएं प्रकट करता हूं और दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए कामना करता हूं। इस माननीय सदन की भावनाओं को शोक संतप्त परिवारों तक पहुंचा दिया जाएगा।

अब मैं सभी माननीय सदस्यों से निवेदन करूंगा कि वे दिवंगत आत्माओं को श्रद्धासुमन अर्पित करने के लिए अपने-अपने स्थान पर कुछ क्षण के लिए मौन खड़े हो जाएं।

(माननीय सदन में उपस्थित सभी सदस्य अपने-अपने स्थान पर कुछ क्षण के लिए मौन खड़े हुए।)

श्री एस.एस. द्वारा जारी.....

10.08.2022/1520/SS-AG/1

माननीय अध्यक्ष क्रमागत :

अब सदन के नेता द्वारा वक्तव्य दिया जाएगा। ...व्यवधान... मुकेश अग्निहोत्री जी, मैं आपको सुनूंगा, आप कृपया बैठें। मैं पहले अपनी प्रोसिंग्ज़ पूरी करता हूं। आप कृपया बैठें, मैं आपको सुनूंगा। आज प्रश्नकाल समाप्त हो गया है तथा आज के प्रश्न सदन के पटल पर रखे हुए समझे जाएं। ...व्यवधान... आप सदन की कार्यवाही तो माननीय सदन के नेता को रखने दीजिए। माननीय नेता प्रतिपक्ष ज़रा सदन की कार्यवाही रखने दीजिए। ...व्यवधान... सदन की कार्यवाही चलने दीजिए। मैं आपकी बात सुनूंगा।

श्री मुकेश अग्निहोत्री (हरोली) : अध्यक्ष महोदय, आज प्रातः समय पर हम मुख्य मंत्री और कांउसिल ऑफ मिनिस्टर्ज के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव नियम-278 के तहत लेकर आए हैं। यह सरकार हिमाचल प्रदेश के लोगों का विश्वास खो चुकी है। इस सरकार में किसी का विश्वास नहीं है। पूरी अराजकता का माहौल है। पूरे प्रदेश में हाहाकार मचा हुआ है। पूरी मशीनरी ब्रेक डाउन हो गई है। ...व्यवधान... मुख्य मंत्री और मंत्रियों को अपनी कुर्सी पर बने रहने का अधिकार नहीं है। सरकार पूरी तरह से विफल हो गई है। इसलिए मुख्य मंत्री को अपनी कुर्सी छोड़ देनी चाहिए, इस्तीफा दे देना चाहिए। ऐसा माहौल हिमाचल प्रदेश में बना हुआ है। यहां महंगाई का क्या हाल है, बेरोज़गारों का क्या हाल है, माफिया का क्या हाल है, भ्रष्टाचार चल रहा है। महंगाई ने लोगों की कमर तोड़ दी है। फिजूलखर्ची ने हालात खराब कर दिए हैं। झूठी घोषणाएं की जा रही हैं। भर्तियां फर्जीवाड़े से हुई हैं। सारा हिमाचल सड़कों पर है। ...व्यवधान... लाखों लोग सड़कों पर हैं इसलिए हमने यह मोशन दिया है। हिमाचल और हिमाचल के हितों को बेचा जा रहा है। इसलिए

हमने जो अविश्वास प्रस्ताव दिया है सबसे पहले उसको टेक-अप किया जाए। 23 मेम्बर्ज ने यह मोशन दिया है। यहां 23 के 23 सारे विधायक मौजूद हैं। ...व्यवधान...

(विपक्ष के सभी माननीय सदस्य अपने-अपने स्थान पर खड़े हो गए।)

10.08.2022/1520/SS-AG/2

अध्यक्ष महोदय, बुरा हाल हो गया है। दुर्घटनाएं हो रही हैं, प्रदेश में रेप हो रहे हैं, कोई भी सुरक्षित नहीं है। सारा हिमाचल तबाह हो रहा है। ...व्यवधान... पुलिस भर्ती में क्या हुआ है? हमने मोशन पूरे नियम के तहत दिया है। 23 मेम्बर्ज ने इस सरकार के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव दिया है। यह सरकार फेल हो गई है।

अध्यक्ष : माननीय सदस्य बैठिए। अब इस चेयर को सुन लीजिए। ...व्यवधान... माननीय सदस्य, सुनिए। आप इस चेयर को सुन लीजिए। आज दिनांक 10.08.2022 को प्रातः 9.50 पर विपक्ष के माननीय सदस्यों व

जारी श्रीमती के0एस0

10.08.2022/1525/केएस/डीसी/1

अध्यक्ष जारी---

विपक्ष के माननीय सदस्यों व कम्युनिस्ट पार्टी के माननीय सदस्य से नियम-278 के अंतर्गत अविश्वास प्रस्ताव की सूचना प्राप्त हुई है। मैं इस प्रस्ताव पर विचार करुंगा तथा अपना विनिश्चित दूंगा। ...व्यवधान आप बैठिए। जो आपने प्रस्ताव दिया है, इंतज़ार करें, उस पर मैं विनिश्चित दूंगा। ...व्यवधान आप बैठिए। आपकी बात आ गई। माननीय सदस्य कृपया बैठिए। ... व्यवधान... कृपया बैठिए। ...व्यवधान

(विपक्ष के सभी माननीय सदस्य अपने-अपने स्थान पर खड़े हो कर नारेबाजी करने लगे)

अध्यक्षः माननीय सदस्य, कृपया बैठिए। सदन चलने दीजिए। ...व्यवधान मैंने आपको रूलिंग दे दी है। ...व्यवधान मेरा सत्ता पक्ष के माननीय सदस्यों से भी निवेदन है कि विपक्ष के माननीय सदस्य भी बैठ गए हैं इसलिए कृपया आप भी शांत रहे ताकि सदन की कार्यवाही आगे चल सके। ...व्यवधान

(विपक्ष के सभी माननीय सदस्य अपने-अपने स्थान पर खड़े हो कर नारेबाजी करने लगे)

माननीय सदस्य कृपया बैठिए। रैलियों वाली भाषा यहां पर न बोलें क्योंकि यह विधान सभा है और विधान सभा में थोड़ा स्तर रखें। मैंने आपको विनिश्चित कर दिया है कि जो नोटिस मुझे सुबह प्राप्त हुआ है, ...व्यवधान मैं समय की बात नहीं कर रहा हूं, मैं उस पर अपनी व्यवस्था दूंगा, यह मैं आपको कहना चाहता हूं। ...व्यवधान मैं व्यवस्था दूंगा, आप बैठिए। कितना समय होगा, क्या समय होगा, कैसे समय होगा, मैं यह व्यवस्था दूंगा, यह मैं आपको आश्वस्त कर रहा हूं। ...व्यवधान

श्री मुकेश अग्निहोत्रीः व्यवस्था तो आपको अभी देनी है। अध्यक्ष महोदय, एक-तिहाई बहुमत को इस सरकार पर विश्वास नहीं है। आपने हमारा नोटिस एक्सैप्ट किया है।

श्रीमती अ0व0 द्वारा जारी---

10-08-22/1530/अ0व0/ए0एस0/1

श्री मुकेश अग्निहोत्री क्रमागत

अध्यक्ष महोदय, आपने हमारा नोटिस एक्सैप्ट किया है। हमने सदन में एक-तिहाई बहुमत से ....व्यवधान आप हैड काउंट करवाइए। ...व्यवधान

अध्यक्ष : अब इस माननीय सदन की बैठक 15 मिनट यानी 03.45 बजे(अपराह्न) तक स्थगित की जाती है।

345 बजे टी सी द्वारा जारी

10.08.2022/1600/TCV/DC/1

(सदन की कार्यवाही 16.00 बजे पुनः आरम्भ हुई।)

व्यवस्था का प्रश्न

श्री मुकेश अग्निहोत्री (हरोली) : अध्यक्ष महोदय, आप पहले हमारी बात सुन लीजिए। ...व्यवधान

अध्यक्ष : आप बैठे, जो आप पढ़ कर सुनना चाहते हैं उसकी इस चेयर को जानकारी है। आप बैठे। यह चेयर नियम के तहत चलती है।

श्री मुकेश अग्निहोत्री : अध्यक्ष महोदय नियम- 278 के तहत हमने आपको जो प्रस्ताव मूव किया है इसमें नियम बड़े क्लीयर है ...व्यवधान और आपने मोशन को मूल करवा दिया है। इसमें आगे कहा गया है कि प्रस्ताव नियमानुसार है तो वे सभा में प्रस्ताव पढ़कर सुनाएंगे और उन सदस्यों से जो अनुमति देने के पक्ष में हों, अपने स्थान पर खड़े होने के लिए प्रार्थना करेंगे और यदि कुल संख्या के 1/3 सदस्य खड़े हो जाए तो अध्यक्ष सूचित करेंगे कि अनुमति दी जाती है। ये पार्ट आप पूरा करें उसके पश्चात् इस पर आगे चर्चा करना आपके विवेक पर है। पहले आप इसका फर्स्ट पार्ट तो करवाएं या फिर नियम 279 के तहत मुख्य मंत्री और मिनिस्टर ऑफ कांउसिल रिजाइन कर दें। यह इसमें बड़ा क्लीयर है।

एन0एस0 द्वारा संसदीय कार्य मंत्री जारी

10-08-2022/1605/NS/DC/1

अध्यक्ष : संसदीय कार्य मंत्री जी आप क्या कहना चाहेंगे?

संसदीय कार्य मंत्री : अध्यक्ष महोदय, माननीय नेता प्रतिपक्ष ने मंत्रिमंडल के खिलाफ़ जो अविश्वास प्रस्ताव प्रस्तुत किया है उसको आप सदन की अनुमति के लिए रखेंगे। हमारा निवेदन है कि आप उसको सदन की अनुमति के लिए रख दें और तुरंत बहस के लिए

टाइम फिक्स कर दें। विद इन टाइम उसको डिसाइड कर दें ताकि जनता को पता चल जाए कि कॉन्फिडैंस जय राम ठाकुर जी की सरकार में है या इनके बीच में है। यह हमें स्वीकार है। ...व्यवधान...

अध्यक्ष : माननीय मुख्य मंत्री जी आप अपना स्पष्टीकरण दें। ...व्यवधान... प्लीज सुनिए। मैंने आपकी बात सुनी है और मैं सारी प्रक्रिया पूरी करूंगा। ...व्यवधान... आप सुनिए।

मुख्य मंत्री : ...व्यवधान... अध्यक्ष महोदय, जो यहां विपक्ष की ओर से प्रस्ताव लाया गया है, उसमें हम कहां आपत्ति कर रहे हैं। हमारी सरकार है, मजबूत है, मैजोरिटी में है। हाल ही में महामहिम राष्ट्रपति के चुनाव के लिए वोट पड़े हैं तथा 45 वोट पक्ष में पड़े थे और 22 वोट विपक्ष के तथा आपका एक वोट गायब है।...व्यवधान...

अध्यक्ष : मुख्य मंत्री जी अपना स्पष्टीकरण दे रहे हैं, आप सुन लीजिए।

मुख्य मंत्री : वोट किसका रिजेक्ट हुआ है आप उसको ढूंढो। ...व्यवधान... आपको आईना राष्ट्रपति के चुनाव में दिख गया है।

अध्यक्ष : माननीय सदस्य, बैठिए। चर्चा को आगे बढ़ने दीजिए। ...व्यवधान... बैठिए, प्लीज बात सुनिए। ...व्यवधान... देखिए, अगर आपने कार्यवाही नहीं चलने देनी है तो मैं स्थगित करूंगा। ...व्यवधान... बात सुनो। मैं करवाऊंगा। यहां से मुख्य मंत्री जी उत्तर दे रहे हैं आप उत्तर तो सुनिए। ...व्यवधान... आप सदन के नेता का स्पष्टीकरण सुन लीजिए। मैं आपकी बात सुनूंगा। ...व्यवधान...

मुख्य मंत्री : अध्यक्ष महोदय, ऐसा है ...व्यवधान... मुझे समझ में नहीं आ रहा है कि

श्री आर0 के0 एस0 द्वारा जारी

10.08.2022/1610/RKS/HK-1

मुख्य मंत्री जारी...

हमारे ये मित्र इतनी जल्दबाजी में क्यों हैं? जो व्यवहार आप यहां दिखा रहे हैं, वह ठीक नहीं है। अब सरकार का तीन महीने का कार्यकाल शेष है और उसके बाद चुनाव होने हैं। हम चुनाव में आपको झेलेंगे। ...व्यवधान... आप इतनी जल्दी में क्यों है? हमने देखा है कि जो जिस चीज़ के जल्दबाजी करता है वह चीज़ उसे इतनी जल्दी हासिल नहीं होती।

...व्यवधान... हमें कोई आपत्ति नहीं है। ...व्यवधान... हमारी इस हाउस में मेजोरिटी है। हमारी संख्या आपकी संख्या से दोगुनी है। आप अपने आपको 23 गिन रहे हैं लेकिन महामहिम राष्ट्रपति के चुनाव में आपकी संख्या 22 क्यों रही? ...व्यवधान... प्रश्न यह है कि आपका एक सदस्य कहां गया? ...व्यवधान...

अध्यक्ष : सदन के नेता इस सदन को अवगत करवा रहे हैं, आप कृपया बैठ जाइए। ...व्यवधान... यह चेयर परमिट कर रही है। मुख्य मंत्री जी आप अपनी बात रखिए। ...व्यवधान...

मुख्य मंत्री : अध्यक्ष महोदय, इन्होंने इस सदन को एक तरह का मछली बाजार बना दिया है। यहां पर प्रतिस्पर्धा लगी हुई है कि अगर वह बोल रहा है तो मुझे भी बोलना है। ...व्यवधान... जैसा संसदीय कार्य मंत्री जी ने कहा कि सरकार हर बात का जवाब देने के लिए तैयार है। अध्यक्ष जी, जो मोशन इन्होंने मूव किया है उस पर आप अपनी व्यवस्था दे और हम उस व्यवस्था के मुताबिक अपना जवाब देंगे।

अध्यक्ष : नेता प्रतिपक्ष जी आप इस चेयर पर विश्वास करें। जब सदन के नेता और संसदीय कार्य मंत्री उत्तर दे रहे हैं तो आप कह रहे हैं कि रेजोल्यूशन मूव करें। आप कम-से-कम इस चेयर पर विश्वास रखें। ...व्यवधान... आप मेरी बात सुनिये। आज दिनांक 10.08.2022 को प्रातः 9.50 पर कांग्रेस विधायक दल एवं सी.पी.आई.(एम) के माननीय सदस्य से नियम-278 के अंतर्गत अविश्वास प्रस्ताव की सूचना प्राप्त हुई है।

10.08.2022/1610/RKS/HK-2

जो प्रस्ताव प्रस्तुत हुआ है उसे मैं मूव कर रहा हूंः- "This House expresses no confidence in the Council of Ministers as the Government has failed on all fronts." यह मैं प्रस्तुत करता हूं। अब नेता प्रतिपक्ष विपक्ष के हैड काउंट्स करें।

(विपक्ष द्वारा हैड काउंट्स किए गए।)

श्री बी.एस. द्वारा जारी

10.08.2022/1615/बी.एस./वाई0के0/1

(कांग्रेस विधायक दल के माननीय सदस्यों ने खड़े होकर बारी-बारी 1,2,3,4,5,6,7,8,9,10,11,12,13,14,15,16,17,18,19,20,21,22 व 23 तक अप**ने नंबर कॉउन्ट किए** तथा अपने-अपने स्थान पर बैठ गए)

श्री मुकेश अग्निहोत्री : अध्यक्ष महोदय, यह नियम में नहीं है। ...व्यवधान

अध्यक्ष : यह एक व्यवस्था है और पीठ ने व्यवस्था दी है। इस माहौल को ठीक करने के लिए इस पीठ से व्यवस्थाएं हमेशा दी जाती हैं।

नियम-278 के अंतर्गत प्रतिपक्ष के सदस्यों द्वारा लाए गए प्रस्ताव को मैं स्वीकार करता हूं तथा इसे कल 11.08.2022 को 11 बजे पूर्वाह्न चर्चा हेतु लिया जाएगा तथा शाम को ठीक तीन बजे सदन के नेता माननीय मुख्य मंत्री जी चर्चा का उत्तर देंगे। ...व्यवधान कृपया बैठ जाइये।

श्री मुकेश अग्निहोत्री (हरोली) : अध्यक्ष महोदय, यह जो प्रस्ताव यहां पर आया है इस पर आपने केवल चार घंटे चर्चा के लिए रखे हैं जोकि बहुत ही कम समय है। हमारे दल के सभी माननीय सदस्यों ने इस चर्चा में भाग लेना है। यह कोई औपचारिकता मात्र नहीं है। हमारा काम निवेदन करना है आप ही बताइये कि चार घंटे में किसी मान्य सदन में अविश्वास प्रस्ताव पर चर्चा होती है? संसदीय कार्य मंत्री जी, आप संसद के सदस्य भी रहे हैं। आप बताइए कि चार खंटे में कौन सी बहस होती है? अध्यक्ष महोदय, चार घंटे कोई भी समय नहीं है। चाहे रात के 12 बजे जाएं आप सदन के समय को बढ़ाइए। हमें इस पर चर्चा लेनी है और फैसला करना है। आप इस पर विचार करके पुनः अपनी रूलिंग दें।

अध्यक्ष : माननीय मुख्य मंत्री जी कुछ कहना चाह रहे हैं, कृपया सुनिए।

मुख्य मंत्री : अध्यक्ष महोदय, मैं देख रहा हूं कि किस तरह से हमारे विपक्ष के सदस्य आपके आसन के खिलाफ बात करने की कोशिश कर रहे हैं। एक व्यवस्था आपने दी

श्री एन0 जी0 द्वारा जारी...

मुख्य मंत्री जारी.....

अध्यक्ष महोदय, आपने एक व्यवस्था दी है। विपक्ष के लोगों को संतोष तो इस बात पर ही हो गया होगा कि इनकी मांग मान ली गई और जिसके लिए इन लोगों ने ताली भी बजा दी है। आप लोग यह तय नहीं कर सकते कि अध्यक्ष जी को किस चर्चा के लिए कितना समय अलॉट करना है। अध्यक्ष महोदय, इस प्रकार से अनुमति नहीं दी जा सकती है और हर बात को ऐसे करो, वैसे करो, यह सम्भव नहीं है। मैं विपक्ष के लोगों से इतना ही कहना चाहता हूं कि आप अपने स्पीकर्स निर्धारित कीजिए और हम 04.00 बजे आपको जवाब देंगे। अध्यक्ष जी ने 03.00 बजे तक का समय तय किया है और हम 04.00 बजे तक आपको जवाब दे देंगे। ...व्यवधान... यहां से भी बोलेंगे और वहां से भी बोलेंगे।...व्यवधान... इसमें तो प्रश्नकाल को भी स्थगित कर दिया गया है। ...व्यवधान... ऐसा तो नहीं है कि यहां जनसभा चली हुई है और उसमें भाषण देते रहेंगे। अध्यक्ष महोदय, सदन तो नियमों के अनुसार ही चलेगा और आपने व्यवस्था दे दी है। विपक्ष को उसे स्वीकार करना चाहिए।...व्यवधान...

श्री मुकेश अग्निहोत्री (हरोली) : अध्यक्ष महोदय, आपने 11.00 बजे से 03.00 बजे तक का समय दिया है जिसमें से 01.00 घण्टे का तो लंच ही होगा। इतने कम समय में चर्चा कैसे हो सकती है? ...व्यवधान...

अध्यक्ष : माननीय सदस्य श्री हर्षवर्धन चौहान जी आप बोलिए।

श्री हर्षवर्धन चौहान (शिलाई) : अध्यक्ष महोदय, आपका धन्यवाद क्योंकि आपने अविश्वास प्रस्ताव को स्वीकार किया है। लोकतंत्र में सबसे बड़ा हथियार अविश्वास प्रस्ताव होता है और पांच साल में एक बार इसका इस्तेमाल किया जाता है। अध्यक्ष महोदय, माननीय सदन में जब हम विभिन्न विषयों पर सामान्य चर्चा करते हैं तो उसमें भी 2 से 3 घण्टे लग जाते हैं। "Motion of No Confidence in Council of Ministers" लाया गया है और इसमें सरकार की पांच साल की कार्यप्रणाली पर चर्चा होनी है। इसके अलावा प्रदेश के ज्वलंत मुद्दे, जैसे महंगाई, बेरोज़गारी, विकास, भ्रष्टाचार जैसे अनेक ऐसे मुद्दे हैं जिन पर सभी 68 विधायकों ने बोलना है।

10-08-2022/1620/वाई.के.-एन.जी./2

आपके द्वारा दिए गए समयानुसार तो एक विधायक को बोलने के लिए 5 मिनट का समय भी नहीं मिलेगा। अध्यक्ष महोदय, यह सबसे महत्वपूर्ण विषय है और आपसे आग्रह है कि इसके लिए अन्य कार्यसूची को पेडिंग रख दिया जाए। हर माननीय सदस्य को अपने विधान सभा क्षेत्र से सम्बंधित मामलों पर इसमें बोलने का मौका मिलना चाहिए। अध्यक्ष महोदय, मेरा निवेदन है कि इस चर्चा का समय बढ़ाया जाए और माननीय विधायकों को अपनी पूरी बात रखने का मौका दिया जाए। यह आवाज़ विधायकों की आवाज़ नहीं होगी बल्कि ये जनता की आवाज़ होगी जिसे हम आपके माध्यम से सरकार को सुनाना चाहते हैं।...व्यवधान...

अध्यक्ष : माननीय सदस्य श्रीमती आशा कुमारी जी आप बोलिए।

श्रीमती आशा कुमारी (डलहौजी) : अध्यक्ष महोदय, आपने मुख्य मंत्री जी को जवाब देने के लिए 2 घण्टे का समय दिया है क्योंकि सदन का समय 05.00 बजे तक होता है। अध्यक्ष महोदय, यह तर्कसंगत नहीं है। अध्यक्ष महोदय, यदि आप यह भी कर दें कि केवल विपक्ष के सदस्य बोलेंगे तब भी बात बन जाती है। ...व्यवधान... सुन लीजिए। ...व्यवधान... जब दोनों ओर से बोलना है तो समय को ओर बढ़ा दीजिए। ...व्यवधान... यह इनका प्रस्ताव नहीं है, यह हमारा प्रस्ताव है। ...व्यवधान... यह प्रस्ताव हम सब ने मूव किया है। अध्यक्ष महोदय, नियमों के अनुसार every mover is allowed to speak. We all are movers of this motion so we all have to speak. All 23 Members of the Opposition have to be given time to speak. In 3 hours what time you will give us to speak. So, please extend the House, और इनको भी बोलने दो तब हमें कोई आपत्ति नहीं है। ...व्यवधान... अध्यक्ष महोदय, हमारे सभी 23 मूवर्स बोलेंगे और मुझे विश्वास है कि आप सभी को उचित समय देंगे। ...व्यवधान...

अध्यक्ष : मुख्य मंत्री जी कुछ कहना चाहते हैं।

मुख्य मंत्री....श्री एस.एस. द्वारा जारी.....

10.08.2022/1625/SS-YK/1

मुख्य मंत्री : अध्यक्ष महोदय, वहां स्थिति बहुत विचित्र है क्योंकि एक तो चार-चार कार्यकारी अध्यक्ष हो गए हैं, कम्पेन कमेटी के इंचार्ज हो गए हैं। अब यहां प्रतिस्पर्द्धा हो रही है कि चर्चा को कैसे लम्बा किया जाए। अध्यक्ष महोदय, समय आप निर्धारित करेंगे। समय निर्धारित करने के लिए सत्तापक्ष या विपक्ष की ओर से डायरेक्शन का कोई औचित्य नहीं बनता।

दूसरी बात, मैं यह भी कहना चाह रहा हूं कि जब समय निर्धारित किया जाता है तो उसमें ही जितने लोगों ने बोलना है समय बांटकर बोला जाता है। हमेशा बोला जाता है और यही होता है। अध्यक्ष महोदय, उसके बाद दो दिन और हाउस है, अन्य नियमों के तहत जहां आप माननीय सदस्यों को महत्वपूर्ण विषय पर बोलना है जिस पर आप लोग चर्चा चाह रहे हैं उसमें भी आपको अपनी बात कहने का अधिकार है। लेकिन चेयर पर इस तरह से दबाव डालना कि इतना समय हम बोलेंगे तो यह सम्भव नहीं है। अध्यक्ष महोदय, मुझे लगता है कि इस बात को लेकर बड़ा स्पष्ट कहना चाहिए कि जो आपने समय निर्धारित किया है उसका सभी सम्मान करें। कितने लोगों ने बोलना है, हमारा दल बैठकर तय करेगा कि कितने लोग बोलेंगे और इनके लोग अपने दल में बैठकर यह तय करें, इसका यही एक तरीका है तथा आज से पहले भी यही व्यवस्था इस माननीय सदन में चलती रही है।

अध्यक्ष : इस पर और अधिक चर्चा नहीं होगी। माननीय सदस्य, समय पर अब मुझे कहना है इसलिए आप बैठें। ...व्यवधान... माननीय सदस्य, आप बैठिए।

10.08.2022/1625/SS-YK/2

श्री राम लाल ठाकुर (श्री नैना देवीजी) : मेरा आपसे एक निवेदन है कि अगर इस चीज़ को देखें जैसे माननीय मुख्य मंत्री जी ने कहा कि अन्य रूल्ज के अंतर्गत चर्चा हो सकती है तो हमने रूल-278 के अंदर अविश्वास प्रस्ताव दिया है और चर्चा मांगी है। हम किसी दूसरे

रूल की बात नहीं कर रहे हैं। दूसरे रूल में भी चर्चा होती है वह हमारे को भी मालूम है। लेकिन मेरा आपसे एक निवेदन है कि एक तरफ 23 सदस्य मूवर्स हैं और सारे 23 सदस्य बोलेंगे। फिर उसके बाद रूलिंग पार्टी वाले भी बोलेंगे। मैं यह नहीं बोल रहा हूं कि आप न बोलें, आप भी बोलेंगे। ...व्यवधान...

अध्यक्ष : माननीय सदस्य, आप बैठिए। मैं व्यवस्था देता हूं।

श्री राम लाल ठाकुर : सर, मुझे बोलने तो दो। ये बीच में क्यों टोक रहे हैं। मैं यह बोल रहा हूं कि दो घंटे तो चीफ मिनिस्टर साहब ने लेने हैं और आप 23 मूवर्स को सिर्फ तीन घंटे दे रहे हैं, इसका क्या औचित्य है? कृपा करके आप इस समय को बढ़ा दीजिए।

अध्यक्ष : माननीय सदस्य, आप बैठिए। काफी बात हो गई। आप कह रहे हैं कि 23 सदस्यों ने विपक्ष की ओर से अपनी बात रखनी है और 43 सदस्य सत्तापक्ष में हैं। इसके अलावा दो निर्दलीय हैं, अपनी बात तो सभी को रखनी है और पूरे हाउस के लिए समय एक जैसा ही है। अब सत्तापक्ष और विपक्ष के जो भी सदस्य हैं ...व्यवधान... सुनिए, यह शब्दों में मिलाना नहीं होता है बल्कि चेयर से सारी व्यवस्थाएं चलती हैं। इसलिए सत्तापक्ष की ओर से भी एक सूची आ जाए और समय निर्धारित हो जाए तो ठीक रहेगा। माननीय विपक्ष के नेता आपके यहां से भी ये सूची आ जाए और किस माननीय सदस्य को किस विषय पर बोलना है वह स्पष्ट हो ताकि विषयों की पुनरावृत्ति न हो क्योंकि यह चार दिन का सत्र है और चार दिनों में ही इस सत्र को हमने खत्म करना है। आपकी तरफ से नोटिस आया, उसको हमने स्वीकार किया। इसलिए माननीय सदस्य कल प्रातः ठीक 11.00 बजे इस प्रस्ताव पर चर्चा शुरू होगी और 3.00 बजे सदन के नेता उस चर्चा का उत्तर देंगे। इस बात का ध्यान रखें ...व्यवधान... सुनिए, मेरी बात को सुनो तो सही।

10.08.2022/1625/SS-YK/3

श्री मुकेश अग्निहोत्री : अध्यक्ष महोदय, ऐसे चर्चा से नहीं भागा जाता। यह हाउस पहले भी रात के 11.00 या 12.00 बजे तक चलता रहा है। ...व्यवधान...

अध्यक्ष : आप मेरी बात सुनिए, नियमों के तहत ही चर्चा होगी।

जारी श्रीमती के0एस0

10.08.2022/1630/केएस/एजी/1

...व्यवधान

अध्यक्षः आप मेरी बात सुनिए, नियमों के तहत चर्चा होगी, आपको समय दिया जा रहा है। प्रश्नकाल स्थगित कर दिया है। कृपया बैठिए। ...व्यवधान डरने या न डरने की तो बात ही नहीं है। जो आपने मोशन मूव किया था उसको मैंने एक्सैप्ट किया है। आप चर्चा में हिस्सा लीजिए। ...व्यवधान कृपया बैठिए।

श्री मुकेश अग्निहोत्रीः अध्यक्ष महोदय, नो कॉंफिडेंस मोशन को किसी परिधि में नहीं बांधा जा सकता। आप रात के 12.00 बजे तक चर्चा करवाओ। ...व्यवधान

अध्यक्षः इसीलिए तो हमने इसको स्वीकार किया है। आपके 23 सदस्य बोलें लेकिन बड़ा लम्बा भाषण न दे कर विषय पर बोलें। ... व्यवधान प्लीज़ बैठिए। माननीय सदस्य सुनिए, अगर आप 23 में से 3 बोलना चाहते हैं तो 20 लोगों का समय आप ले लीजिए। वह आपके ऊपर निर्भर करता है। सत्ता पक्ष के अगर 43 में से 14 सदस्यों ने बोलना है तो आप भी समय विभाजित कीजिए। सत्ता पक्ष व विपक्ष यह खुद तय कर लें। इसलिए मेरी रूलिंग को आप स्वीकार करिए और ठीक 11.00 बजे चर्चा शुरू होगी। 3.00 बजे मुख्य मंत्री जी पूरी चर्चा का उत्तर देंगे, मैं यह कहना चाहता हूं। ... व्यवधान

श्री मुकेश अग्निहोत्रीः अध्यक्ष महोदय, आप संरक्षक हैं, आपको विपक्ष को संरक्षण देना है। आपने इजाज़त दी, हम आपके आभारी हैं लेकिन चर्चा पूरी करवाएं। आप रात के 12.00 बजे तक चर्चा करवाएं और सरकार को निर्देश दें कि चर्चा में हिस्सा लें।

अध्यक्षः माननीय सदस्य श्री लखनपाल जी बैठिए। सुखविन्द्र जी, अग्निहोत्री जी ने जो बोल दिया है अब आप उसको स्वीकार कर लो। ऐसा ठीक नहीं लगता है। ...व्यवधान आशा कुमारी जी ने भी ठीक कहा है।

10.08.2022/1630/केएस/एजी/2

साप्ताहिक शासकीय कार्यसूची बारे वक्तव्य

अध्यक्षः अब माननीय मुख्य मंत्री माननीय सदन को इस सप्ताह की शासकीय कार्यसूची से अवगत करवाएंगे।

मुख्य मंत्रीः माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी अनुमति से माननीय सदन को इस सप्ताह की शासकीय कार्यसूची से अवगत करवाता हूं जो कि इस प्रकार हैः-

बुधवार, 10 अगस्त,2022-शोकोद्गार/ शासकीय एवं विधायी कार्य

वीरवार, 11 अगस्त,2022- शासकीय एवं विधायी कार्य,

अब क्योंकि कल के लिए व्यवस्था और बदल गई है। इस पर चर्चा होगी इसलिए कल जो गैर सरकारी सदस्य कार्य दिवस था, उसमें थोड़ा सा परिवर्तन हो जाएगा।

शुक्रवार, 12 अगस्त, 2022 शासकीय एवं विधायी कार्य,

शनिवार, 13 अगस्त, 2022 शासकीय एवं विधायी कार्य।

10.08.2022/1630/केएस/एजी/3

स्वीकृत विधेयक सभा पटल पर

अध्यक्षः अब सचिव विधान सभा सदन द्वारा पारित उन विधेयकों की एक-एक प्रति सभा पटल पर रखेंगे, जिसे सदन द्वारा पारित किए जाने के उपरांत महामहिम राज्यपाल महोदय की स्वीकृति प्राप्त हो चुकी है।

सचिवः अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी अनुमति से उन विधेयकों की प्रति सभा पटल पर रखता हूं जिन पर माननीय राज्यपाल महोदय की स्वीकृति प्राप्त हो चुकी हैः-

(1) हेमाचल प्रदेश विनियोग विधेयक, 2022 (2022 का अधिनियम संख्यांक 7);
(2) हेमाचल प्रदेश विनियोग(संख्यांक 2) विधेयक, 2022 (2022 का अधिनियम संख्यांक 8);
(3) हेमाचल प्रदेश स्लम वासी(साम्पत्तिक अधिकारी) विधेयक, 2022 2022 का अधिनियम संख्यांक 9);

(4) हिमाचल प्रदेश नगर निगम (संशोधन) विधेयक, 2022 (2022 का अधिनियम संख्यांक 10); और
(5) हेमाचल प्रदेश भू-राजस्व (संशोधन) विधेयक, 2022 (2022 का अधिनियम संख्यांक 11)।

10.08.2022/1630/केएस/एजी/4

अध्यादेश

अध्यक्षः अब माननीय मुख्य मंत्री भारत के संविधान के अनुच्छेद 213 (1) के परन्तुक के अन्तर्गत राज्यपाल, हिमाचल प्रदेश, द्वारा दिनांक 20.05.2022 को प्रख्यापित, हिमाचल प्रदेश के कतिपय प्रवर्गों के वेतन और भत्तों पर आयकर का संदाय अध्यादेश, 2022 (2022 का अध्यादेश संख्यांक 2) की प्रति उन परिस्थितियों के स्पष्टीकरण के कथन सहित जिनके कारण उक्त अध्यादेश का प्रख्यापन आवश्यक हुआ, (हिन्दी-अंग्रेजी पाठ) सहित सभा पटल पर रखेंगे।

श्रीमती अ0व0 द्वारा जारी--

10-08-22/1635/अ0व0/ए0जी0/1

अध्यादेश क्रमागत

मुख्य मन्त्री : अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी अनुमति से भारत के संविधान के अनुच्छेद 213(1) के परन्तुक के अन्तर्गत राज्यपाल, हिमाचल प्रदेश द्वारा दिनांक 20.05.2022 को प्रख्यापित, हिमाचल प्रदेश के कतिपय प्रवर्गों के वेतन और भत्तों पर आयकर का संदाय अध्यादेश, 2022 (2022 का अध्यादेश संख्यांक 2) की प्रति उन परिस्थितियों के स्पष्टीकरण के कथन सहित जिनके कारण उक्त अध्यादेश का प्रख्यापन आवश्यक हुआ, (हिन्दी-अंग्रेजी पाठ) सभा पटल पर रखता हूं।

10-08-22/1635/अ0व0/ए0जी0/2

सदन की समितियों के प्रतिवेदन

अध्यक्ष : अब श्रीमती आशा कुमारी, सभापति, लोक लेखा समिति (वर्ष 2022-23), समिति के कुछेक प्रतिवेदनों की एक-एक प्रति सभा में उपस्थापित करेंगी तथा सदन के पटल पर रखेंगी।

श्रीमती आशा कुमारी : अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी अनुमति से लोक लेखा समिति (वर्ष 2022-23) के निम्न प्रतिवेदनों की एक-एक प्रति सभा में उपस्थापित करती हूं तथा सदन के पटल पर रखती हूं :-

i. समिति का 221वां मूल प्रतिवेदन (तेरहवीं विधान सभा) जोकि भारत के नियन्त्रक एवं महालेखापरीक्षक के प्रतिवेदन वर्ष 2008-09 (राजस्व क्षेत्र) पर आधारित तथा निर्वाचन विभाग से सम्बन्धित है;

ii. समिति का 222वां मूल प्रतिवेदन (तेरहवीं विधान सभा) जोकि भारत के नियन्त्रक एवं महालेखापरीक्षक के प्रतिवेदन वर्ष 2011-12

(राज्य के वित्त/राजस्व क्षेत्र) पर आधारित तथा निर्वाचन विभाग से सम्बन्धित है;

iii. समिति का 223वां मूल प्रतिवेदन (तेरहवीं विधान सभा) जोकि भारत के नियन्त्रक एवं महालेखापरीक्षक के प्रतिवेदन वर्ष 2012-13 (राज्य के वित्त/राजस्व क्षेत्र) पर आधारित तथा निर्वाचन विभाग से सम्बन्धित है;

iv. समिति का 224वां मूल प्रतिवेदन (तेरहवीं विधान सभा) जोकि भारत के नियन्त्रक एवं महालेखापरीक्षक के प्रतिवेदन

10-08-22/1635/अ0व0/ए0जी0/3

वर्ष 2013-14 (राज्य के वित्त/राजस्व क्षेत्र) पर आधारित तथा निर्वाचन विभाग से सम्बन्धित है;

v. समिति का 225वां मूल प्रतिवेदन (तेरहवीं विधान सभा) जोकि भारत के नियन्त्रक एवं महालेखापरीक्षक के प्रतिवेदन वर्ष 2014-15 (राज्य के वित्त/राजस्व क्षेत्र) पर आधारित तथा निर्वाचन विभाग से सम्बन्धित है;

vi. समिति का 226वां मूल प्रतिवेदन (तेरहवीं विधान सभा) जोकि भारत के नियन्त्रक एवं महालेखापरीक्षक के प्रतिवेदन वर्ष 2015-16 (राज्य के वित्त/राजस्व क्षेत्र) पर आधारित तथा निर्वाचन विभाग से सम्बन्धित है;

vii. समिति का 227वां मूल प्रतिवेदन (तेरहवीं विधान सभा) जोकि भारत के नियन्त्रक एवं महालेखापरीक्षक के प्रतिवेदन वर्ष 2016-17

(राज्य के वित्त/राजस्व क्षेत्र) पर आधारित तथा निर्वाचन विभाग से सम्बन्धित है;

viii. समिति का 228वां मूल प्रतिवेदन (तेरहवीं विधान सभा) जोकि भारत के नियन्त्रक एवं महालेखापरीक्षक के प्रतिवेदन वर्ष 2017-18 (राज्य के वित्त/राजस्व क्षेत्र) पर आधारित तथा निर्वाचन विभाग से सम्बन्धित है;

ix. समिति का 229वां मूल प्रतिवेदन (तेरहवीं विधान सभा) जोकि भारत के नियन्त्रक एवं महालेखापरीक्षक के प्रतिवेदन

10-08-22/1635/अ0व0/ए0जी0/4

x. वर्ष 2018-19 (राज्य के वित्त/राजस्व क्षेत्र) पर आधारित तथा निर्वाचन विभाग से सम्बन्धित है;

xi. समिति का 230वां मूल प्रतिवेदन (तेरहवीं विधान सभा) जोकि भारत के नियन्त्रक एवं महालेखापरीक्षक के प्रतिवेदन वर्ष 2019-20 (राज्य के वित्त/राजस्व क्षेत्र) पर आधारित तथा निर्वाचन विभाग से सम्बन्धित है;

xii. समिति का 231वां मूल प्रतिवेदन (तेरहवीं विधान सभा) जोकि भारत के नियन्त्रक एवं महालेखापरीक्षक के प्रतिवेदन वर्ष 2014-15 (राज्य के वित्त/सामाजिक, सामान्य एवं आर्थिक क्षेत्रों/राजस्व क्षेत्र) पर आधारित तथा आबकारी एवं कराधान विभाग से सम्बन्धित है; और

xiii. समिति का 232वां मूल प्रतिवेदन (तेरहवीं विधान सभा) जोकि भारत के नियन्त्रक एवं महालेखापरीक्षक के प्रतिवेदन वर्ष 2015-16 (राज्य के वित्त/सामाजिक, सामान्य एवं आर्थिक क्षेत्रों/राजस्व क्षेत्र) पर आधारित तथा आबकारी एवं कराधान विभाग से सम्बन्धित है ।

10-08-22/1635/अ0व0/ए0जी0/5

अध्यक्ष : अब श्री बलबीर सिंह, सभापति, कल्याण समिति (वर्ष 2022-23), समिति का 48वां मूल प्रतिवेदन जोकि प्रदेश में संचालित सुनिश्चित रोजगार के लिए योग्यता बढ़ाने हेतु प्रशिक्षण योजना से सम्बन्धित गतिविधियों पर आधारित तथा सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग से सम्बन्धित है, की प्रति सभा में उपस्थापित करेंगे तथा सदन के पटल पर रखेंगे ।

श्री बलबीर सिंह : अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी अनुमति से कल्याण समिति (वर्ष 2022-23) का 48वां मूल प्रतिवेदन जोकि प्रदेश में संचालित सुनिश्चित रोजगार के लिए योग्यता बढ़ाने हेतु प्रशिक्षण योजना से संबंधित गतिविधियों पर आधारित तथा सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग से संबंधित है, की प्रति सभा में उपस्थापित करता हूं तथा सदन के पटल पर रखता हूं।

10-08-22/1635/अ0व0/ए0जी0/6

नियम-62 के अन्तर्गत ध्यानाकर्षण प्रस्ताव

अध्यक्ष : अब माननीय सदस्या श्रीमती रीता देवी अपना ध्यानाकर्षण प्रस्ताव प्रस्तुत करेंगी तथा माननीय मुख्य मंत्री चर्चा का उत्तर देंगे।

श्रीमती रीता देवी (इन्दौरा) : अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी अनुमति से अपना ध्यानाकर्षण प्रस्ताव प्रस्तुत करती हूं जिसका टैक्स्ट निम्न प्रकार से है :-

"प्राचीन शिव मंदिर काठगढ़ के नजदीक स्थापित टोल टैक्स बैरियर को अन्यत्र स्थानांतरित करने पर सदन का ध्यान आकर्षित करती हूं ।"

अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से अपने इन्दौरा निर्वाचन क्षेत्र का एक बहुत ही महत्वपूर्ण विषय माननीय मुख्य मंत्री जी के ध्यान में लाना चाहती हूं। वहां एक बहुत ही प्राचीन शिव मंदिर काठगढ़ हिमाचल और पंजाब की सीमा पर स्थित है और उस मंदिर के साथ हजारों लोगों की आस्था जुड़ी हुई है। इसकी ऐतिहासिक मान्यता है कि जब सिकन्दर पूरी दुनिया पर विजय पाकर यहां पहुंचा था तो वहां से आगे नहीं बढ़ सका था। उसे वहां से अपनी पूरी सेना के साथ वापिस लौटना पड़ा था। यह एक ऐतिहासिक मंदिर है और इसमें शिव-पार्वती पिण्डी के रूप में साक्षात विराजमान हैं। वह पिण्डी दो हिस्सों में बंटी हुई है और जन्माष्टमी वाले दिन उस पिण्डी के बीच की दूरी समाप्त हो जाती है तथा शिवरात्रि वाले दिन उस पिण्डी के बीच की दूरी बढ़ जाती है। उसके इर्द-गिर्द हिमाचल और पंजाब के लोग बसते हैं। वहां पर हिमाचल और पंजाब की सीमा मंदिर से लगभग सौ मीटर की दूरी पर है जहां एक टोल टैक्स का बैरियर लगा हुआ है। उस मंदिर में पंजाब से जितने भी लोग आते हैं तो उनको हर रोज़ 30 रुपये टोल टैक्स देना पड़ता है। अतः मेरा आपसे निवेदन है कि उस टोल टैक्स बैरियर को वहां से हटाकर हिमाचल में मंदिर की दूसरी तरफ लगाया जाए ताकि श्रद्धालुओं को हर रोज़ लगने वाला टैक्स न लगे। धन्यवाद।

मुख्य मंत्री : अध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्या श्रीमती रीता देवी ने नियम-62 के अंतर्गत एक बहुत ही महत्वपूर्ण विषय उठाया है। हमारा जब भी उस तरफ जाना होता है तो वहां बहुत सारे लोग इस तरह का प्रस्ताव हमारे समक्ष लाते हैं

टी सी द्वारा जारी

10.08.2022/1640/TCV/AG/1
माननीय मुख्य मंत्री ……. जारी

कि इस टोल बैरियर को वहां से थोड़ा-सा आगे किया जाये ताकि जो लोग मंदिर के लिए आते हैं उनको टैक्स में राहत मिल सके। यह जन भावनाओं से जुड़ा हुआ विषय है क्योंकि यह एक बहुत प्राचीन एवं ऐतिहासिक मंदिर है। इसमें बहुत-सारे लोगों की आस्था जुड़ी हुई है। मैं भी उस मंदिर में कई बार गया हूं। जैसा अभी माननीय सदस्या श्रीमती रीता देवी ने

कहा कि जन्माष्टमी तक उस पिंडी के दो हिस्से अलग-अलग रहते हैं लेकिन बाद में आपस में जुड़ जाते हैं। इसलिए बहुत-सारे लोगों की इसमें मान्यता और आस्था है।

अध्यक्ष महोदय, जहां तक दूसरे विषय की बात है, इसमें थोड़ी कठिनाई आ रही है। वहां पर काफी मात्रा में स्टोन क्रशर लगे हुए हैं और स्टोन क्रशर के जो ट्रक वहां से जाते हैं उससे हमारी आय जनरेट होती है। इससे राज्य को टैक्स के रूप में काफी मात्रा में रेवेन्यू मिलता है। टोल बैरियर को नियमों के अनुसार स्थापित भी वहीं किया जाता है जहां से मॉनिटरिंग बेहतर हो और रेवेन्यू भी पर्याप्त मात्रा में आए। यदि लोग दूसरे रास्ते से जाएंगे तो उससे स्टेट को रेवेन्यू का नुकसान होगा। इस विषय पर पहले भी अनेक बार प्रस्ताव आए हैं। अभी भी आपने जो भावनाएं रखी हैं उन सारी चीजों को हम एग्जामिन करेंगे और देखेंगे कि इसके लिए क्या रास्ता निकाला जा सकता है लेकिन इसकी वस्तुस्थिति इस प्रकार से है :

राज्य कर एवं आबकारी विभाग हिमाचल प्रदेश पथकर अधिनियम, 1975 व प्रतिवर्ष राज्य सरकार द्वारा अनुमोदित टोल नीति में दिये गये प्रावधानानुसार टोल टैक्स का संग्रहण करता है। यह टैक्स राज्य में प्रवेश के पहले बैरियर पर आने वाले वाहनों पर ही वसूला जाता है। वर्ष 2001 से पूर्व टोल टैक्स का संग्रहण लोक निर्माण विभाग द्वारा किया जाता था तथा 01 जून, 2001 से टोल टैक्स संग्रहण का कार्य राज्य कर एवं आबकारी विभाग को आबंटित किया गया है। वर्तमान में राज्य में कुल 55 टोल बैरियर स्थापित किये गये हैं जिन पर टोल टैक्स का संग्रहण किया जाता है।

यद्यपि राज्य सरकार ने वर्ष 2018 से राज्य में मोटर वाहन अधिनियम के अन्तर्गत पंजीकृत हल्के वाहनों को टोल टैक्स की अदायगी से छूट प्रदान की है। हिमाचल प्रदेश

में जब हमारी सरकार आई तो हमने छोटे वाहनों के लिए यह छूट प्रदान की जिसके अनुसार हिमाचल प्रदेश में पंजीकृत दुपहिया वाहन, मोटर रिक्शा तथा हल्के वाहन चाहे वह व्यावसायिक हों या निजी , को टोल टैक्स की अदायगी से छूट प्रदान की गई है ताकि लोगों को राहत दी जा सके। इसके अतिरिक्त हिमाचल प्रदेश में किसी भी टोल बैरियर के 05 किलोमीटर के दायरे में रहने वाले दैनिक यात्रियों के लिए तिमाही और वार्षिक टोकन

का भी प्रावधान किया गया है जिसकी एकमुश्त आधार पर दरें क्रमशः 120/- व 270/- रुपये रखी गई हैं।

एन0एस0 द्वारा ... जारी ।

10-08-2022/1645/NS/AS/1

मुख्य मंत्री .....जारी।

जहां तक अन्य निजी पंजीकृत वाहनों का संबंध है, टोल नीति वर्ष 2022-23 के अनुसार तिमाही में 1000/- रुपये एवं वार्षिक पास के लिए मु0 2,600 रुपये की दर से रियायत का प्रावधान है। ऐसे सभी निवासी उक्त सुविधा का लाभ स्थानीय एस0डी0एम0/ तहसीलदार से निवास का प्रमाण पत्र प्रस्तुत करने पर उठा सकते हैं।

अध्यक्ष महोदय, प्रतिवर्ष टोल टैक्स से सरकार लगभग 100 करोड़ रुपये का राजस्व संग्रहित करती है जिसका उपयोग राज्य सरकार द्वारा विभिन्न विकासात्मक योजनाओं में किया जाता है। वर्तमान में सरकार द्वारा वित्तीय वर्ष 2022-23 के लिए दिनांक 01-04-2022 से 31-03-2023 तक टोल यूनिटों का आबंटन नीलीमी प्रक्रिया द्वारा 109 करोड़ में किया गया है। इस बार राजस्व नीलामी के बाद और ज्यादा हो गया है। यह धीरे-धीरे गया लेकिन इसके बावजूद भी गया है।

अध्यक्ष महोदय, राजस्व जिला नूरपूर में स्थित मीरथल रोड काठगढ़ में टोल बैरियर, टोल यूनिट कंडवाल का एक हिस्सा है तथा पिछले कई वर्षों से निर्विवाद कार्य कर रहा है। यह टोल बैरियर हिमाचल प्रदेश टोल नीति वर्ष 2022-23 के तहत 09.79 करोड़ रुपये के मूल्य पर आबंटित किया गया है। एक तरह से हम कहें कि इससे प्रदेश के लिए लगभग 10 करोड़ रुपये के करीब आय होती है और इसकी बिड 9.79 करोड़ रुपये की हुई है। इससे अच्छा रेवेन्यू हासिल हो रहा है। इस टोल बैरियर से ने केवल छोटे वाहन बल्कि भारी वाहन भी पैट्रोल पंप व औद्योगिक इकाइयों के लिए गुजरते हैं। अध्यक्ष महोदय, यह बहुत महत्वपूर्ण है कि यहां छोटी गाड़ियां ही नहीं बल्कि बड़े वाहन भी जाते हैं क्योंकि औद्योगिक क्षेत्र साथ ही है तथा क्रशर भी लगे हुए हैं तो बड़ी गाड़ियां भी बहुत संख्या में जाती हैं। वहां पर पैट्रोल पंप है तो उसमें भी गाड़ियां जाती हैं। वर्तमान टोल टैक्स बैरियर काठगढ़ शिव मंदिर से लगभग 400 मीटर की दूरी पर हिमाचल व पंजाब की सीमा पर

स्थित है। अध्यक्ष महोदय, शिव मंदिर की इस सड़क से पड़ौसी राज्य पंजाब से भी लोगों की ज्यादा संख्या में आवाजाही होती है और उसका भी एक महत्व है। यदि उक्त टोल टैक्स बैरियर को 200 मीटर स्थानांतरित किया जाता है तब भी पंजाब से काठगढ़ शिव मंदिर की ओर आने वाले वाहनों को टोल टैक्स बैरियर से गुजर कर ही जाना पड़ेगा तथा यह कंदरोड़ी स्थित

10-08-2022/1645/NS/AS/2

टोल बैरियर के संग्रह पर भी प्रतिकूल प्रभाव डाल सकता है क्योंकि इससे नदी के साथ लगते कई अन्य अवैध/वैकल्पिक मार्ग खुल जाएंगे जिन्हें पास में स्थित विभिन्न इकाइयों के संचालकों द्वारा टोल टैक्स, सी0जी0सी0आर0 तथा जी0एस0टी0 की अदायगी से बचने के लिए प्रयोग किए जाने की संभावना है। इसके अतिरिक्त राज्य के अन्य भागों के धार्मिक तथा अन्य महत्वपूर्ण स्थलों से भी इसी तरह के प्रतिवेदन प्राप्त होंगे जिसके फलस्वरूप टोल लाइसेंस धारक मुआवजे की मांग करेंगे तथा इससे कानूनी पेचीदगी की भी सम्भावना है। अध्यक्ष महोदय, यही सबसे महत्वपूर्ण पार्ट इसमें है जिसको ले करके हमें कठिनाई आ रही है और इसी कठिनाई के कारण इसको आगे-पीछे शिफ्ट नहीं किया जा सकता है। इससे हमें रेवेन्यू का बहुत बड़ा लोस होगा। दूसरा, वहां पर टोल लाइसेंस धारक मुआवजे की मांग करेंगे। इससे फायनैंशियल इंपैक्ट और अधिक आएगा।

इसके अतिरिक्त टोल टैक्स के भुगतान में छूट से वर्ष के लक्षित राजस्व की भी हानि होगी।

श्री आर0 के0 एस0 द्वारा जारी

10.08.200/1650/rks/dc-1

मुख्य मंत्री... जारी

अतः उपरोक्त टोल टैक्स बैरियर पर सरकारी राजस्व में किसी प्रकार की छूट देना अथवा बैरियर को स्थानांतरित करना व्यापक जनहित में नहीं लग रहा है। लोगों को जो आने-जाने में असुविधा हो रही है उस विषय को हम अलग से इग्ज़ामिन कर सकते हैं।

लेकिन टोल टैक्स बैरियर को 200 मीटर आगे-पीछे करने से समस्या का हल नहीं हो रहा है। हम निश्चित रूप से इसे इग्जामिन करेंगे और इसका क्या हल निकलता है उस बात को सुनिश्चित करेंगे। टोल टैक्स बैरियर की लोकेशन ऐसी जगह होती है जहां से सारी ट्रैफिक को मोनिटर किया जा सके। अगर हम इस बैरियर को शिफ्ट करते हैं तो इसके आसपास ऐसे कई रास्ते निकल जाएंगे जहां से छोटी/बड़ी गाड़ियां वाइफरकेट होकर निकल जाएगी और टोल टैक्स देने से बच जाएगी। वर्तमान स्थिति में हमें थोड़ी कठिनाई जरूर आ रही है लेकिन हम इस चीज़ को इग्ज़ामिन कर लेंगे। माननीय विधायिका जी ने जो मामला उठाया है उसको हम इग्जामिन करेंगे और इसका रास्ता निकालने के लिए खुले मन से विचार करेंगे।

10.08.200/1650/rks/dc-2

नियम-130 के अन्तर्गत प्रस्ताव

अध्यक्ष : अब श्री इन्द्र दत्त लखनपाल जी नियम-130 के अंतर्गत प्रस्ताव प्रस्तुत करेंगे। आज सदन का समय सायं 5.00 बजे तक निर्धारित किया गया है। अतः माननीय सदस्य सिर्फ प्रस्ताव ही प्रस्तुत करेंगे। अगर सदन की अनुमति हो तो 12 अगस्त, 2022 को इस प्रस्ताव पर विस्तार से चर्चा होगी और बाद में माननीय जल शक्ति मंत्री इसका उत्तर देंगे।
मुख्य मंत्री : अध्यक्ष महोदय, ठीक है।
अध्यक्ष : इस विषय पर श्री जगत सिह नेगी और श्री बिक्रम सिंह जरयाल जी से भी सूचनाएं प्राप्त हुई हैं। आप भी उस दिन चर्चा में भाग ले सकते हैं। अब श्री इन्द्र दत्त लखनपाल जी अपना प्रस्ताव प्रस्तुत करेंगे।

श्री इन्द्र दत्त लखनपाल (बड़सर) : अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी अनुमति से नियम -130 के अंतर्गत प्रस्ताव प्रस्तुत करता हूं कि "प्रदेश के वन क्षेत्रों में लगने वाली आग तथा अन्य क्षेत्रों में वर्षा से हो रहे भू-स्खलन एवं अन्य प्राकृतिक आपदाओं से फसलों तथा सम्पत्तियों को हो रहे नुकसान से बचाव तथा राहत हेतु दी जाने वाली धनराशि बढ़ाने बारे यह सदन विचार करे।"

अध्यक्ष : प्रस्ताव प्रस्तुत हुआ कि "प्रदेश के वन क्षेत्रों में लगने वाली आग तथा अन्य क्षेत्रों में वर्षा से हो रहे भू-स्खलन एवं अन्य प्राकृतिक आपदाओं से फसलों तथा सम्पत्तियों को हो रहे नुकसान से बचाव तथा राहत हेतु दी जाने वाली धनराशि बढ़ाने बारे यह सदन विचार करे।"

माननीय मुख्य मंत्री जी क्या आप कुछ कहना चाहेंगे?

मुख्य मंत्री : अध्यक्ष महोदय, यह प्रस्ताव प्रस्तुत हो गया है और इसके लिए जो आपने समय निर्धारित किया है उस दिन इस पर चर्चा की जाएगी और उसके बाद माननीय जल शक्ति मंत्री जी इसका उत्तर देंगे।

अध्यक्ष : अब इस माननीय सदन की बैठक वीरवार, 11 अगस्त, 2022 के 11.00 बजे पूर्वाह्न तक स्थगित की जाती है।

दिनांकः 10 अगस्त, 2022 **यशपाल शर्मा**
शिमला-171004. **सचिव।**